0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि॰ ३८६

वत्सराज

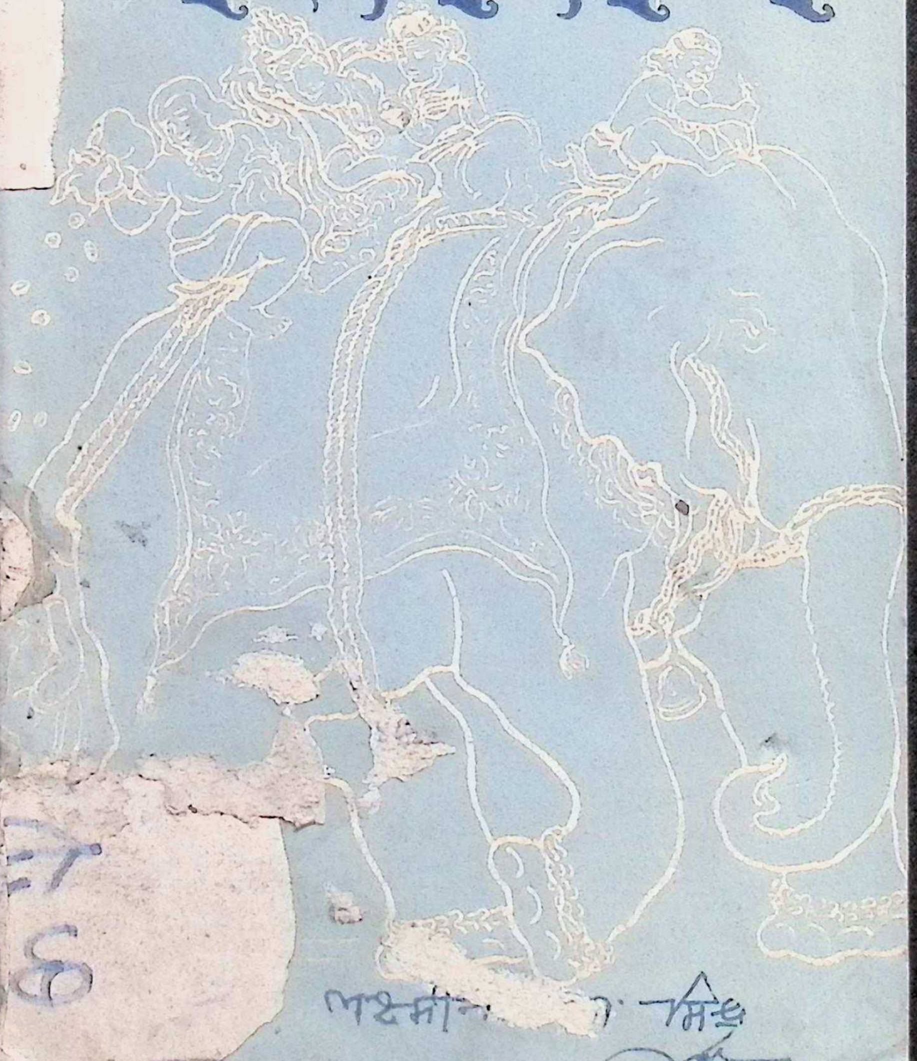

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

१.४०२

वत्सराज

(संस्कृति प्रधान ऐतिहासिक नाटक)

लेखक

अशोक, मुक्ति का रहस्य, सिन्दूर की होली, राजयोग,
आधी रात, गरुडध्वज, नारद की वीणा,
दशाश्वमेध आदि नाटकों के रचयिता

पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र

१२३४५

प्रकाशक

हिन्दी-भवन

जालंधर और इलाहाबाद

८वाँ संस्करण] १९५९ [मूल्य १॥।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रकाशक—
इन्द्रचन्द्र नारंग
हिन्दी-भवन
३१२ रानी मंडी
इलाहाबाद-३

प्रथम मुद्रण	...	...	जनवरी १९५०
द्वितीय मुद्रण	...	...	जून १९५०
तृतीय मुद्रण	...	...	नवम्बर १९५१
चतुर्थ मुद्रण	...	...	अगस्त १९५२
पंचम मुद्रण	...	...	मार्च १९५३
षष्ठ मुद्रण	...	...	जनवरी १९५५
सप्तम मुद्रण	...	...	अगस्त १९५५
अष्टम मुद्रण	...	...	फरवरी १९५६

मुद्रक—
इन्द्रचन्द्र नारंग
कमल मुद्रणालय
३१२ रानी मंडी,
इलाहाबाद ३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विभूति चिन्ता

'प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्' मेघदूत के इस पद में महाकवि कालिदास का कवि हृदय जैसे अमृत के रस से प्लावित हो उठा है। उदयन की कथा कालिदास की अवन्ती में कितनी प्रिय और कितनी मोहमयी बन गई थी, यह इस एक पद में पूर्ण रूप से व्यक्त है। उदयन की कथा, उसकी लोकोत्तर विभूति महाकवि की वाणी को, सूर्य-किरणों के स्पर्श में कमल की तरह विकसित कर गई; जिसकी गन्ध जब तक मनुष्य के हृदय में कर्म और कला की, प्रेम और शील की भावनाएँ रहेंगी बराबर फैलती रहेगी। कालिदास के बहुत पहले—शताब्दियों पहले—संस्कृत के आदि नाटककार भास के उपलब्ध तेरह नाटकों में वत्सराज उदयन का चरित्र दो प्रधान नाटकों 'स्वप्न वासवदत्ता' और 'प्रतिज्ञा यौगन्धरायण' का आधार है। कात्यायन, वररुचि और गुणाढ्य ने बृहत्कथा में उदयन के रूप, गुण, शील और कर्म के मनोहर चित्र खींचे। बाद को महाराज हर्षवर्धन, क्षेमेन्द्र और सोमदेव ने भी सरस्वती के मन्दिर में उदयन-चरित्र के फूल चढ़ाये। सच तो यह है कि विभूतिसम्पन्न भगवान श्रीरामचन्द्र और श्रीकृष्ण को छोड़ कर कोई दूसरा चरित्र ऐसा नहीं देख पड़ता, जिसने, कवियों साहित्यकारों, कलाकारों को इतना अधिक आकर्षित किया हो जितना अकेले वत्सराज उदयन ने किया है।

इतिहास में उदयन के समकालीन नर-रत्नों में गौतम बुद्ध और महावीर जैसे धर्म-प्रवर्तक महापुरुष हैं। अवन्ती के चण्डप्रद्योत महासेन सरीखे अपराजित और विजयी वीर योद्धा भी हैं। कोशल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

का प्रसेनजित और उसका दुर्धर्ष पुत्र विरुद्धक भी उदयन के समकालीन हैं। वत्सराज के पश्चिम दक्षिण में अवन्ती, उत्तर कोशल और पूर्व मगध के शक्तिशाली राज्य देख पड़ते हैं। इन राज्यों में परस्पर लागडाँट, प्रतिस्पर्धा और कूटनीति के चक्र बराबर दिखाई पड़ते हैं। एक ओर देश भर में तथागत और तीर्थङ्कर महावीर का धर्मचक्र चल रहा है, दूसरी ओर मगध, कोशल और अवन्ती का राजनीति चक्र। वत्सराज उदयन उसी समय अपनी घोषवती वीणा के मोहक स्वर, रूप-वैभव और कर्म-कौशल से सारे देश के लिए विस्मय और आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। देश जीतने की उसकी रुचि विशेष नहीं और न तो वह बुद्ध के श्रमण धर्म की पताका उठाता है, फिर भी इतने अधिक कवियों और साहित्यकारों को साहित्य की प्रेरणा उससे मिली है, इसका कारण क्या है?

वत्सराज उदयन अपने समय के सारे देश में रूप और गुण में राजकुमारों की ईर्ष्या और कुमारियों की कामना का एकमात्र आधार बन गया था। कहते हैं कि उस समय की प्रधान पाँच महानगरियों में उदयन के चित्र राजप्रासादों से ले कर नागरिकों और वारांगनाओं के घरों में सम्मोहन और विस्मय के साधन बन गये थे। उसे प्रद्युम्न का अवतार कहा जा रहा था। जिस समय वह घोषवंती के तारों से खेलता था, सुनने वाले उसे यक्षजन्मा समझते थे। सौन्दर्य और कला का ऐसा सुन्दर संयोग, संभव है लोगों को उसकी ओर आकर्षित करने में सफल हुआ हो। पर इतने ही से उसकी लीक काल के मिटाये भी न मिटी, यह बात विचारणीय है। रूप और गुण के साथ ही साथ निश्चय है उसके कर्म भी ऐसे प्रभावोत्पादक और चिरस्थायी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हुए जिनकी अमिट छाप लोक जीवन पर सदैव के लिए पड़ गई।

एक ओर संस्कृत में जहाँ उसके चरित्र को ले कर इतने सुन्दर और प्रौढ़ साहित्य का निर्माण हुआ, दूसरी ओर बौद्ध साहित्य में, 'मरनपरिदीपित उदेनवत्थु' में, उसके जन्म और चरित्र सम्बन्धी अपवाद भी मिलते हैं। इससे यह सोचा जा सकता है कि उदयन शास्त्रीय जीवनधर्म और वैदिक विधान का निष्ठ अनुयायी था; इसीलिए कात्यायन, वररुचि जैसे प्राचीन वैदिक धर्म के मानने वालों ने एक ओर जहाँ उसके साथ दैवी घटनाओं और शक्तियों का संबंध जोड़ा; दूसरी ओर बौद्ध लेखकों ने उसके जन्म और चरित्र को जानबूझ कर हीन करने का प्रयत्न भी किया। बौद्ध कथाओं में भरतवंशी महाभारत-विजयी अर्जुन का वंशज वत्सराज उदयन किसी तापसकुमार का पुत्र है, अपने पिता परन्तप सहस्रानीक का नहीं— जो बात इसी से असत्य और असंगत लगती है कि वत्सराज उदयन के समकालीन राजवंश उसे जन्म और वंश से केवल श्रेष्ठ ही नहीं मानते उसे अपनी कन्या देने के लिए भी लालायित होते हैं। अवन्ती के चण्डप्रद्योत महासेन ने जिस समय उसे वीणा बजाने के लिए अवन्ती में निमन्त्रित किया, उसने अपनी कन्या वासवदत्ता के आग्रह की बात भी लिखी। महासेन अपनी कन्या का उदयन से विवाह करना चाहता था। ऐसा न होता तो वह अपनी कन्या के आग्रह की बात कभी नहीं लिखता। बौद्ध कथाओं में उदयन के चरित्र को हीन करने के प्रयत्न में कितनी असङ्गत बातें लिखी गई हैं सब की चर्चा न कर केवल एक प्रसङ्ग से ही काम चल जायेगा। किसी ब्राह्मण ने अपनी लड़की मागंधी गौतम को देनी चाही, गौतम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ने जब उसका प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया तब वह उसे उदयन के पास आया और उदयन ने उसे अपनी रानी बना लिया। सोचने की बात यह है कि जब गौतम मृत्यु विजय और निर्वाण के लिए अपनी विवाहिता पत्नी रूपवती यशोधरा को छोड़ कर, घर से आधी रात को भागे; तब फिर किसी दूसरी स्त्री की ओर वे देखते भी कैसे ? और किसी ब्राह्मण को उनसे इस प्रकार का प्रस्ताव करने का साहस भी कैसे होता ? ब्राह्मण-निन्दा के साथ ही उदयन की निन्दा भी, इस कहानी को गढ़ कर, किसी विकटबुद्धि बौद्ध ने कर डाली।

संस्कृत के यशस्वी नाटककार महाकवि भास के 'स्वप्नवासवदत्ता' नाटक में उदयन की केवल दो स्त्रियों का उल्लेख है। महासेनपुत्री वासवदत्ता उदयन की पहली धर्मपत्नी है। मन्त्री यौगन्धरायण यह जानता है कि वत्सराज वासवदत्ता के रहते किसी दूसरी स्त्री में अनुरक्त न होंगे। इसीलिए वत्स और मगध की सीमा पर लावाणक के आखेट शिविर में आग लगा कर वह अपने और वासवदत्ता के जल मरने का प्रचार करता है। प्रमाण के लिए उस शिविर में दो अस्थिपंजर वह पहले से ही रख देता है, और तब कहीं वत्सराज उदयन के साथ मगध-कुमारी पद्मावती का विवाह सम्भव होता है। भास के इस सारे नाटक में पद्मावती के साथ विवाह हो जाने पर भी वासवदत्ता के साथ उदयन का अनुराग सब कहीं समुद्र सा गम्भीर और वसन्त की वायु सा उन्मादक है। राजनैतिक लाभ के लिए यौगन्धरायण ने उदयन के दूसरे विवाह का उपक्रम किया। अपने प्रेम में वत्सराज उदयन एकपत्नी व्रती इस सारे नाटक में है और इस नाटक के अंत में यौगन्धरायण ने उदयन से अपने कर्म के लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

क्षमायाचना भी की है। भास का यह नाटक 'स्वप्न वासवदत्ता' राजशेखर के अनुसार अग्नि-परीक्षा में भी नहीं जला :—

भासनाटकचक्रेऽपिच्छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम्।
स्वप्नवासवत्तस्य दाहकोऽभून्न पावकः॥

अग्नि परीक्षा में न जलने का अर्थ सरलता से यह लगाया जा सकता है कि महाकवि भास का कवि कर्म इस नाटक में सब से अधिक सफल है। यह उनके नाटकों में सर्वश्रेष्ठ और संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि है जिसका आधार उदयन का वह लोकोत्तर चरित्र है जिसकी ज्योति युगों के बाद—२६०० वर्ष बीतने पर—भी अभी मन्द नहीं हुई। रामायण और महाभारत के लोकोत्तर अमर चरित्रों की भाँति उदयन के चरित्र में भी वह अमृत तत्त्व है जो भास के इस नाटक की अग्नि परीक्षा में भी उपयोगी सिद्ध हुआ। अनंगहर्ष के 'तापस वत्सराज' में उदयन वासवदत्ता के वियोग में प्रयाग में तपस्वी बन जाता है और फिर बड़ी कठिनाई से पद्मावती के साथ उसका विवाह होता है। उसके एकपत्नीव्रत का आदर्श इस नाटक से भी सिद्ध होता है। कदाचित् इस नाटक के लिखने में कलचुरि वंशी नरेन्द्र अनंगहर्ष ने उदयन के प्रणय के उस आदर्श को स्थापित किया जिसे भास दिखा चुके थे और श्रीहर्षदेव के नाटकों से जो मिट रहा था।

भास के सभी नाटक रामायण और महाभारत की प्रधान घटनाओं और विभूति सम्पन्न चरित्रों के आधार पर लिखे गये हैं। साहित्यशास्त्र में धीरोदात्त नायक के जितने गुण निश्चित किये गये थे उन गुणों का समावेश जिन महान चरित्रों में सब ओर से पूरा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दिखलाई पड़ा, भास ने अपने नाटकों का मेरुदण्ड उन्हीं चरित्रों को बनाया। इस दृष्टिकोण से भी उदयन के चरित्र पर भास के तीन नाटकों का लिखा जाना इस बात को और अधिक पुष्ट करता है कि भास ने उदयन को सर्वगुणसम्पन्न नायक मान कर ही अपने इन नाटकों की रचना की।

भास का समय वत्सराज उदयन के सबसे अधिक निकट है। वररुचि और गुणाढ्य की तरह भास ने उदयन के चरित्र में दैवी शक्ति और चमत्कार का आरोप कहीं नहीं किया। प्रकृत मनुष्य के रूप में स्वाभाविक चित्रण उदयन और उसके सम्बन्ध की घटनाओं का भास के नाटकों में मिलता है। श्रीहर्षदेव, क्षेमेन्द्र और सोमदेव ने आलंकारिक और अतिरंजित चित्रण उदयन के रूप वैभव, व्यापार और क्रिया कलाप का दिया है। बौद्ध कथाओं में यथासम्भव उदयन के जीवन वृत्त को हीन आँखों से देखा गया। समय के बीतने के साथ उदयन संबंधी कथाएँ कल्पना और आलंकारिक चमत्कार बढ़ाती गई हैं। साहित्य में यथातथ्य और जीवन के सत्य निरूपण की बात भास के नाटकों की निश्चित विशेषता है, इसलिए वत्सराज उदयन का सत्य स्वाभाविक रूप, कर्म और कौशल, प्रणय और विवेक जितना विशुद्ध भास के तीन नाटकों में देख पड़ेगा उतना उदयन संबंधी किसी दूसरे साहित्य में नहीं।

नाटक के इस विषय प्रवेश में वत्सराज उदयन संबंधी ऐतिहासिक कथाक्रम में न जा कर उसके चरित्र की उस दृढ़ भूमि को देखना ठीक होगा, जिसके कारण एक ही साथ उसकी स्तुति और निन्दा भी मिलती है। निन्दा करने वाले वे बौद्ध लेखक हैं जिनकी दृष्टि में बुद्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

की शरण में न आ कर वत्सराज उदयन सद्धर्म्म से वञ्चित रह गया। बौद्ध कथाओं के अनुसार गौतम ने अपना नवम चातुर्मास्य व्रत उदयन के शासन काल में कौशाम्बी में किया था। इतना लिखने के बाद भी किसी श्रमण कथा में उदयन और तथागत की परस्पर भेंट और संलाप की बात कहीं नहीं है। वत्सराज उदयन यदि गौतम की ओर आकर्षित हुआ होता या स्पष्ट रूप में कहीं उनके विरोध में खड़ा होता तो किसी बौद्ध कथा में इस प्रसंग की बातें अवश्य मिलतीं। इससे यह बात सरलता से निकलती है कि उदयन ने कौशाम्बी में भी गौतम से भेंट नहीं की, पर साथ ही साथ उनके कौशाम्बी प्रवेश पर न तो कोई रोक लगाई, न कौशाम्बी के उन श्रेष्ठियों पर ही कोई दबाव डाला जिन्होंने श्रमणों के लिए संघाराम खोले। धर्म की बातों में हाथ डालना राजधर्म के प्रतिकूल उदयन मानता था। गौतम के श्रमण धर्म को अप्राकृतिक, वेद विरुद्ध और कर्महीन विडम्बना मान कर भी कहीं भी उसने इसके विरोध में कोई कार्य ऐसा नहीं किया जिसका उल्लेख बौद्ध कथाओं में मिलता। इस धर्म को वह बराबर उपेक्षा की आँखों देखता रहा। उसकी इस उपेक्षा को बौद्ध लेखक सह न सके और इसी उत्तेजना में मृत्यु के जीतने वाले और अपनी मुट्ठी में निर्वाण ले कर चलने वाले उन श्रमणों ने उदयन के जन्म में ही दोष देखा और उसे उन्मुक्त विलासी—संसार के माया जाल में फँसा रहने वाला निरूपित किया।

इन्हीं बौद्ध कथाओं के प्रभाव में हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार स्वर्गीय 'प्रसाद' ने 'अजातशत्रु' नाटक में उदयन का चित्रण लंपट, विलासी और विवेकहीन भोगजीवी के रूप में किया है और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अपने इस कार्य में वे भास, श्रीहर्षदेव और कालिदास की उदयन-संबंधी भावनाओं को भूल गये हैं। वत्सराज उदयन के चरित्रगौरव को भुला देना उनके लिए कठिन इसलिए नहीं हुआ कि वे अपने नाटकों में भारतीय जीवन दर्शन के सिद्धान्तों को पहले से ही भूल चुके थे। उनके नाटक भास और कालिदास की परम्परा में न हो कर शेक्सपियर की परंपरा में ढल चुके थे और इसलिए उनके नाटकों में प्रणय की जगह छिछले रोमांस और कर्मयोग की जगह आत्म-हत्याओं की बाढ़ आ गई है।

असुर्यानाम ते लोका अन्धेन तमसा वृताः।
तत्र प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥—ईशावास्य

ईशावास्य की वाणी भूल कर, भारतीय जीवन दर्शन के सबसे बड़े पाप और कर्म के फल भोग से भाग निकलने वाली कायरता को उन्होंने अपने नाटकों में कर्त्तव्य और प्रेम का आदर्श बना दिया। आत्महत्या जैसा जघन्य कर्म संस्कृत साहित्य में कहीं नहीं है। पालि, प्राकृत और अंग्रेज़ों के आने के पहले देशी साहित्य में जो कर्म सदैव हेय रहा 'प्रसाद' के नाटक उसी से भरे पड़े हैं। वत्सराज उदयन के चरित्र अंकन के लिए साहित्य के भारतीय सिद्धान्तों का जानना आवश्यक था, जिसमें तप और भोग एक दूसरे के पूरक हैं। जहाँ केवल तप या वैराग्य जीवन की अस्वीकृति है और केवल भोग जीवन का उपहास।

तप और भोग का समन्वय भास और कालिदास के नाटकों में हमारी संस्कृति का मेरुदण्ड है। वत्सराज उदयन के चरित्र का आधार जो महाकवि भास ने देखा था तप और भोग का वह मोहक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

समन्वित रूप है जिसमें मनुष्य के कर्म और विवेक में इस संसार को भी स्वर्ग बनाने की कामना है। जिसके लिए निश्चित शब्दों में ईशावास्य फिर कह रहा है—

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो येऽसम्भूत्यां रताः॥

गौतम के श्रमण धर्म के प्रति वत्सराज उदयन की उपेक्षा में ईशावास्य के इसी सिद्धान्त ने कार्य किया।

इस नाटक में उदयन के सम्बन्ध की घटनाओं का मनोवैज्ञानिक, मानवीय और बौद्धिक रूप उपस्थित करने का प्रयत्न किया गया है। वत्सराज के जिस चरित्र ने भास और कालिदास ऐसे महाकवियों को मोहित किया, उसके आधार पर नाटक लिखने का साहस, केवल इस विश्वास से संभव हुआ कि भारतीय जनतन्त्र के इस पुण्य अवसर पर भारतीय साहित्य और कला के माध्यम से भारतीय संस्कृति का निरूपण आज के लेखक का सबसे पहला धर्म है। इस प्रयास में मुझे सफलता मिली है यह तो पाठकों की रुचि ही निर्णय कर सकेगी। महाकवि भास की वाणी में वत्सराज उदयन की प्रणय और शीलनिष्ठा

महासेनस्य दुहिता शिष्या देवी च मे प्रिया।
कथं सा न मया शक्या स्मर्तुं देहान्तरेष्वपि॥

के साथ साहित्य और कला में भी देहान्तर की भारतीय भावना में इस वक्तव्य की इति है।

प्रयाग
वसंत पंचमी, सं० २००६ } —लक्ष्मीनारायण मिश्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पात्र-सूची

पुरुष पात्र

उदयन	भरतवंशी, वत्सराज
महासेन	अवन्ती के पराक्रमी नरेश
यौगन्धरायण	वत्सराज का मंत्री
वसन्तक	उदयन का सखा, विदूषक
कुमार	उदयन का बालक पुत्र
रुमण्वान	वत्स सेनापति
ककोद, घोषित, पवारिक	कौशाम्बी के श्रेष्ठी

बौद्ध श्रमण, सैनिक आदि

स्त्री पात्र

वासवदत्ता	महासेन की पुत्री; उदयन की पत्नी
पद्मावती	मगधनरेश दर्शक की बहन, उदयन की दूसरी पत्नी
मदिरा, काञ्चनमाला	यवन कन्याएँ, प्रतिहारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अंक पहला

[अवन्ती-नरेश महासेन के प्रासादगर्भ का बन्दी कक्ष। दीवालों में कोई खिड़की या द्वार नहीं देख पड़ता। ऊपर छत से प्रकाश की रहस्यमयी किरणें नीचे तिरछी उतर रही हैं, जिनसे सारा कक्ष प्रकाशित है। एक किनारे ऊपर से नीचे उतरने की झूलती हुई सीढ़ी है। सीढ़ी के आधार-दण्ड रंगीन रेशमी वस्त्रों और मोतियों से मढ़े हैं। एक ओर दीवाल से लग कर ऊँचे स्फटिक मंच पर शृंगार और प्रसाधन की सामग्री के साथ वत्सराज उदयन की घोषवती वीणा पर अम्लान माला पड़ी है। कक्ष के बीच में सोने और चाँदी के रत्न-जटित पलँग पर उदयन चित्त लेटे ऊपर छत की ओर देख रहा है। उसकी आँखों में दृढ़ संकल्प के साथ आनन्द और अनुराग के डोरे बन-बिगड़ रहे हैं। पलँग के पास ऊँचे भद्रपीठ पर सखा वसन्तक बैठा है।]

वसन्तक—स्वप्न देख रहे हैं?

उदयन—कौन…

वसन्तक—श्रीमान्। मुँह का रंग हर पल बदल जो रहा है। स्वप्न में भी यही होता है।

उदयन—हाँ, देख रहा हूँ। प्रतिहारी भोजन के क्या पदार्थ आज ले आयेगी और तुम किस तरह मुँह का पानी और जीभ का स्वाद रोक कर दनादन निगलने लगोगे।

वसन्तक—ओहो! तब मैं आज वत्सराज हूँ और तुम फिर सखा वसन्तक हो। हम लोग अपना नाम आज बदल लें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उदयन—(हँस कर) और काम···?

वसन्तक—ऊँ···हुँ···यह न नहीं। अम्लान माला अक्षय तिलक और हस्तिकान्त वीणा की कला मुझे न आयेगी। कौशाम्बी की वार-वनिताओं के कक्ष तुम्हारे चित्रों से सजे देखे थे···इन पन्द्रह दिनों में मैं इस अवन्ती का एक-एक कोना छान चुका हूँ···।

उदयन—सुस्वादु भोजन की गन्ध के लिए···

वसन्तक—राजकुमारी वासवदत्ता जिसे हर ग्रास के लिए नया पुरस्कार देती हैं···उसकी अब दूसरी भूख जग रही है मित्र! (पेट पर हाथ फेर कर) अग्नि अब यहाँ से उठ कर यहाँ (हृदय पर हाथ फेरता है) आ रही है।

उदयन—अच्छा···तो फिर तुम्हारे मन को भी पंख लग रहे हैं···।

वसन्तक—जी हाँ वह भी उड़ रहा है। अवन्ती में देवलोक से भी सुन्दरी अप्सराएँ हैं।

उदयन—देखा है कभी तुमने देवलोक···?

वसन्तक—कल्पना कर सकता हूँ···रम्भा, उर्वशी, तिलोत्तमा इन अवन्ती की सुन्दरियों के सामने पानी भरेंगी। यहाँ भी वारांग-नाओं के घरों में श्रीमान् के चित्र अनेक अनेक भावों, मुद्राओं और स्थिति के लगे हैं। रूप और यौवन की माया कितनी जल्दी सब ओर फैल जाती है महाराज! (मुसकराता है)

उदयन—फिर तुमने मुझे महाराज कहा! मैं बन्दी हूँ मित्र! और फिर सारा देश···सारा संसार···चाहे मुझ बन्दी को महा-राज कह ले पर तुमको···मेरे अन्तरंग सखा को···नहीं कहना है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मेरे चित्र तुम्हें यहाँ भी मिल गये ?

वसन्तक—कौशाम्बी से अधिक। यहाँ तो श्रेष्ठियों के घरों··· राजमंत्रियों और सामन्तों के घरों में भी आपके चित्र लगे हैं। सच कह रहा हूँ···

उदयन—रुक क्यों गये ? कहो भी···दूसरे ही क्षण तुम कवि और कलावन्त बन जाते···तुम्हारे मुँह पर ऐसे ही भाव नाचने लगे थे कि तुमने रोक दिया।

वसन्तक—इस देश में किसी भी सुन्दरी कुमारी के लिए एक ही स्वप्न है।

उदयन—क्या···

वसन्तक—वत्सराज उदयन का वरण···उन सब के लिए बस एक ही वर है, एक ही नायक है। प्रासादों के अवरोध अधीर हो उठे हैं···नागरिकों के शुद्धान्त आज दूषित हैं। आकाश के तारे गिने जा सकेंगे···पर इस सारे देश की वे कुमारियाँ न गिनी जायेंगी जिनका पहला काम है···सवेरे सेज से उठ कर पलँग के सिरहाने आपके चित्र पर माला डाल कर आँसुओं से कपोल धोना।

उदयन—बस बस, अब तुम कवि हो गये। उनके आँसू से धुले कपोलों के चित्र खींचो···उन पर कविता लिखो। सखा वसन्तक तुम अब···(भौहें तिरछी, ओठों पर मुसकान)

वसन्तक—आर्य यौगन्धरायण से जब मैंने अवन्ती की यह बात कही वे हँस पड़े और कहा कि हमारे महाराज प्रद्युम्न के अवतार हैं। मैं कहता हूँ दयानिधान ! कुमारी वासवदत्ता को लपेट लीजिये··· औरों का घुल घुल कर गलना तो रुक जाय !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उदयन—राजा के लिए दया भी विकार है मित्र! महामात्य यही कहते हैं। फिर भी मैं महासेन से याचना करूँ उनकी कन्या के लिए? परन्तप अर्जुन के वंश में जन्म ले कर…जिनकी दो ही प्रतिज्ञा थीं—"न दैन्यं न पलायनम्"।

वसन्तक—सुभद्रा को ले कर वे भी भागे थे। राजनीति की बोली में जिसे कुमारीहरण कहते हैं। हरण करो तुम भी मित्र! महासेन की कन्या का। विश्वजयी उन पूर्व पुरुष ने जो कर्म किया तुम भी करो…।

उदयन—तुम जानते हो मैंने एक…अनेक…कितनी सुन्दरियों को देखा। पर चौदह वर्षों की आयु तक महर्षि जमदग्नि की छाया में…तपोवन के राग-रहित वातावरण में…जिसका पालन-पोषण हुआ मैं वही हूँ।

वसन्तक—तब…इतने मर्म से न देखो। तुम्हारी दृष्टि मेरा हृदय चीर कर भीतर धँसी जा रही है। तुम्हें मेरी शपथ है…मुझसे न छिपाओ। जो कह रहे थे कह दो। इस देव-दुर्लभ शरीर…रूप और यौवन…का रहस्य क्या है?

उदयन—रमणी से विनोद भर कर लेना पर उसमें आसक्त हो कर अपने को खो न देना। नारी का प्रेम भी पार करने के लिए है; डूब जाने या बह जाने के लिए नहीं।

वसन्तक—महर्षि ने तुम्हें यही शिक्षा दी थी?

उदयन—महर्षि की शिक्षा के योग्य अभी मेरी आयु नहीं थी। तपोवन के वातावरण में…उसकी धरती और आकाश में, पक्षियों के कलरव में, मृगों और दूसरे जीवों के चलने फिरने में, सब कहीं मुझे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जो सन्देश सुन पड़ा…

वसन्तक—क्या था वह ?

उदयन—संसार के सारे कर्म इसके पार करने के सेतु हैं। देखने में एक कर्म दूसरे से भिन्न है…पर उन सब के मिलने में ही वह सेतु बनता है जो संसार के पार लगाता है।

वसन्तक—मैं नहीं समझ रहा हूँ…रहस्य की यह भाषा…

उदयन—मैं भी नहीं समझता हूँ। मेरा जन्म महर्षि जगदग्नि के आश्रम में हुआ। चौदह वर्षों तक मैं वहीं की धूलि और धरती में खेलता रहा। मृग और मुनि-कुमार मेरे सहचर रहे। उदयगिरि के नीचे पूर्व समुद्र की लहरों पर मैं झूला करता था…कि एक दिन शबर के हाथ में मेरा कंकण देख कर तात मुझे खोजते वहाँ पहुँच गये। (गहरी साँस लेता है)

वसन्तक—यह तो मैं जानता हूँ…हिंसक नाग का प्राण आपने अपना राजचिह्न-अंकित कंकण दे कर व्याध से बचाया था।

उदयन—व्याध नहीं…ऐन्द्रजालिक था वह। साँप का खेल दिखा कर…वह अपने परिवार का योगक्षेम चलाता था।

वसन्तक—कोई बात नहीं…जन्म भर बन्धन में तो रहता वह। संयोग तो देखिये…वह कंकण आपकी कौशाम्बी में बेचने लगा और पकड़ा गया। जिससे उन्हें राजपत्नी और पुत्र की सूचना मिली। उसी नाग से आपको यह वीणा (वीणा की ओर हाथ उठा कर) मिली थी ?

उदयन—उस ऐन्द्रजालिक से छूट कर नाग ज्यों ही घने वन में लुप्त हुआ कोई दिव्य पुरुष मेरे सामने जैसे आकाश से उतर पड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उसने मेरी दया का अभिनन्दन किया और यह घोषवती उसी ने मुझे दे कर कहा था······इसके स्वरों में चराचर जगत् मुग्ध होता रहेगा और जब इसका छठा तार कुछ अधिक कस दिया जायेगा यह उन्मत्त करेणु को भी वश में कर लेगी। हस्तिकान्त स्वर निकालने से उस समय इसी का नाम हस्तिकान्त होगा।

वसन्तक—कैसा मूर्ख मैं हूँ मित्र! महामात्य का संदेश आप को न दे कर किन बातों में अटक गया!

उदयन—ठहरो। महामात्य का संदेश पीछे देना। पहले अपनी शपथ दे चुके हो उसे क्यों भूल रहे हो? प्रासादों के अवरोध मुझसे कब अधीर हुए? नागरिकों के शुद्धान्त मुझसे कब दूषित हुए? क्या सुन रहा हूँ मैं यह सब वसन्तक! मेरा रस बहते तुमने कब देखा है कि सब ओर मैं इस तरह अजेय रसिक कहा जा रहा हूँ? किस नारी के सम्मोहन में मैं पड़ा? तुमसे मेरा क्या छिपा है? कहो न!

वसन्तक—तेईस वर्ष की आयु आपकी निकल गई और अभी तक किसी रमणी की आँख के तीर आपको न वेध सके, किसी रमणी की साँसें आपको न बाँध सकीं, किसी की वेणी का विष आप पर न चढ़ा···किसी के अधर···कपोल···यही विस्मय है देव! आज सारे देश की राजकुमारियों और रमणियों का···इसीलिए हर देव मन्दिर में देवता से वे एक कामना···एक वरदान माँगती हैं।

उदयन—तब कहो कि मेरे लिए रूप और यौवन भी अभिशाप है। चाहता तो नहीं था पर कहना पड़ेगा अवन्तिराज से, मैं उनकी कन्या में अनुरक्त हूँ।

वसंतक—फिर कहो। फिर, एक बार और···मेरे कान यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अमृत अभी और चाहते हैं। यह तो कल देख लिया मैंने···आपका नाम जो मेरे मुँह से निकल गया कुमारी वासवदत्ता जैसे गनगना उठीं, रोयें खड़े हो गये···उनके, मुँह पर लाली नाच गई और यह सब छिपाने के लिए उन्होंने अपना मुँह फेर लिया।

उदयन—मृगमद की गन्ध छिपती नहीं। वसन्त की वासन्ती··· जेठ की आधी रात में कोयल की कूक···शरद की चाँदनी रोके नहीं रुकतीं। राजकुमारी अपने प्रणय से मुझे धन्य करना चाहती हैं और अब मेरा मन भी उनमें रम गया है। पर महामात्य प्रणय में भी राजनीति का कूटचक्र जो चला रहे हैं। अपने प्रणय में भी मैं स्वतंत्र नहीं हूँ मित्र! इसमें भी पाण्डवकुल की मर्यादा और नीति शास्त्र की···बेड़ी बन रही है।

वसन्तक—महामात्य यौगन्धरायण राजधर्म की परिभाषा यही देते हैं···राजा अपने प्रणय में भी स्वतंत्र नहीं है। कुमारी वासवदत्ता आप पर रीझ गईं···मेरा भाग्योदय तो इसी में है। पर यह हुआ कैसे?

उदयन—पिछली पूर्णिमा को घोषवती के स्वर सुने थे तुमने?

वसन्तक—हाँ ठीक आधी रात को। (वीणा की ओर हाथ उठा कर) इसके तारों में जगत् बँध गया था। धरती और आकाश काँप रहे थे। इस विशाला के नरनारी प्रासाद शिखरों और कनक कलशों को पकड़े तन्मय हो कर प्रद्योत के इस प्रासाद की ओर देख रहे थे। यह महानगरी चित्रपटी बन गई थी। हर किसी की चेतना धरती छोड़ कर···वीणा के स्वरों में बँध कर किसी दिव्यलोक में पहुँच गई थी। विस्मय और अनुराग, अनुराग और विस्मय का इन्द्रजाल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जिधर देखो उधर ही देख पड़ता था। और तो और···महाकाल का नर्तकी-मण्डल भी अवाक् हो गया।

(विस्मय और उल्लास का रंग उसकी आकृति पर छा जाता है)

उदयन—क्या कहते हो? महाकाल का नर्तकी-मण्डल भी···

वसन्तक—महाराज प्रद्योत भी वहीं थे। घोषवती के स्वर जैसे सब ओर से महाकाल के मन्दिर में अमृत बरसा रहे थे। नाद का सम्मोहन दिगन्त को हिला रहा था। नर्तकियाँ नाचते-नाचते अनायास रुक गईं। जन्मान्तर की कोई भूली वस्तु जैसे उन्हें याद पड़ी। पद्मगन्धा बोल उठी···"गोपाल की वंशी रास का निमन्त्रण दे रही है सखी"। इन आँखों ने विस्मय और राग का जो रंग उस रात देखा फिर कभी अब न देखेंगी।

उदयन—ठहरो! भाव की लहरों में···इस तरह डूबना उतराना तुम न सह सकोगे।

वसन्तक—आर्य यौगन्धरायण ने कहा "विस्मय है मुझे तो महाकाल का ज्योतिर्लिङ्ग भी दाईं ओर झुका देख पड़ता है।" सैकड़ों कण्ठों से यही प्रतिध्वनित हुआ 'अरे! सचमुच महाकाल का ज्योतिलिङ्ग झुक गया है'। महाराज ने धीर स्वर में इस भ्रम का निवारण करना चाहा, पर वहाँ सुनता कौन था?

उदयन—महाराज की बातें नहीं सुनी गईं?

वसन्तक—प्रधान पुजारी भय से उसी समय महाकाल का स्तवन करने लगा, वह थर थर काँप रहा था, उसने भी कह दिया 'महाकाल की मूर्ति झुक गई है। विशाला के लिए यह संकट की सूचना है।'

उदयन—फिर कहो कि महामात्य ने तुम्हें साथ ले कर अवन्ती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पर माया का जाल बिछा दिया है।

वसन्तक—नाट्यशालाओं में, प्रेक्षागृहों में, पण्यों और उपवनों में, रेवा के तीर पर, सब कहीं आप के बन्दी जीवन का विरोध तो चल ही रहा था, आज महाकाल के सामने पद्मगन्धा ने कह दिया··· "महाराज! वत्सकुमार को छोड़ दें। रूप और गुण इस लिए नहीं होता कि बन्दी बनाया जाय।"

उदयन—अरे तब क्या हुआ? विशाला की विश्रुत वारांगना ने यह कह दिया महाराज के सामने?

वसन्तक—हाँ···महाराज पहले तो महासमुद्र की तरह अधीर हो उठे, फिर अपने को संयत कर बोल पड़े 'बार बार पूछने पर भी बन्दी नहीं कहता कि वह क्या चाहता है? उसकी कोई भी कामना मैं पूरी करूँगा। वह कहे भी तो?'

उदयन—फिर किसी ने कुछ कहा?

वसन्तक—मन्दिर से जन समूह निकल कर इस प्रासाद-परम्परा की ओर चला। रास्ते में ही पद्मगन्धा ने महामात्य की ओर संकेत कर कहा "क्या यह न होगा कि महाराज इन परिव्राजक को वत्सराज के पास भेजें या इन्हें ले कर जाएँ?"

उदयन—इस वारांगना में गुण भी नाम के अनुरूप देख पड़ता है वसन्तक!

वसन्तक—गुण, रूप, यौवन में उर्वशी है वह···महासेन ने भेदभरी दृष्टि से अमात्य की ओर देख कर पूछा "अवन्ती में आने का प्रयोजन तुम्हारा क्या है महापुरुष?"

उदयन—महामात्य ने झूठ का सहारा लिया होगा···क्यों?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वसन्तक—राजनीति में झूठ झूठ नहीं रह जाता। महामात्य ने अपने को काशी का शैव बतला कर कहा कि महाशिवरात्रि को··· आधी रात को वे शंकर के द्वादश लिंगों के दर्शन के लिए निकलते हैं। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों के द्वादश दर्शन का संकल्प वे कर चुके हैं। यह उनकी सातवीं यात्रा है।

उदयन—महासेन ने कर लिया विश्वास इस बात का? सन्देह नहीं हुआ उन्हें? (एकटक देखता है)

वसन्तक—महामात्य ने जिस निष्ठा से यह बात कही उसमें उनका सन्देह गल गया। पद्मगन्धा का आग्रह वे न टाल सके··· और आज वे महामात्य के साथ यहाँ आयेंगे।

उदयन—और यहाँ इससे भी विचित्र बात हुई। घोषवती के स्वरों में मेरे प्राण की पुकार सुन कर महासेन-पुत्री काम के प्रति रति के अभिसार की तरह यहाँ आ गई।

वसन्तक—अहा! तो कुमारी आपकी अभिसारिका बन चुकी हैं?

उदयन—ठीक अभिसारिका नहीं। तुम जानते हो मेरे पूर्व पुरुष अर्जुन ने उर्वशी का अभिसार नहीं लिया···उसका शाप ले लिया। जब तक विधिवत् विवाह न हो जाय···कुमारी मेरे साथ मंत्रमुग्ध सी भद्रपीठ पर बैठ गईं। उनकी बाँहें मेरे कंठ की माला बन गईं और छाती पर यहाँ (हाथ रख कर) उनका सिर टिक गया। मैंने देखा उनकी आकृति पर किसी दिव्य स्वप्न का रंग खेल रहा था। इस हृदय का कोना कोना उसी रंग में रँग गया है वसन्तक! उसके बाद वीणा से जो स्वर निकले आनन्द और उल्लास के थे, तृप्ति और चरम तुष्टि के थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वसन्तक—कितनी देर रहीं कुमारी आप के साथ ?

उदयन—समय का ज्ञान मुझे नहीं है मित्र ! उसका एक क्षण युग के बराबर था और युग क्षण बन गये थे। ब्रह्मा के कल्प उन क्षणों में थे।

वसन्तक—(हँस कर) जिस प्रणय में समय का पता लगे वह प्रणय भी क्या ? जहाँ क्षण और कल्प का भेद मिट जाता है वहीं प्रणय है।

उदयन—राजकुमारी की देह-लता वसन्त की माधवी सी गनगना जाती थी। जब मुझे लगा, कि यदि घोषवती चलती रही तो राजकुमारी मेरे अंक में मूर्छित हो जायेंगी मैंने तारों से हाथ उठा लिया। धीरे-धीरे राजकुमारी जैसे जागने लगीं और उठ कर सिर नीचे कर खड़ी हो गईं।

वसन्तक—तब क्या हुआ ? (उत्सुक हो उठता है)

उदयन—उसके बाद संसार नया हो गया। मेरे लिए यह बन्धन भी···विधि का वरदान हो गया। दुर्लभ रत्न के लिए समुद्र की तलेटी में जाना पड़ता है। लक्ष्मी के लिए विष्णु ने शेष की शय्या बनाई है। राजनीति···भरतकुल की मर्यादा की बात न होती तो मैं इस बन्धन को बराबर बनाये रहता।

वसन्तक—वयस्य ! महामात्य सुनेंगे तो क्या कहेंगे ? आपके बन्धन से परन्तप अर्जुन की कीर्ति मिट रही है।

उदयन—नीतिचक्र महामात्य के लिए रहने दो वसन्तक···यह भार तुमसे न चलेगा। महासेन बार-बार मुझसे मेरी कामना पूछते हैं। समझते हैं वे···मैं उनकी कन्या की भीख माँगूँगा। यह न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

होगा। हम दोनों के प्राण एक हो चुके हैं। देह की दूरी मिटे या न मिटे। जिस हृदय को कोई दूसरी कुमारी आज तक छू भी न सकी, वासवदत्ता उसे भर चुकी हैं।

वसन्तक—महासेन से यदि आप उनकी पुत्री की कामना करें तो क्या वे इसे मान लेंगे? (गम्भीर स्वर)

उदयन—हः हः हः हः···मैं बन्दी किसलिए बनाया गया हूँ? वीणा सुनाने के लिए महासेन ने मुझे अवन्ती निमन्त्रित किया था। यह भी लिखा था कि राजपुत्री वासवदत्ता का विशेष आग्रह है। जानते हो किस लिए?

वसन्तक—घोषवती की तरंगों में बहने के लिए।

उदयन—उसके लिए रेवा की तरंगें बहुत थीं। महामात्य पिछले वर्ष महाकाल के दर्शन के बहाने वासवदत्ता को देखने आये थे। जिस विशाला-नरेश महासेन के भृकुटि-भंग से इस देश के राजवंश उदय और अस्त होते हैं, उसी की कन्या मेरी भार्या बने···महामात्य यौगन्धरायण की राजनीति की सबसे बड़ी सिद्धि यही होगी। वासवदत्ता को छद्म ज्योतिषी के वेश में उन्होंने उसके कक्ष और प्रमदवन में देखा। महासेन-पत्नी अंगारवती से उनकी कुमारी की हस्तरेखा और ग्रहस्थिति की बातें करते मेरे रूप, गुण, यौवन, शील, कुल और महर्षि जमदग्नि के तपोवन में मेरे जन्म की बात भी वे कह गये।

वसन्तक—अच्छा···यह तो मैं नहीं जानता था। आपके बन्धन का चक्र भी तब महामात्य ने ही चलाया था।

उदयन—हाँ···अपने बिछाये जाल में आज वे ही फँस गये हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

देश की सभी राजधानियों में जो मेरे चित्रों की बाढ़ आ गई है, जिनसे प्रासादों के अवरोध हिल रहे हैं, नागरिकों के शुद्धान्त चंचल हो उठे हैं, वारांगनाओं के केलि-गृह राग और उन्माद से भर रहे हैं, उनके मूल में भी महामात्य यौगन्धरायण हैं।

वसन्तक—सो कैसे देव ? यह बात नहीं समझता मैं···।

उदयन—पेट पर हाथ फेर कर रमणियों को रिझाया करो। यह राजनीति का परिहास है, जिसकी आँच में तुम्हारा परिहास गल कर बह जायेगा। गान्धार का वह चित्रकार भद्रसेन कौशाम्बी में मेरे चित्रों की चित्रशाला पिछले तीन वर्ष खोले रहा। इस अवधि में उसने मेरे एक सहस्र चित्र बनाये और कम से कम दस शिष्य···जो मेरा चित्र बनाने में उसी की तरह निपुण हो गये।

वसन्तक—फिर इसमें क्या ?

उदयन—यही कि अपने शिष्यों के साथ एक दिन उसने कौशाम्बी की चित्रशाला समेट ली और देश की राजधानियों में घूम कर मेरा चित्र बेचने लगा। कौशाम्बी से ही कई सहस्र चित्र उसके शिष्य ले गये और इधर एक वर्ष से वे निरन्तर मेरा चित्र बना कर मुँह माँगा मोल ले रहे हैं।

वसन्तक—इसमें महामात्य की लाभ रेखा कहाँ है।

उदयन—महामात्य ने इन चित्रकारों के सहारे यह सिद्ध कर दिया कि इस समय सारे देश में मुझ-सा रूप, गुण, यौवन किसी दूसरे तरुण में नहीं है। इसी कारण आज राजकुमारियों में मेरे लिए अड़ जाने की कामना है, नागरिक बालाएँ अपने भाग्य में स्वप्न के पंख लगा रही हैं···फिर वारांगनाओं की बात ही क्या ! सोचो भी,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

महासेन की प्रिय अप्सरा पद्मगन्धा भी मेरे लिए उनसे उलझ पड़ी··· जिसने स्वप्न में भी मुझे कभी नहीं देखा।

वसन्तक—यह कैसे? रूप और यौवन जिस किसी रमणी को विधाता ने दिया है स्वप्न में तो आप उन सब को मिल जाते हैं।

उदयन—धत्त···पेटू···मूर्ख···

वसन्तक—जी हाँ, उतनी गोपियों को अकेले कृष्ण कैसे मिल जाते थे?

उदयन—वे अंशधारी थे। उनकी समता मेरे लिए···

वसन्तक—गोपियों के लिए वे अंशधारी थे। कोई मुझसे पूछे आज की रमणियों का कृष्ण कौन है? मैं छूट कर कहूँगा उदयन! वत्सराज उदयन···

उदयन—मिर्च अधिक खा लेना जिससे जीभ खुली रहेगी···

वसन्तक—कृष्ण के लिए रुक्मिणी तन बैठीं···सत्यभामा मचल गईं। यहाँ भी वासवदत्ता अंक में मूर्छित होते होते बचीं। जो काम महासेन की दुर्दान्त सेना न कर सकी वही काम महामात्य ने ले लिया श्रीमान् के चित्रों से।

उदयन—सेना शरीर पर अधिकार करती है। रूप और कला का अधिकार सीधे मन पर होता है। कोई दिन आयेगा जब यह मेरी देह न रहेगी···पर भद्रसेन के चित्रों में मेरी यही देह अमर हो गई। चित्रफलक पर मेरा जो रूप उतर गया···भविष्य में भी कला और कल्पना को प्रेरित करता रहेगा और मैं···

वसन्तक—क्या···(दुख से देखता है)

उदयन—इस पिंजड़े का पंछी किसी दिन उड़ जायेगा वसन्तक!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सृष्टि का यही नियम है। तुम दुःख न करो।

(नेपथ्य में—चण्ड प्रद्योत महासेन की जय। कई कण्ठों का कोलाहल)

(उदयन पलँग से उठ कर खड़ा होता है। वसन्तक की आकृति पर भय की छाया फैल जाती है। एक ओर खटाके की ध्वनि होती है और दीवाल में द्वार निकल आता है। हाथ में भल्ल लिये यवनी प्रतिहारी का प्रवेश)

यवनी—(मुसकरा कर) सावधान हो जाइये वत्सराज ! महाराज महासेन आ रहे हैं।

उदयन—असावधान मैं कभी नहीं रहता यवन कन्या !

वसन्तक—मैं निकल जाऊँ। महासेन कहीं···

उदयन—मेरे साथ भी तुम्हें भय है ? क्यों प्रतिहारी यह विदूषक ब्राह्मण है···महासेन-पुत्री ने इसे मेरे मनोरञ्जन के लिए भेजा है··· महाराज को मेरे मनोरञ्जन में आपत्ति तो न होगी ?

यवनी—बिना उनके जाने यहाँ पक्षी भी पर नहीं मार सकता। महाराज इनका यहाँ आना जानते हैं। उनसे आज्ञा ले कर ही मैंने इन्हें यहाँ आने दिया।

वसन्तक—(कंठ पर हाथ रख कर) प्राण यहाँ अटक गया था··· पूर्वजन्म का पुण्य···सहायक बना···नहीं तो निकलने में देर क्या थी।

(यवनी हँसती है)

उदयन—इसे स्त्री होना चाहिये था प्रतिहारी ! ठीक न ?

प्रतिहारी—जी···और मुझे होना चाहिये था पुरुष।

(सब हँसते हैं)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उदयन—पुरुष होतीं तब इस देश में न आतीं। यवन कुमारियों के लिए यह देश धन देता है, कुमारों के लिए यहाँ धन नहीं धनुष है। और तुम्हारा नाम क्या है?

प्रतिहारी—वहाँ का नाम तो मेरा हेलन है। यहाँ मुझे मदिरा कहते हैं।

उदयन—तुम्हारे देश में कन्या अधिक जन्म लेती हैं कि पोत के पोत भर कर यहाँ भरुकच्छ भेज दी जाती हैं···और फिर वहाँ से मोती और मणियों के साथ वे भी राजभवनों में पहुँच जाती हैं।

प्रतिहारी—जी···हमारे यहाँ जिस घर में कन्या जन्म लेती है, उसमें बड़ा उत्सव होता है, इस आशा में कि किसी दिन उसका मँहगा मोल मिलेगा।

उदयन—यवन देश के तरुण इसका विरोध नहीं करते? बहुतों को तो स्त्री मिलती ही न होगी।

प्रतिहारी—हमारे देश में विवाह का नियम इतना कठोर नहीं है कि स्त्री बस एक पुरुष पर सिर मारती रहे। कौन किसका पुत्र है इसका पता वहाँ नहीं चलता। और फिर यवन देश बहुत छोटा है। सभी तरुण सेना में चले जाते हैं।

(दो सैनिकों के साथ महासेन और यौगन्धरायण का प्रवेश।
उदयन वहीं खड़ा रहता है, प्रतिहारी और वसन्तक
पीछे दीवाल के किनारे चले जाते हैं।)

महासेन—(यौगन्धरायण) बैठिये महाभाग! इस भद्रपीठ पर। वत्सराज उदयन यही हैं।

यौगन्धरायण—इनके कई चित्र मुझे काशी में देखने को मिले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

थे···मैं देखते ही पहचान गया इन्हें। महाराज पहले आसन ग्रहण करें!

महासेन—बन्दीगृह में आसन ग्रहण करना मेरी मर्यादा के प्रतिकूल होगा।

उदयन—बन्दी के निकट आना भी अवन्तीपति के लिए अशोभन है। इस गैरिकधारी परिव्राजक को तो यहाँ नहीं आना चाहिये था।

यौगन्धरायण—तुम्हारे कल्याण के लिए वत्सराज! तुम्हारे मन में जो कामना हो महाराज आज पूरी करेंगे।

उदयन—कामना का भार मैं नहीं ढोता महात्मन्! विशाला-नरेश कई बार मेरी कामना पूरी करने आये, पर मेरे मन में कोई कामना भी तो हो। और फिर महाराज कैसे भूल जाते हैं कि मेरी इस देह में विश्वजयी परन्तप अर्जुन का रक्त है, इनका कोई भी दान ग्रहण करना मेरी मर्यादा के प्रतिकूल होगा। इनके बन्दीगृह में भी मेरी घोषवती गाती है, रोती है और हँस भी लेती है। महाराज की इस कृपा के लिए कृतज्ञ हूँ, मुझे और कुछ न चाहिये।

महासेन—याद है वत्सराज! मैंने तुम्हें अवन्ती में यही वीणा बजाने के लिए बुलाया था। अपनी कन्या के आग्रह की बात भी मैंने तुम्हें लिख दी थी। किस हृदय से तुमने लिख भेजा कि यदि वीणा सुनने की रुचि हो तो अपनी कन्या के साथ महासेन कौशाम्बी चले आयें।

उदयन—महामात्य ने जो ठीक समझा उत्तर दिया। मन्त्री के कार्य में मैं हाथ नहीं डालता। आखेट और वीणा से मुझे अवसर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नहीं मिलता था कि राजनीति में हाथ डालूँ।

महासेन—उसी उत्तर के प्रतिकार के लिए सीमान्त पर यन्त्रनाग का कौशल रचा गया। तुम्हारे हस्तिकान्त से सजीव गज मुग्ध होते हैं। तुमने अपने भोलेपन में यन्त्रगज पर भी उसी का प्रयोग किया।

उदयन—महर्षि जमदग्नि के आश्रम में···उदयगिरि पर मैंने छल और कपट नहीं सीखा था। उदयगिरि पर जन्म लेने से ही मेरा नाम उदयन है।

यौगन्धरायण—अरे ! कहाँ कौशाम्बी और कहाँ उदयगिरि ! पूर्व समुद्र के तीर पर तुम कैसे पहुँचे कुमार !

उदयन—कुमार नहीं हूँ मैं। वत्स राजसिंहासन पर मेरा विधिवत् अभिषेक हो चुका है।

महासेन—(मुसकरा कर) सिंहासन पर बालक का भी अभिषेक हो सकता है···पर जब तक विवाह नहीं होता हर कोई कुमार रहता है। कैसा है वह तुम्हारा मन्त्री जिसे अभी तुम्हारे विवाह की चिन्ता नहीं हुई ?

यौगन्धरायण—होगा कोई भंग के अवसाद में सब कुछ भूल जाने वाला···पर कुमार का जन्म उदयगिरि पर कैसे हुआ ? मैं इसके लिए उत्सुक हूँ।

महासेन—गत वर्ष कोई ज्योतिषी इस राजभवन में कह गया था···परन्तप अर्जुन से पुत्र की कामना में, इनके पिता परन्तप सहस्रानीक ने अपनी गर्भवती रानी मृगावती को उदयगिरि पर भेज दिया था।

यौगन्धरायण—इसकी ठीक जानकारी वत्सराज को होगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उदयन—वस्त्र तो आपके गैरिक हैं पर संसार का आकर्षण अभी आप का बना है। आप जैसे संन्यासी की इन बातों में रुचि विचित्र है।

यौगन्धरायण—(मुसकरा कर) जिसकी वीणा के सम्मोहन में सारी अवन्ती चित्रपटी बन गई, महाकाल की मूर्ति झुक गई, मैं देखता हूँ उसके भीतर शील की कमी है। मैं संन्यासी नहीं हूँ। गृहस्थ शैव हूँ।

उदयन—और आप संन्यासियों के वस्त्र पहनते हैं ?

यौगन्धरायण—हाँ, कमण्डलु और कौपीन नहीं रखता। मधुकरी पर जीवन भी नहीं चलाता।

महासेन—यहाँ अवन्ती में भी···रुद्र के तान्त्रिक उपासक गैरिक वस्त्र धारण कर भी···गृहस्थ होते हैं।

यौगन्धरायण—यह वस्त्र ग्रहण कर लेने पर सन्तान पैदा नहीं की जाती, बस यही एक रोक है। वत्सराज ! मेरे वेश पर व्यंग्य न कर अपने जन्म की बात कहो। काशी में मैंने सुना था तुम्हारी माता को गरुड़ उठा ले गया था।

उदयन—(हँस कर) कौशाम्बी से उदयगिरि तक सौ योजन गरुड़ के चंगुल में मेरी माता जीवित रहीं ? असंभव की ओर लोगों का मन बहुत लगता है। मेरी माता ने साधारण परिहास में कुछ ऐसा अपराध कर दिया था, जिसके प्रायश्चित्त के लिए उन्हें उदयगिरि पर महर्षि जमदग्नि के आश्रम में चौदह वर्ष निवास करना पड़ा।

यौगन्धरायण—अरे ! वैदेही मृगावती से ऐसा क्या अपराध हुआ कि पति से अलग उन्हें चौदह वर्ष काटने पड़े ? किस विस्मय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

में डाल रहे हो कुमार ! पद्मराग के आकर में काँचमणि नहीं होते।

उदयन—भारतजयी पाण्डुकुल में जन्म ले कर भी मैं इस बन्दीगृह में हूँ।

महासेन—पाण्डवों को दो वार वनवास, अज्ञातवास और विराट की दासता भी करनी पड़ी थी। सूर्य पर भी ग्रहण लगता है। इस बन्दीगृह में भी तुम राजसी जीवन बिता रहे हो। मेरे प्रमदवन में भी तुम्हारे जाने की सुविधा है। राजमहिषी अंगारवती तुम्हें अपने पुत्र गोपालक से भी अधिक स्नेह करती हैं। तुम्हारी शिष्या वासवदत्ता भी सरस्वती पूजन के समय पूजा की सामग्री तुम्हारे हाथ पर रखती है। मेरी पुत्री जिसकी सुख-सुविधा की इतनी चिन्ता करती है वह केवल बन्दी नहीं है। और जो वह यह सोचता है मेरे शील का चीरहरण करता है और कुछ नहीं। कहाँ है वह हँसोड़ ब्राह्मण जिसे आज ही उसने तुम्हारे मनोरञ्जन के लिए भेजा है ?

वसन्तक—स्वस्ति महाराज ! मैं यहीं हूँ।

महासेन—कैसे हँसाते हो तुम लोगों को।

वसन्तक—(पेट पर हाथ फेर कर जीभ निकालता है) अ···अ ए···ऐं (उदयन को छोड़ कर सब हँसते हैं)

उदयन—मूर्ख है यह। शरीर बिगाड़ कर हँसाना वन्य है। हास्य की कला ऐसी नहीं कि···

यौगन्धरायण—अब तो कलाकार गुरु पा गया है।

उदयन—(क्रोध में) मेरा अपमान कर रहे हो तुम ब्राह्मण ! महासेन-पुत्री वासवदत्ता सी शिष्या पा कर मैं इस विकलांग को शिष्य बनाऊँगा ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

यौगन्धरायण—परिहास में क्रोध नहीं करते कुमार !

उदयन—समवयस्क से परिहास करना भी रुचता है।

महासेन—मैं तो अपने पुत्र से भी परिहास कर लेता हूँ। वासवदत्ता से भी तुम्हारे विषय की ऐसी बातें कर जाता हूँ, जिसमें वह भी हँसी नहीं रोक पाती। परिहास से मन का मैल भी धुलता है। मनुष्य का आयुर्बल बढ़ता है। तुम भी हँसते हो। बन्दी जीवन का तुम्हें दुःख होता तो तुम मेरी कन्या की सखियों के साथ हँस कर प्रमदवन में जूही के फूल न बरसाते।

उदयन—(विस्मय में) तब आप कहीं वहीं छिपे रहते हैं···या प्रासाद की किसी खिड़की के···

महासेन—तुम्हारे इसी कक्ष से···

उदयन—(विस्मय में सब ओर देखता है) प्रमदवन के कितने नीचे है यह भूगर्भ गृह ?

महासेन—आठ पुरुष (मुसकराता है। यौगन्धरायण भी विस्मय में देखता है।)

उदयन—जो छत में मार्ग खुलता भी हो तब भी ऊपर···या तो प्रासादतल···या आकाश देख पड़ेगा।

महासेन—मदिरा ! प्रमदवन का दृष्टिपथ तो खोलो।

मदिरा—देर न लगेगी प्रभु···

उदयन—कोई ऐसा मार्ग है जिससे इस पाताल से प्रमदवन का कुछ भाग भी देख पड़ेगा ?

महासेन—अभी देखते हो। सारा प्रमदवन, एक एक वृक्ष, एक एक लता, भौंरे और पक्षी भी। समुद्रगृह, मदनगृह, लता कुञ्जों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भीतर के उपकरण भी...

यौगन्धरायण—महाराज महासेन की विशाला में अमरावती से भी अधिक कौतुक है वत्सराज !

[पलँग के बाईं ओर तिरछी खिड़की सा स्थान खुल जाता है, जिससे हो कर पीला प्रकाश कमरे में पलँग पर पड़ता है।]

महासेन—यहाँ आओ वत्सराज ! पलँग पर बैठ कर भी देख सकोगे...पर यहाँ दीवाल से लग कर देखना और अच्छा होगा। (उदयन वहाँ जा कर खड़ा होता है। पलकें टिक जाती हैं, बरौनियाँ खड़ी हो जाती हैं, विस्मय और लज्जा का रँग मुँह पर रह रह कर नाच उठता है।) ध्यान से देख लो। प्रमदवन की एक एक पत्ती दिखाई पड़ती है। समुद्रगृह के भीतर देखो...मदनगृह के भीतर...प्रियंगु, माधवी पाटल कुञ्जों के भीतर देखो। प्रमदवन के किसी एक स्थान पर खड़े हो कर या छिप कर, राजभवन की किसी एक खिड़की से जितना देख सकते हो उससे कई गुना, सारा प्रमदवन अपने नीचे की धरती और ऊपर के आकाश के साथ सब दिखाई पड़ता है।

उदयन—(हट कर) आँखों पर मेरा विश्वास नहीं बैठ रहा है। प्रमदवन का चित्रफलक देखता रहा हूँ या...

महासेन—फिर देखो। वृक्षों, लता-कुञ्जों और सभी ऋतु-सद्मों की स्थिति में तो कोई अन्तर नहीं पड़ेगा, इसलिए कि ये स्थावर हैं, पर जंगम जीवों की स्थिति में भेद पड़ गया होगा। अन्तःपुर की कोई परिचारिका एक स्थान से दूसरे स्थान पर चली गई होगी। देखो तुम्हारी शिष्या इस समय कहाँ है ?

उदयन—(फिर देखता हुआ) किस इन्द्रजाल में पड़ गया हूँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

मैं···आठ पुरुष नीचे के भूगर्भ से धरती के तल का प्रमदवन इतना स्पष्ट देख पड़ता है···जैसे दो आँखों से नहीं···सौ आँखों से सब देख रहा हूँ ? (आकृति पर घोर विस्मय)

महासेन—वासवदत्ता कहाँ क्या कर रही है राजपुत्र ?

उदयन—(अलग हट कर) देखिये आप अब···मुझसे कुछ न पूछिये। आकाश से मेरा सम्बन्ध तो तोड़ दिया गया है, पर नीचे की धरती भी भागी जा रही है। (दोनों हाथों से सिर थाम कर वहीं धरती पर बैठ जाता है।)

यौगन्धरायण—महाराज ! सम्हालिये राजपुत्र को···इनके ललाट, कपोल, नाक और कण्ठ से स्वेद विन्दु वेग से निकल कर बह रहे हैं। यहाँ तो ठंडक है फिर···

महासेन—घोषवती के नाद का विस्मय इस जड़ शिल्प में नहीं है राजपुत्र ! धीरज धरो। मेरा ग्रीष्मसदन तुम्हारा बन्दीगृह बना है। मैं इसमें जेठ की दुपहरी काटता हूँ और तुम वसन्त के अन्त में यहाँ हो। वैशाख की अमावस्या, वसन्त की अन्तिम संध्या आज बीत जायेगी। उठो ! बैठ जाओ इस पलँग पर। मैं प्रमदवन के वायु की नलिका खोल दूँ।

(उदयन को दोनों हाथों से पकड़ कर उठाता है और उसे पलँग पर बैठा कर पैताने के पाये में लगा रजत पत्र ऊपर खींच लेता है जिसके भीतर के छेद से सुगन्धित वायु वेणुवन के वायु सा स्वर करता निकलने लगता है।)

यौगन्धरायण—अवन्ती का यह दूसरा यंत्रशिल्प है। देश के दूसरे राजा जिस वस्तु की कल्पना भी नहीं कर सकते अवन्ती में वही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

देख कर बुद्धि चक्कर खाती है।

उदयन—और सब यहाँ से चले जायँ। महाराज मुझे एकान्त चाहिये।

महासेन—मैं भी…

उदयन—केवल आप रुकें…

यौगन्धरायण—मैं आज ही दारुकावन के लिए प्रस्थान करूँगा। गर्भवती रानी के उदयगिरि प्रवास का कारण जान लेता! किसी बात के लिए मन जब उत्सुक हो…

महासेन—आप तब तक अतिथि भवन में चलिये (सैनिकों से) लिवा जाओ इन भद्र को। और तुम विदूषक, तुम भी जाओ इस समय राजकुमारी के पास। (यौगन्धरायण से) आपका नाम क्या है?

यौगन्धरायण—मैं वसिष्ठगोत्री भट्ट नीलकण्ठ हूँ।

महासेन—(उदयन से) राजपुत्र! कहो तो ये फिर तुम्हारे पास आयें।

उदयन—कोई आपत्ति नहीं होगी मुझे अपने जन्म की बात कहने में। पर मैं पहले आपसे दो बातें…(औरों से जाने का संकेत)

महासेन—साधु पुत्र!

यौगन्धरायण—अहा! महासेन ने तुम्हें पुत्र कह दिया राजकुमार। अब तुम निर्भय हो।

महासेन—गोपालक से अधिक स्नेह मेरा इनपर है। अवस्था का आदर भी जो मुझे इनसे मिलना चाहिये वह भी ये मुझे नहीं देते! इनके पिता ने कई बार मुझे बन्धु कह कर सम्बोधित किया था। ये मेरा आशीर्वाद भी लेना नहीं चाहते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

(सत्र का प्रस्थान)

उदयन—आशीर्वाद आप कभी नहीं देते; केवल दान देने की बात कहते हैं।

महासेन—मेरे शील, स्नेह और दया में सन्देह न करो। तुम्हारे मन्त्री के उत्तर ने मेरी सब से बड़ी अभिलाषा पर पानी फेर दिया। फिर भी पराजय मान कर बैठ जाने वाला मैं नहीं हूँ। मेरी जिस कन्या ने तुमसे एक बार वीणा सुनने की इच्छा की थी वह तुमसे वीणा सीख रही है। पुरुष हो कर अवन्ती आने में कुल की मर्यादा तुम्हारी बिगड़ती थी और तुम्हारे मन्त्री ने मेरी कुमारी को वहाँ बुलाया। तुम्हें यह बात कैसी लगती है? मन्त्री के पक्ष में नहीं नीति के पक्ष में कहो। तुम्हारे कुल की मर्यादा के लिए मेरे कुल की मर्यादा मिटानी उसने क्यों चाही?

उदयन—इसीलिए बन्दी बनने का खेद मुझे नहीं है; मन्त्री में शक्ति होगी सेना से मुझे मुक्त करेंगे।

महासेन—(हँस कर) सेना के बल से ही मैं महासेन हूँ, नहीं तो मेरा नाम केवल प्रद्योत है। मेरे धनुष के सामने शत्रु इस तरह भागते हैं जैसे सूर्य के सामने अन्धकार भागता है, इसी से मुझे एक तीसरा नाम भी मिला है, चण्ड।

उदयन—आपकी वीरता में मुझे संदेह नहीं। अपने मुँह अपनी प्रशस्ति न करें।

महासेन—किसी प्रतिद्वन्द्वी के सामने नहीं, पुत्र उदयन के सामने कहता हूँ। सत्यवादी शपथ नहीं लेता फिर भी अपने धर्म की शपथ से कहता हूँ तुम्हारे दर्शन से मेरा रोम-रोम खिल उठता है; वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सुख, वह आनन्द गोपालक को देख कर भी मुझे नहीं होता। मेरे मन की करो वत्स ! मुझसे कोई ऐसी वस्तु माँगो...जिसे दे कर मैं इस देश में विस्मय की वर्षा करूँ। भविष्य में तुम्हारे रूप और गुण के साथ मेरे दान का भी यश रहे।

उदयन—अपनी पुत्री के लिए ही, आपने वीणा सुनने के बहाने मुझे अवन्ती निमंत्रित कर कुमारी के आग्रह की बात भी लिखी थी। सीमान्त के विन्ध्यवन में उसी फल के लिए यन्त्रनाग छोड़ कर आपने मुझे बन्दी भी किया। आपके जिस आटविक ने मेरे सहचरों को उसकी सूचना दी उसे मैं पहचान गया, कुमारी के लिए बंदी बनने में मैंने आनन्द का नया लोक देखा। ऐसा न होता तो सेना और सेनापति को छोड़ कर मैं अकेले...रात को उस नाग के पीछे न पड़ता।

महासेन—जानता हूँ राजपुत्र ! मैं वह...वासवदत्ता को दैव ने तुम्हारे लिए मुझे दिया था... तुम्हारा भी जन्म पहले उसी के लिए हुआ। तुम तेईस वर्ष के हो और वह अठारह की। तुम दोनों जैसी जोड़ी इन्द्र और शची की भी न होगी, काम और रति की भी न होगी। योग्य का जन्म योग्य के लिए होता है। मणि या तो राजा के शीश पर रहता है या रमणी के वक्ष पर।

उदयन—तब मुझे क्या आदेश है ?

महासेन—तुम राजपुत्री की याचना करो मुझसे। कन्या दान का अवसर अब नहीं है। तुम्हारे मन्त्री के दुर्व्यवहार से क्षुब्ध हो कर मैंने जो जाल बिछाया उसमें अपने ही फँस गया हूँ।

उदयन—महामात्य भी तो अपने बिछाये जाल में फँसे हैं।

महासेन—उनकी बात पीछे होगी...बोलो माँगते हो मुझसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

कन्या ?

उदयन—याचना तो मैं अमरता के लिए भी न करूँगा। इन्द्र का पद…कुबेर का धन…जो माँगने पर मिले मैं न लूँगा।

महासेन—प्रमदवन में जब तुम सरस्वती की पूजा करने लगते हो और वह भाव विभोर हो कर तुम्हारे हाथ पर पूजा की सामग्री रखती है, अपनी सुधि वह इस तरह भूल जाती है कि उसके हाथ के फूल तुम्हारे हाथ पर न पड़ कर मूर्ति के पैरों पर गिर जाते हैं, उस समय जब तुम उसकी ओर देख कर हँस पड़ते हो, मैं इसी देह के साथ सुख और सन्तोष के किस दिव्य लोक में पहुँच जाता हूँ, कह नहीं सकता…उसके अधिक मोहक स्वर्ग न होगा, इतनी बात मुझसे सुन लो।

उदयन—यह सब भी आप देख चुके हैं।

महासेन—इसी स्थान से (प्रमदवन की खिड़की की ओर संकेत कर) तुम्हारे कन्धे पर हाथ रख कर जब वह अधर से फूल और नेत्र से मोती गिराती है…तुम्हें छोड़ कर वह जी न सकेगी अधिक क्या कहूँ।

उदयन—पर उन्हें छोड़ कर मैं जी सकूँगा…यह भी आप न कहें। मणि से अलग हो कर सर्प नहीं जीता। मेरे इस जन्म की सब से बड़ी सिद्धि कुमारी वासवदत्ता हैं। सब कुछ आपसे कैसे कहूँ ? अपने आवरण खोल कर अपके सामने नग्न क्या बनूँ ?

महासेन—तब…

उदयन—हम दोनों के प्राण आपके हाथ में हैं।

महासेन—और तुम्हारे हाथ में कुछ नहीं है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding. M

उदयन—आप मुझे शस्त्र दे दें। मैं राजकुमारी का हरण करूँगा। आपसे, गोपालक से, आपकी सेना से, लड़ कर जो मैं कुमारी को ले जा सकूँगा, तब ·· और जो मारा गया आप इस जाल से छूट जायेंगे।

महासेन—तब तुम मर कर मेरी पुत्री को कौन सा सुख दोगे? बड़े भोले हो तुम। इसी आयु में राजनीति से न खेलो। उस मन्त्री का मन्त्र उतार फेंको।

उदयन—महामात्य की निन्दा मैं न सुनूँगा। जहाँ मेरे और आपके कुल की मर्यादा का प्रश्न है···मुझे मिट जाने दीजिये, कुमारी वासवदत्ता मिट जायँ। दो व्यक्तियों के बलिदान से भी जो मर्यादा की मेखला न टूटे···यह भी साधन महँगा न होगा! राजकुमारी जब मेरे निकट रही हैं···आप हम दोनों को बराबर देखते रहे हैं?

महासेन—बराबर···उस रात जब तुमने वीणा बजा कर अवन्ती को अचेत किया···राजनर्तकी पद्मगन्धा जब राजनियमों का बाँध तोड़ कर तुम्हारे पक्ष में बह चली···सारी जनता के साथ इस भद्र नीलकंठ और पुजारी को भी जब महाकाल की मूर्ति झुकी देख पड़ी···मैंने उसे भद्रपीठ पर तुम्हारे साथ देखा। सीमान्त के वन पर्वत में भी मैं असावधान नहीं रहता···फिर अपने राजप्रासाद में कैसे असावधान रहूँगा?

उदयन—जब आपको हम दोनों के हर अवसर को, हर चेष्टा को देखना था तब आपने हमें परस्पर निकट क्यों होने दिया!

महासेन—इसलिए कि···परस्पर अभिन्न होने के लिए···तुम दोनों का जन्म हुआ था।

उदयन—पिता अपनी पुत्री का प्रेम नहीं देखता चलता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

महासेन—जिसके लिए पुत्री भार होती है···पर जो अपनी कन्या में भी अपना पुण्य देखता है वह···लज्जा के चक्र में न पड़ कर कर्त्तव्य के चक्र में पड़ता है। तुम्हारे गुणों को मैं पहले भी सुन चुका था। इन चालीस दिनों में तुम्हें सब ओर से देख कर मैं अब निश्चिन्त हूँ। तुम केवल रूप में मदन और शक्ति में कुमार नहीं हो···और न तो वीणा की कला में यक्ष हो···संयम में तुम शङ्कर भी हो। उस रात तुम्हारी वीणा के सम्मोहन से छूट कर जब वह खड़ी हुई··· तुम्हारा कहना···'धीरज धरो कुमारी! दैव चाहेगा तो हम दोनों'···कोई असंयमी उस समय क्या कहता ?

उदयन—आप जानते हैं मेरे उस पूर्व पुरुष को जिसने उर्वशी का शाप उठाया पर प्रणय नहीं।

महासेन—(उसे दोनों बाहों में बाँध कर) कालकूट पीने वाले! तुम्हें अब अमृत पीना है। मेरे अहङ्कार का पर्वत···ढह गया··· उसके ऊपर से तुम्हारे शील और संयम की मन्दाकिनी बह रही है। मैंने उस रात जब पुत्री को तुम्हारे भद्रपीठ पर देखा···तभी देख लिया कि तुम दोनों के प्रेम में राजनीति का विष मिलाना पाप है। उसी क्षण से तुम्हारी गति-विधि से अब उदासीन हूँ।

उदयन—उसके बाद हम दोनों को फिर आपने प्रमदवन में नहीं देखा ?

महासेन—नहीं···जो देख चुका तब, मेरी आँखें उसी से भर गई हैं; अब अधिक नहीं।

उदयन—महाराज समुद्र अधीर हो कर धरती बोर देता है। आपकी आँखें भर आई हैं। स्वीकार है मुझे, करूँ मैं याचना···

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

महासेन—नहीं। कुमारी का गौरव इसी में है कि उसके पिता की प्रतिष्ठा मिट कर भी पति की प्रतिष्ठा बढ़े। सुन लो। मैं इस भद्र नीलकण्ठ को पहचानता हूँ और इस हँसोड़ विदूषक को भी…

उदयन—ऐं… ऐं…महाराज क्या…(उद्वेग में देखता है)

महासेन—यह नीलकण्ठ तुम्हारा मंत्री यौगन्धरायण है और यह विदूषक वसन्तक है। अवन्ती में कौशांबी के दूसरे चरों को भी मैं देख चुका हूँ। सीमान्त पर म्लेच्छराज पुलिन्द तुम्हारी सहायता के जो कार्य कर रहा है वह भी मुझसे छिपा नहीं। मेरी आज्ञा के विरुद्ध गरुड़ भी अवन्ती में न आ सकेगा… बोलो विश्वास है अब तुम झूठ न कहोगे।

उदयन—(उद्वेग में) आपसे अब झूठ बोलने से पहले मैं धरती में समा जाना चाहूँगा। ठीक है आपका कहना। महामात्य अपने धर्म के लिए अपना प्राण हथेली पर ले कर महाकाल की श्मशान भूमि में टिके हैं। यह वसन्तक मेरा बाल मित्र है। इनमें किसी का अनिष्ट यदि आप से हुआ…तब फिर…

महासेन—तुम तब अपना अनिष्ट करोगे…मेरा मर्म तुम देख चुके। मेरी पुत्री तुममें अनुरक्त न होती तब भी मैं तुम्हारा अनिष्ट न देखता। इस धरती पर रूप गुण और यौवन का यह संयोग अधिक नहीं मिलता। केवल कौशाम्बी के नहीं इस अवन्ती के भी तुम धन हो। पर अब…

उदयन—इतना स्नेह मुझ बन्दी के लिए महाराज!

महासेन—नित्य आधी रात के बाद मैं तुम्हें देखने के लिए यहाँ आता रहा हूँ…तुम्हारी गहरी नींद और निर्विकार हँसी मुझे उस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तरह गलाती रही है, जैसे सूर्य की किरणें हिम गलाती हैं, या जिस तरह चन्द्रमा की किरणों में चन्द्रकान्त मणि पिघलती है।

उदयन—तात! किस जन्म के पुण्य मेरे सहायक हो रहे हैं? (महासेन के चरणों पर सिर रख देता है।)

महासेन—और किस जन्म के पुण्य का फल यह मुझे मिल रहा है वत्स! उठो तुम्हारे किसी जन का अनिष्ट न होगा···पर क्या मेरी एक बात मान लोगे? (उदयन को उठा कर छाती से लगाता है और उसका सिर सूँघता है।)

उदयन—(भरे कण्ठ से) समुद्र मेरे लिए उथला हो गया, आज मैं कैलाश के शिखर पर हूँ। सोचने की शक्ति अब मुझ में नहीं है। तात! इस भोले पुत्र को मार्ग दें। मुझे कुछ नहीं सूझता।

महासेन—परन्तप अर्जुन ने सुभद्रा का हरण कृष्ण की राय से किया था···तुम वही कार्य करो! मैं इसमें कोई बाधा नहीं दूँगा।

उदयन—आपके अनुग्रह का यह प्रतिफल! मुझे इतना नीच न···

महासेन—सुभद्रा-हरण कर तुम्हारे पूर्वज हीन नहीं हुए थे। कृष्ण की आँखों में उनसे अधिक तेजस्वी पुरुष सुभद्रा के लिए दूसरा नहीं देख पड़ा। वासवदत्ता के लिए तुम्हें छोड़ कर किस दूसरे की कामना अब मेरे मन में आयेगी? तुम्हारा मन्त्री इसी का उपक्रम कर रहा है। लेने दो उसे यह यश। मैं इसमें अब बाधा न डालूँगा।

उदयन—कुमारी को आपके विरोध में खड़ा करना पड़ेगा?

महासेन—(हँस कर) पति के लिए कन्या बराबर पिता के विरोध में खड़ी होती रही है। मेरी पुत्री यह कोई नया काम करेगी? यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रहस्य केवल तुम्हीं तक रहे पुत्र ! वचन दो···

उदयन—राजपुत्री से भी नहीं ? पत्नी के प्रति समूचे धर्म का निर्वाह इस गोपन के साथ कैसे होगा ?

महासेन—गोपालक को भेज कर उसके विवाह की विधि पूरी करूँगा और तब तुम इसकी सूचना उसे दे देना। पिता का त्याग वह तब देखेगी। भेजता हूँ यौगन्धरायण को···भाग्य से तुम्हें यह स्वामिभक्त मन्त्री मिला है। सीमान्त की सेना लौटा लूँगा। तुम्हारे मार्ग में अब एक भी बाधा न रहेगी।

उदयन—आपकी छाया छोड़ कर जाना मैं नहीं चाहता।

महासेन—तुम्हारा यह बन्दीगृह तुम्हारे चले जाने पर मेरा पूजा-गृह होगा। तुम दोनों के चित्र इन दीवारों पर बनवा कर मैं यहाँ अपनी कामना की तुष्टि को नित्य आता रहूँगा।

उदयन—तात ! वीर का चित्त वज्र से कठोर और···कमल से भी कोमल होता है यह आपने दिखा दिया।

महासेन—जहाँ मैं विवश हूँ···वहाँ मेरे गुण की बात नहीं है पुत्र ! तुम्हारे गुण से अभिभूत हूँ मैं। चंड प्रद्योत महासेन मर गया। वासवदत्ता का पिता पुत्री के आनन्द के स्वप्नों में सब कुछ भूल कर उसके पति के सामने सर्वस्व दान का संकल्प ले रहा है।

उदयन—मेरे सिर पर हाथ धरो तात ! इस एक जन्म में इस ऋण से मैं न छूटूँ। बंधन की यह डोरी जन्मान्तरों तक चलती रहे।

महासेन—तुम्हारी देखरेख का भार इसी क्षण से राजपुत्री पर रहेगा। पर हाँ जितने दिन तुम यहाँ रहोगे रात को एक बार तुम्हें देख जाया करूँगा। रेवा में जब तक जल रहे, तुम्हारे यश की लहरें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उठती रहें।

(उसके सिर पर हाथ रख कर क्षण भर भाव में आँखें मूँद लेता है)

उदयन—तात ! पर किस तरह···किस युक्ति से···

महासेन—अगली पूर्णिमा की रात···कला सिद्धि की बूटी सरस्वती उखाड़ने के बहाने वह भद्रवती पर तुम्हारे साथ निकले··· तुम्हें उसे ले कर चले जाना है। तुम्हारा मन्त्री उसी रात का यत्न कर रहा है। आग से खेल कर भी वह नहीं जलेगा। विश्वास करो। तुम्हारे इस देवालय की यन्त्रिका मैं उसे अभी दे दूँगा। सरस्वती पूजन के लिए तुम्हारे पास वह आयेगी···उसी समय उसपर अपने आकर्षण की वह मोहिनी डालो कि वह मेरी ओर से विमुख हो जाय।

उदयन—ऐसा नहीं तात !

महासेन—यही। महासेन अपने संकल्प से नहीं डिगता और कह चुके हो···अब जो मार्ग दूँ उसपर चलो।

उदयन—पिछले साल का ज्योतिषी कौन था तात !

महासेन—(हँस कर) विनोद कर रहे हो ? यही यौगन्धरायण। रानी पर तुम्हारे जन्म, रूप, गुण का जो प्रभाव इसने डाला उसमें बेचारी आज तक झूम रही है। वासवदत्ता को तुम्हारा चित्र यही दे गया था। उसे जान कर भी मैं अजान बना रहा। मैं फिर अभी आऊँगा उससे पूछने तुम्हारा जन्म उदयगिरि पर कैसे हुआ ?

(महासेन का प्रस्थान। उदयन वीणा उठा कर छाती और सिर से टेक कर भद्रपीठ के सहारे झुक कर खड़ा होता है। उसकी उँगलियाँ वीणा के तारों से खेलने लगती हैं। मन्द मादक स्वर गूँजने लगता है। मदिरा पीछे आ कर खड़ी हो जाती है।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मदिरा—इस समय नहीं···

उदयन—क्यों···

मदिरा—इस समय अभी एक पहर दिन चढ़ा है। अवन्ती में उन्माद न भरें देव।

(नेपथ्य में शंख, घण्टे और वेदमन्त्रों की ध्वनि)

उदयन—(हँस कर) तुम्हें उन्माद न हो जायेगा···तुम्हारे नाम में ही उन्माद है। हाथ जोड़ कर खड़ी हो। (सिर झुका कर अपने भी हाथ जोड़ लेता है। मदिरा भी हाथ जोड़ती है।) महाकाल की प्रातः पूजा हो रही है। भक्तों की कामनायें भगवान पूरी करेंगे। ॐ नमः शिवाय।

मदिरा—मुझसे क्या अपराध हुआ देव!

उदयन—क्यों···क्या बात है? यवन बाला···हाँ···हाँ···रो क्यों रही हो? उदयन अबला के आँसू नहीं देखता···तुम्हें क्या कष्ट है? कहो, मैं महाराज से कहूँगा।

मदिरा—आपकी सेवा मैं अब न कर सकूँगी। महाराज कह गये हैं···मेरी जगह यहाँ राजपुत्री की प्रिय सखी कांचनमाला रहेगी।

उदयन—वह भी यवन कन्या है?

मदिरा—राजपुत्री का स्नेह उसपर अधिक है। एक देवता की पूजा क्या कई भक्त नहीं करते?

उदयन—(हँस कर) मैं पूजा लेता नहीं कुमारी! देता हूँ··· तुम कहाँ जाओगी अब···

मदिरा—(सिसक कर) महारानी की सेवा में···

उदयन—धीरज धरो···आकाशगङ्गा के किनारे जैसे दो कमल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मोती गिरा रहे हों···तुम भी यहीं रहोगी। मैं इसका यत्न करूँगा।

मदिरा—आपको देखने का लाभ चाहती हूँ मैं राजपुत्र! इससे अधिक मुझे कुछ न चाहिये।

उदयन—(हँस कर) कौशाम्बी से तुम्हें मैं अपना चित्र भेज दूँगा।

मदिरा—मैं भी चलूँगी राजपुत्री के साथ।

उदयन—क्या? तुम्हारी राजपुत्री कहाँ जायेंगी?

मदिरा—कस्तूरी की गन्ध छिपाये नहीं छिपती। राजपुत्री का आपसे विवाह होगा। महारानी से सुन चुकी हूँ सब···मैं भी चलूँगी।

उदयन—कैसी आहट है? देखो···वह दिन आयेगा तब कांचनलता राजपुत्री की और तुम मेरी प्रधान प्रतिहारी बनोगी।

मदिरा—(संतोष के स्वर में) समुद्र पार आने का सबसे बड़ा सुख जीवन का यही होगा।

(बाहर जाती है। यौगन्धरायण का प्रवेश।)

उदयन—प्रणाम है आर्य!

यौगन्धरायण—विजय मिले वत्सराज! हाँ···क्या बातें हुईं?

उदयन—महासेन अपनी कन्या का विवाह करना चाहते हैं मुझसे। मुझे मुक्त कर देंगे···फिर आपके पास लग्न की सामग्री भेजेंगे।

यौगन्धरायण—यह नहीं होगा। भरतकुल की मर्यादा के लिए राजपुत्री का हरण होगा। महासेन का बन्दी उनकी कन्या को ले कर अवन्ती से निकल जायगा।

उदयन—आग से खेल रहे हैं महामात्य!

यौगन्धरायण—स्वामी के यश के लिए···जल मरने का खेद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मुझे न होगा। पूर्णिमा की रात राजपुत्री की हथिनी भद्रवती पर उनके साथ आप निकल चलेंगे। सीमान्त पर म्लेच्छराज पुलिन्द की सेना हमारी सहायता करेगी।

उदयन—और सीमान्त तक...

यौगन्धरायण—भद्रवती का चालक ऐसे मार्ग से चलेगा जिसमें कोई अवरोध न होगा।

उदयन—महासेन की अवन्ती क्या भंग में अचेत रहेगी?

यौगन्धरायण—मेरे मन्त्र में यदि आपको विश्वास न हो तब फिर यह सेवक सत्य ही संन्यास ले ले। आषाढ़क को मैं वश में कर चुका हूँ। गजपाल को वसन्तक मदिरा पिला देगा। अवन्ती के दुर्गद्वार से निकल जाने पर हमें कौन रोक लेगा? पौरजन भी आपकी सहायता करेंगे।

उदयन—और राजकुमारी पर क्या मन्त्र मारोगे आर्य! पिता से विमुख वह कैसे होगी?

यौगन्धरायण—कौन है वह राजकुमारी जो वत्सराज के प्रणय के लिए स्वर्ग भी न छोड़ देगी? पिता छोड़ने पर ही तो पति मिलता है। सृष्टि के इस निश्चित नियम से परे राजपुत्री नहीं है।

उदयन—महासेन जिस काम के लिए अपने उत्सुक हैं उसके लिए संकट में पड़ना...

यौगन्धरायण—रमणी और पृथ्वी उसी के वश में रहती है जो संकट के साथ विनोद करता है। पौरुष की, रूप और गुण की परीक्षा संकट में ही होती है।

उदयन—हूँ...राजपुत्री अब तक मेरी पत्नी होती। महासेन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

का निमन्त्रण यदि मान लिया गया होता। राजकुमारी के आग्रह की रक्षा की गई होती। वीणा बजाने का तो बस बहाना था। अवन्ती आ कर वीणा बजाने में मेरे कुल की प्रतिष्ठा बिगड़ती थी!

यौगन्धरायण—निश्चय जिस कुल में महाभाग भरत पैदा हुए; जिसमें रणधीर अर्जुन और धर्मवीर युधिष्ठिर पैदा हुए।

उदयन—जी…समय के चक्र में उन्हीं रणधीर को बृहन्नला भी बनना पड़ा। अवन्ती में वीणा बजा कर राजकुमारी के प्रणय ग्रहण में मर्यादा का कौन सा बाँध टूट जाता? मेरे प्रणय में आपकी राजनीति का चक्र चल रहा है। क्या इससे अच्छा न रहता आर्य! महर्षि जमदग्नि के आश्रम में सात्विक जीवन बिताना।

यौगन्धरायण—तब आप महासेन का दान ग्रहण करेंगे?

उदयन—मेघ जब सब ओर से घेर घुमड़ कर बरसने लगता है…उसका दान कौन नहीं ग्रहण करता आर्य! महासेन मेघ की तरह उमड़ घुमड़ कर दान की वर्षा करते हैं। आप नहीं जानते उन्हें…

यौगन्धरायण—वासवदत्ता के पिता की ओर आपका झुकाव स्वाभाविक है। अभागा मन्त्री अपने प्राण के साथ खेल रहा है… उसकी चिन्ता आपको क्यों हो? फिर भी वंशानुगत इस पद की प्रतिष्ठा के लिए मेरा प्राण देना ही धर्म है।

उदयन—तब फिर राजपुत्री को मैं इसके लिए कहूँ…

यौगन्धरायण—संकेत पर राजपुत्री अब नाद मुग्ध मृगी की तरह नाचेगी। मन को दृढ़ कर कहने भर की देर है। मदन के पहले तीर जब लगते हैं दोनों के लिए संसार के और सम्बन्ध मिट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जाते हैं। राजपुत्री ने पट का अवरोध हटा कर देव को जिस क्षण पहले देखा, उसी प्रथम दर्शन में महासेन से छूट कर पर्वत गुहा से निकली नदी की भाँति···वह अपने समुद्र की ओर बह चली।

उदयन—(हँस कर) तो आप यह भी जान गये।

यौगन्धरायण—घोषवती महासेन ने आपको यही कह कर दी कि आपको उनके अन्तःपुर की एक कुबड़ी को वीणा सिखानी पड़ेगी। उस कुबड़ी से कहा गया कि वीणा गुरु कोढ़ी है। दोनों एक दूसरे को न देखें इसीलिए कौशेय वस्त्र का आवरण बीच में डाल दिया गया।

उदयन—किसने कहा यह सब आपसे ?

यौगन्धरायण—वत्सराज का मंत्री अवन्ती के घर घर में आँख और कान रख चुका है। कुबड़ी अपने गुरु की बातों पर ध्यान न दे सकी। गुरु ने बिगड़ कर कह दिया···"कैसी मोटी बुद्धि है तेरी कुबड़ी, बार बार का बताया अभ्यास भी नहीं कर पाती।"

उदयन—रुकिये भी···मेरी ही बात मुझे बता रहे हैं।

यौगन्धरायण—जी···जिसमें अपने बल का ज्ञान आपको हो। जिसके कान में अपमान के शब्द पहली बार पड़े, उस राजपुत्री ने अधिकार से आवरण हटा कर देखा···प्रद्युम्न के अवतार वत्सराज के मोहक रूप वैभव को···जिसका जोड़ इस धरती पर तो दूसरा नहीं है। उसके बाद क्या हुआ···यह नहीं जानता मैं···इसलिए कि अवन्ती में आगे की बात कोई नहीं जानता।

उदयन—(हँस कर) राजपुत्री किसी बड़े विस्मय में अचेत सी हो गई। हृदय में उनके धौंकनी चलने लगी। ललाट कण्ठ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

और कपोल पर स्वेद कण झलमला उठे···पद्मराग की शिला पर ओस कण जैसे···

यौगन्धरायण—प्रथम दर्शन का सम्मोहन जहाँ इतना अमोघ बना···इतने दिनों के संसर्ग से अब वह राजपुत्री की शिराओं में घोषवती के स्वरों की तरह झंकार भर रहा है। आग्रह और मनुहार पर अब वह यह धरती छोड़ कर प्रणय का नया लोक बनायेगी। एक व्यक्ति महासेन का खिंचाव इस आकर्षण को क्या रोक लेगा ?

उदयन—अच्छी बात, तब कहूँगा मैं पिता से विमुख होने को ···राजपुत्री से···वसन्तक कहाँ है ?

यौगन्धरायण—राजपुत्री के पास गया। उनके प्रति आपका अनुराग जान लेने पर उसे पंख नहीं मिल रहे हैं कि आकाश में उड़े। उनके वियोग में आपकी दशा क्या हो जाती है···इसकी बातें वह इस समय कर रहा होगा।

उदयन—जिससे उसकी प्यास और बढ़े,···मद और चढ़े ! कला की सिद्धि के लिए सरस्वती बूटी उखाड़ कर मेरे साथ वह भद्रवती पर निकलेगी···पूर्णिमा की रात को···

यौगन्धरायण—(गंभीर हो कर) ऐसा होता तब तो···

उदयन—होगा आप चिन्ता न करें।

(महासेन का प्रवेश)

यौगन्धरायण—महाराज की जय हो।

महासेन—सुन चुके भट्ट नीलकण्ठ ! वत्सराज की माता किस अपराध के प्रायश्चित्त के लिए उदयगिरि भेजी गई थीं···

यौगन्धरायण—महाराज ! विचित्र कथा है। इनके पिता परंतप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सहस्रानीक ने गर्भवती महारानी मृगावती से उनके मन की लालसा पूछी जिसमें कि भावी राजपुत्र पर किसी अभाव का संस्कार न पड़े।

महासेन—ठीक है। गर्भवती की लालसा पूछी ही जाती है। फिर परन्तप सहस्रानीक सा पति जिस भगवती का हो उसकी लालसा मिटते क्या देर लगती।

यौगन्धरायण—रानी की सारी कामनायें पूरी थीं···महाराज के हठ करने पर हँसी में उनके मुँह से निकल गई नर रक्त में स्नान करने की बात।

महासेन—ऐं···तब क्या हुआ?

यौगन्धरायण—हँसी में जो बात रानी के मुँह से निकली धर्म-प्राण राजा ने उसके प्रायश्चित की व्यवस्था माँगी···जिससे कि इस अशुभ कामना का प्रभाव उनके भावी पुत्र पर न पड़े।

महासेन—फिर भट्ट! (उत्सुक हो कर देखता है)

यौगन्धरायण—मेरी जानी बात है। शिवपुरी काशी की पंडित मण्डली ने व्यवस्था दी कि रानी चौदह वर्षों तक राजा के विरह का दुःख भोगें। उनकी सन्तान किसी तपोवन में जन्म ले, जो कौशाम्बी से सौ योजन दूर हो। और उन्हें पता भी न चले कि उनकी अशुभ कामना का यह दण्ड है।

महासेन—इसीलिए रानी महर्षि जमदग्नि के आश्रम में उदय-गिरि पर भेजी गईं।

यौगन्धरायण—वह भी औषध के प्रयोग से अचेत कर ··जिसमें उन्हें स्थान और काल का भी अनुभव न हो।

महासेन—कितना दारुण प्रायश्चित्त करना पड़ा महारानी को···

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

उदयन—पिता के धर्म और माता की तपस्या से मैं अपने को भी भाग्यवान मानता हूँ महाराज ! महर्षि जगदग्नि की कल्याणी छाया में मेरे चौदह वर्ष बीते। तपोवन की दिनचर्या में शरीर सध गया और मिली मेरी यह घोषवती।

महासेन—निश्चय तुम धन्य हो वत्सराज ! तप और भोग दोनों का फल तुम्हें एक ही साथ मिला। भट्ट ! आज से महाकाल की श्मशान भूमि छोड़ कर मेरी अतिथिशाला में आ जाओ।

यौगन्धरायण—पर मुझे आज ही दारुकावन के लिए प्रस्थान करना है।

महासेन—आग्रह न मानोगे तो अधिकार मानना होगा।

यौगन्धरायण—क्या···मुझ तीर्थयात्री पर राजदण्ड चलेगा ?

(संदेह से देखता है)

महासेन—ऐसे सन्देह से देख कर मेरे भीतर सन्देह न डालो, जिससे मैं तुम्हारा ठीक परिचय लेना चाहूँ। तुम्हारे साथ वत्सराज के समीप आने में मुझे अधिक सुख मिला है। कुछ दिन रुक जाओ···अधिक नहीं···अगली पूर्णिमा तक···

उदयन—मान लो भट्ट ! महाराज का आग्रह। तुम्हारी तीर्थ-यात्रा का इससे बड़ा फल और क्या होगा ?

यौगन्धरायण—(संयत हो कर) कोई बात नहीं। महाराज का अनुग्रह है।

महासेन—(हँस कर उसका हाथ पकड़ता है) अब हम चलें। यह समय वत्सराज के व्यायाम और सरस्वती पूजन का है।

(दोनों का प्रस्थान। उदयन प्रमदवन की खिड़की में देखता है)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उदयन—प्रिया सरस्वती की मूर्ति को स्नान करा रही है। हथेलियाँ लाल कमल सी मूर्ति को धो रही हैं। अरे! मेरी ओर देख रही है। क्या हुआ? विस्मय और भय से उसकी आकृति पीली क्यों पड़ गई? इधर ही आ रही है। तब···यहीं खड़ा रहूँगा। (आँखें मूँद लेता है।)

(नेपथ्य में)—प्रतिहारी!

मदिरा—आज्ञा भवति!

(नेपथ्य में)—प्रमदवन वाली यह खिड़की किसने खोली?

मदिरा—महाराज की आज्ञा से देवी मैंने···

(नेपथ्य में)—सच कह रही है? सिर काट लेंगे वे तेरा अभागिनी! अब तुझे मृत्यु से कौन बचायेगा?

मदिरा—महाराज स्वयं वत्सराज को इसके भीतर से प्रमदवन दिखाते रहे हैं।

(नेपथ्य में)—ऐसा···समझ नहीं पाती यह सब क्या हो रहा है। (स्वर में विस्मय और उद्वेग)

(रत्न और वस्त्रों में सजी समुद्र की लक्ष्मी की तरह
वासवदत्ता का प्रवेश)

वासवदत्ता—आर्यपुत्र! अरे क्या कह गई मैं···

उदयन—देवी! भूल कर इस शब्द से तुमने मुझे पुकारा पर मैं सचेत हो कर···तुम्हें अब कह रहा हूँ; प्रिये!

वासवदत्ता—मेरे इस भाग्य से देवबालायें भी ईर्ष्या करेंगी। पर यह खिड़की कैसे खुली?

उदयन—महाराज ने अभी यह खिड़की मदिरा से खुलवा कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

मुझे प्रमदवन दिखाया है। जिस समय मैं वहाँ तुम्हारे साथ रहता था···हम दोनों को वे नित्य यहीं से देखते रहे हैं।

वासवदत्ता—नहीं···नहीं; हम लोगों की चेष्टायें देखते रहे हैं वह यहाँ से···पिता हो कर···

उदयन—अवन्तीपति महासेन वे पहले रहे हैं और तुम्हारे पिता पीछे।

वासवदत्ता—हाय ! धरती फट जाती और मैं उसमें समा जाती।

उदयन—उस रात जब मैं वीणा बजा रहा था···इस भद्रपीठ पर भी उन्होंने तुम्हें मेरी छाती से सिर टिकाये देखा। अभी अभी कह कर गये हैं वह यह सब···

वासवदत्ता—और अब प्रियतम की देखरेख का भार मुझ पर डाल गये हैं। यह है इस कक्ष की यन्त्रिका···। (मुट्ठी खोल कर दिखाती है।)

उदयन—ठीक है अपने बन्दी से सजग रहो !

वासवदत्ता—मेरा बन्दी अब मेरे इस हृदय में है···और अब जब वे जान गये कि मैं इन चरणों में अनुरक्त हूँ तो फिर इस बन्दी-ग्रह का द्वार मैं खोल देती हूँ···जो दण्ड देंगे सिर आँखों पर उठा लूँगी।

उदयन—प्रमदवन के हरिण दम्पति कभी अलग होते हैं राजपुत्री ?

वासवदत्ता—आर्यपुत्र ! अब मैं इन चरणों की दासी हूँ। राजपुत्री मुझे न कहें।

उदयन—तब क्या कहूँ ? जो कहो वही···

वासवदत्ता—मैं कहूँगी प्रियतम ! प्राणनाथ ! प्रभु जो कहें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उदयन—मैं केवल 'प्रिये !' कहूँगा। इन दो अक्षरों में मेरे दोनों लोक बन्द हैं। हाँ कहो,···हरिणी कहीं चली जाय तो हरिण की क्या दशा होगी ?

वासवदत्ता—प्रियंगु शिला पर सिर पीट कर मर जायेगा।

उदयन—तुम्हारे बिना मेरी क्या गति होगी ?

वासवदत्ता—वृक्ष से अलग छाया नहीं जाती और न चन्द्रमा से अलग चाँदनी होती है।

उदयन—भूल तो न जाओगी। त्रिवचन दे रही हो कभी नहीं छोड़ोगी मुझे···?

वासवदत्ता—कभी नहीं···कभी नहीं···कभी नहीं···पर यह शंका क्यों हो रही है ?

उदयन—रमणी और विद्या बराबर साथ नहीं देतीं। लक्ष्मी का आना और जाना जगत जानता है। यदि मैं महासेन या गोपालक के साथ युद्ध करूँ ?

वासवदत्ता—मैं महाकाल से प्रार्थना करूँगी मेरे प्रियतम की विजय हो।

उदयन—(उसका हाथ पकड़ कर) मैं अब अमर हूँ प्रिये ! तुम्हारे प्रेम का कवच पहन कर अगली पूर्णिमा की रात को मैं अवन्ती से निकल पड़ूँगा।

वासवदत्ता—(भरे कण्ठ से) मुझे छोड़ कर···इतने कठोर··· किस अपराध पर···(गनगना कर काँप उठती है।)

उदयन—अरे···साँस न रोक लो···तुम मुझसे अलग कहाँ हो अब···पिता को तुम छोड़ोगी प्रिये ! अपने इस सेवक के लिए···

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

वासवदत्ता—अपने भगवान के लिए···जिसके लिए मेरा जन्म हुआ। कन्या का जन्म होता है पति के लिए। पिता को छोड़ कर ही पति के चरण मिलते हैं।

(उदयन घोषवती को ले कर पलँग पर बैठता है। वासवदत्ता मुग्ध सी उसकी ओर देखती है।)

[पर्दा गिरता है]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दूसरा अंक

(कौशाम्बी का राजप्रासाद। उदयन जिस कक्ष में बैठा है उसके पाँच द्वार प्रमदवन की ओर खुले हैं। वृक्ष, लतायें, हरिणमिथुन, मयूर और दूसरे पक्षी देख पड़ते हैं। उदयन किसी विचार में डूबा सा बैठा है। भद्रपीठ स्वर्ण रत्नों से जगमगा रहा है। एक द्वार के पास प्रतिहारी कभी कक्ष में और कभी प्रमदवन की ओर उत्सुक हो कर देखती है।)

उदयन—*प्रतिहारी !* (प्रतिहारी जैसे सुनती नहीं) *कांचनमाला !*

कांचनमाला—*आज्ञा देव !* (भद्रपीठ के समीप आती है)

उदयन—*सो रही थी क्या ?*

कांचनमाला—(मुसकरा कर) *दिन में देव !*

उदयन—*फिर*···*पहले क्यों न बोली ?*

कांचनमाला—*आपने दो बार बुलाया ?*

उदयन—*निश्चय*···

कांचनमाला—*जी*···*जी*···

उदयन—*डरो मत। किसी रमणी को मुझसे भय नहीं है। कोई सपना देख रही थीं ?*

कांचनमाला—(असमंजस में) *नहीं समझती देव ! आप क्या कह रहे हैं। कभी कहते हैं सो रही थी*···*कभी कहते हैं सपना देख रही थी।*

उदयन—*सिर फेर कर*···*दीवाल में लगे दर्पण में अपना मुँह देख लो। नींद और सपना दोनों के चिह्न तुम्हारे मुँह पर हैं या नहीं ?*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कांचनमाला—(लजा कर) ऐसा क्या देव !···

उदयन—तुम्हारी आयु कितनी हुई ?

कांचनमाला—सत्रहवाँ वर्ष लग रहा है।

उदयन—तो इस आयु में···दिन में···जागती भी कुमारियाँ सपना देखती हैं और खड़े-खड़े सो भी लेती हैं।

कांचनमाला—परिहास कर रहे हैं देव ! भवति पद्मावती यहीं हैं। (दाईं ओर हाथ उठाती है) सुन लेंगी तब···

उदयन—कुछ नहीं होगा। आँख तरेर कर तुम्हारी ओर देख लेंगी। अवन्ती में तुम कब आई थीं···?

कांचनमाला—अपने यवन देश से ?

उदयन—तो क्या कहीं बीच में भी उतरी थीं ?

कांचनमाला—पारस्यदेश में छह महीने रही।

उदयन—राजभवन में···

कांचनमाला—दो बार राजभवन में गई थी पर···

उदयन—हाँ कहो क्या ?

कांचनमाला—राजकुमार ने कहा अभी कच्ची है।

उदयन—(हँस कर) क्या अवस्था थी उसकी ?

कांचनमाला—यही जो देव की है।

उदयन—और इस अवस्था का हो कर भी उसने तुम्हें उस आँख से देखा···असभ्य···

कांचनमाला—यवन श्रेष्ठी का पोत यहाँ आने लगा, उसने मुझे और मदिरा दोनों को उसी पर लाद दिया।

उदयन—यहाँ तुम कहाँ उतरीं ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कांचनमाला—पश्चिम में एक ही पोततट है···भरुकच्छ । यवन कन्याओं का व्यापार यहीं सबसे अधिक चलता है। हम दोनों का मोल यवन पोत के सार्थवाह को वहीं मिल गया। वहाँ से हम सब अवन्ती आईं।

उदयन—कितनी थीं तुम्हारे साथ सब···

कांचनमाला—तेईस कन्यायें थीं। महासेन के कंचुकी रुद्रदत्त ने हम दो को प्रासाद में पहुँचा दिया···और क्या हुई मैं नहीं जानती।

उदयन—कितने दिन तुम दोनों वहाँ रहीं ?

कांचनमाला—राजपुत्री वासवदत्ता के साथ प्रमदवन में कन्दुक क्रीड़ा के लिए हम दोनों नियुक्त की गईं। राजकुमारी को दौड़ना पहले तो आता नहीं था···जल्दी थक कर हाँफने लगती थीं। चार वर्ष अवन्ती में कटे।

उदयन—तुम दोनों में अधिक स्नेह किसको करती थीं वे··

कांचनमाला—इसका पता मुझे अब तक नहीं चला देव ! कभी वे मदिरा की वेणी में फूल लगा देती थीं कभी मेरी वेणी में। अवन्ती में जितने दिन आप रहें···उन्होंने मदिरा को आपकी सेवा में भेज दिया।

उदयन—अरे ! तो राजकुमारी ने भेजा था ?

कांचनमाला—महासेन ने उनसे पूछा···

उदयन—क्या···

कांचनमाला—उन्होंने कहा था कि वत्सराज के आदर के लिए राजपुत्री की कोई अपनी प्रतिहारी उनकी सेवा में रहनी चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वे क्षण भर चुप रहीं और फिर कहा—यह कांचन अल्हड़ है। मदिरा उस कार्य के लिए ठीक पड़ेगी। वह हर समय सजग रहती है। उसकी बुद्धि भी प्रखर है।

उदयन—अल्हड़ तो तुम अब भी हो। खड़े-खड़े सो जाती हो।

(प्रमदवन की ओर से वसन्तक का प्रवेश)

वसन्तक—ओहो! अल्हड़ है यह यवन सुन्दरी। सावधान रहिएगा महाराज कहीं···बुद्धि की मार रोकी जा सकती है···पर यह अल्हड़पन मदन का पहला बाण है।

उदयन—मूर्ख! मदन के बाण फूलों के हैं। (हँसता है)

वसन्तक—कांचनमाला में अल्हड़पन के फूल आ गये हैं। कौन जाने किसी दिन मदन के धनुष पर चढ़ जायँ। कहता हूँ अभी बड़ी रानी से···इसे तुरत अवन्ती खदेड़ कर दम लेंगी।

कांचनमाला—(भय में) रक्षा करें देव! आपकी आज्ञा से मैं इन्हें आज महारानी के हाथ के बने मोदक खिलाऊँगी।

वसन्तक—उसमें वह जो हरी पत्ती होती है···शिव जी पर चढ़ाई जाती है थोड़ी वह भी डाल देना···तब न कहूँगा।

कांचनमाला—खड़ी पत्ती या पीस कर···

वसन्तक—तुम खड़ी भी डाल दोगी तो काम चल जायेगा। दाँत व्यायाम कर लेंगे। (उदयन और कांचनमाला हँसते हैं)

उदयन—वसन्तक! आज मैं कोई रहस्य की बात कहूँगा।

वसन्तक—रहस्य की बात देव!

उदयन—हाँ जिसका सम्बन्ध महाराज महासेन से है···जिसे तुम में कोई नहीं जानता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वसन्तक—(साँस रोक कर) कोई नहीं जानता ! महामात्य अवन्ती के एक-एक पत्ती की बात जानते हैं। किसी राज्य में कोई मन्त्री है जो इनके साथ हाथ मिला सके। महामात्य से अवन्ति-नरेश की क्या बात छिपी होगी !

उदयन—अभी जान जाओगे। महारानी और महामात्य को बुला लाओ।

वसन्तक—देवी अभी पार्वती के मन्दिर में हैं···पूजा में अभी देर है।

उदयन—क्या ? देवी पूजा सवेरे करती हैं। अब तो एक पहर दिन शेष है। इस समय पूजा का अवसर है ?

वसन्तक—महारानी से किसी ने कह दिया कोई शाक्य कुमार गौतम हैं···जो तरुणी पत्नी और शिशु पुत्र को छोड़ कर आधी रात को राजभवन से निकल गये। राजा खोज थके···साल भर से उनका पता नहीं चला। इसे सुन कर महारानी की आँखें भर आईं। भवति पद्मावती को बुला कर उन्होंने इसकी सूचना दी। छोटी रानी तो फूट कर रो पड़ीं।

उदयन—फूट कर रो पड़ीं ? अरे ! क्या कहते हो वसन्तक ! अबला की आँखों के आँसू से बढ़ कर कष्ट जिसे किसी शस्त्र के घाव का भी नहीं होता, उसकी प्रेयसी रो पड़ी फूट कर। मेरे रहते क्या अभाव है मगध राजकुमारी को ? तुम तो कह रहे हो···महादेवी की आँखें भी भर आईं।

वसन्तक—रमणी हृदय दूसरे का दुख भी नहीं देख सकता। वृद्ध पिता शुद्धोदन ने अभी संन्यास नहीं लिया और युवा कुमार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गौतम संन्यासी हो गये।

उदयन—महामात्य को पता होगा। पूछा जायेगा उनसे। पितामह भीष्म बाल ब्रह्मचारी तो रह गये पर आज तक तरुणी रमणी को छोड़ कर कोई तरुण कुमार संन्यासी नहीं बना। तब कहो कि यह दूसरा रहस्य आज सुनने को मिला।

वसन्तक—पूजा समाप्त हो गई। महारानी यहीं आ रही हैं।

उदयन—तब तुम महामात्य को भी बुला लो। दोनों रहस्य यहीं खुलें।

वसन्तक—पर जब तक मैं आ न जाऊँ...महारानी से इसकी कोई बात न कीजिये। (वसन्तक का प्रस्थान)

उदयन—महादेवी के जल मरने की सूचना तुम्हें कब मिली कांचनमाला ?

कांचनमाला—अशुभ बात न करें देव ! पश्चिम की अवन्ती से आप निर्भय हो चुके थे, पूर्व के राजगृह से भी आपको अभय करने के लिए महामात्य ने महादेवी की राय से उनके जल मरने की बात उड़ा दी।

उदयन—महादेवी ने राजनीति के दाँव पर अपना प्रेम भी चढ़ा दिया।

वासवदत्ता—(प्रवेश कर) जय हो आर्यपुत्र !

उदयन—(उठ कर) आओ महादेवी ! मैं पूछ रहा था इस कांचन से आपके जल मरने की सूचना पा कर इसकी क्या दशा हुई।

वासवदत्ता—आज मैं दूसरी चिन्ता में हूँ...परिहास की उस बात में क्या धरा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उदयन—सुन चुका हूँ मैं···जिसके लिए महादेवी इस समय पार्वती-पूजन में लगी थीं।

वासवदत्ता—(आशंका में भरे कण्ठ से) पर यह हुआ कैसे आर्यपुत्र ! भरे यौवन में राजकुमार गौतम तरुणी पत्नी और अबोध पुत्र को छोड़ कर वन में कैसे चले गये ?

उदयन—महामात्य आते हैं···यह रहस्य अभी खुल जाता है··· पर इससे भी बड़ा रहस्य मेरे पास है···जो अब तक मैं अपनी धर्म-पत्नी से छिपाये रहा।

वासवदत्ता—प्रियतम मुझसे भी कुछ छिपायेंगे···इसकी स्वप्न में भी कल्पना मैं नहीं कर सकती। कभी नहीं···जिनके चरणों की नाव के सहारे मुझे यह भवसागर पार करना है।

उदयन—हाँ···प्रिये ! तुमसे मैं अब तक छिपाये रहा। तात महासेन ने मुझे वचनबद्ध कर लिया था···तुमसे भी छिपाने को। कांचन, तुम यहाँ से हट तो जाओ। यही एक बात है जो मुझे महादेवी को छोड़ कर संसार में सब से छिपानी है। उधर मुख्य द्वार पर चली जाओ। महामात्य को तब तक वहीं रोक लेना···जब तक मैं तुम्हें न पुकारूँ।

(कांचनमाला का प्रस्थान)

वासवदत्ता—(धीरे से) मैं पहले से ही डरी हूँ।

उदयन—(दोनों हाथों से उसे पकड़ कर भद्रपीठ पर, अंक में बैठा लेता है) प्रिये ! मेरी भुजायें अभी इतनी दृढ़ हैं कि कौतुक माला की तरह उठा लेता हूँ तुम्हें···और तुम डर रही हो ! तात महासेन की आज्ञा से मैंने तुम्हारा हरण किया था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वासवदत्ता—(चौंक कर) ऐं···सच है···

उदयन—तो मैं तुमसे झूठ कहूँगा ? अपने हृदय की देवी से ? मेरे धर्म की नाव क्या न डूब जायेगी तब···?

वासवदत्ता—(उसकी छाती पर सिर टेक कर) प्राणनाथ के लिए तब मैं पिता से विमुख न बनी ? पितृद्रोह नहीं किया मैंने ?

उदयन—(हँस कर) न···तनिक नहीं उन महापुरुष ने तुम्हारे पिता से अधिक मर्यादा तुम्हारे पति को दी।

वासवदत्ता—अब समझी···सीमान्त पर ही गोपालक जो मेरे विवाह की सामग्री ले कर आये···यह तभी सम्भव हुआ।

उदयन—प्रमदवन वाली बन्दीगृह की खिड़की से तुमने मुझे देखा था···याद है ?

वासवदत्ता—हाँ, भय से खिन्न मैं वहाँ गई और सुना कि तात ने ही वह खिड़की खोल कर तुम्हें दिखाई थी।

उदयन—उस खिड़की से वे बराबर तुम्हारी और मेरी चेष्टाएँ देखा करते थे। उस रात घोषवती के स्वरों में मेरी पुकार सुन कर जब तुम समुद्रगामिनी नदी की भाँति···मेरी देह से टिक कर भद्रपीठ पर बैठ गई थीं···वह भी उन्होंने देखा था। हम दोनों के अनुराग से उन्हें सुख मिलता था। वे यह भी देखना चाहते थे कि मुझ में संयम और धीरज की कमी तो नहीं है।

वासवदत्ता—प्रेम की बाढ़ में संयम और धीरज का बाँध कब कहाँ टिका है ?

उदयन—फिर भी उन्हें मेरा असंयम कहीं नहीं देख पड़ा। उनकी परीक्षा में जब मैं खरा उतरा, उस दिन महामात्य, वसन्तक,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अपने सेवकों और मदिरा को हटा कर उन्होंने मुझसे कहा कि वे अपनी कुमारी के पति की प्रतिष्ठा अपने से अधिक देखना चाहते हैं। इसलिए अपने वन्दी को···कन्या का दान न दे कर उसे अवसर देते हैं कि क्षात्र विधान से वह उसका अपहरण कर···अपना यश बढ़ाये।

वासवदत्ता—आर्यपुत्र! स्मरण कर रोयें खड़े हो रहे हैं··· उसी रात उन्होंने माँ को सुभद्रा-हरण की कथा सुनाई थी और हँस कर कहा था उन्हीं परन्तप अर्जुन के वंश में वत्सराज ने जन्म लिया है। वह भी कहीं यही कार्य न करे। मैं पटवस्त्र की आड़ से सुन रही थी···उसी समय मेरे मन में आया कि आर्यपुत्र के साथ भाग चलूँ।

उदयन—(हँस कर) तुम्हारे मन में यही भावना जगाने के लिए···उन्होंने वह कथा कही होगी और तुम्हारी माँ को यही घटना देखने के लिए पहले से ही उन्होंने तत्पर किया होगा···जिससे इसका आघात उन्हें न पहुँचे।

वासवदत्ता—आह! कितने कठोर हो नाथ! पहले कह दिये होते। हाय! (रो पड़ती है)

उदयन—इसी का फल तुमने दिया प्रिये! स्वयं भी कठोर बन कर······

वासवदत्ता—हूँ···मेरी कठोरता क्या कहोगे?

उदयन—अपनी इच्छा से···तुमने अपने जल कर मर जाने की बात फैलने दी। दो महीने का वियोग तुमने मुझे सहाया।

वासवदत्ता—महामात्य ने लावाणक के उस वन शिविर में जब मुझसे कहा कि प्राणनाथ के गौरव और यश के लिए मुझे उनके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

साथ कुछ दिनों तक छिपना पड़ेगा···मेरे जल कर भस्म हो जाने की बात का प्रचार होने पर मगध-नरेश अपनी भगिनी पद्मावती का विवाह प्रियतम के साथ कर देंगे और इस प्रकार अवन्ती और मगध की राजकुमारियों के आराध्य देश भर में राजपुत्रों में सब से श्रेष्ठ बन जायेंगे। राजमुकुटों की मणियों के प्रकाश में उनके चरण रँगे जायँगे। इस गौरव के लिए मुझे कोई भी त्याग कठिन न लगा। जिसके लिये पिता-पाता का प्रेम छोड़ दिया···उसके लिए थोड़े दिनों का अज्ञातवास क्या···हँसते-हँसते मैं प्राण छोड़ देती।

उदयन—तुम्हें पा कर किसी भी दूसरी रमणी की कामना मुझे स्वप्न में भी नहीं थी। महामात्य ने तुम्हें अपनी पुत्री कह कह पद्मावती की रक्षा में छोड़ दिया। उसके साथ मेरे विवाह की कौतुकमाला तुम्हीं ने गूँथी। माला देख कर मुझे चिन्ता हुई थी···मेरे हृदय ने कहा यह कला केवल मेरी···पर उस भस्मसात् शिविर में दो मानव अस्थिपंजर जो मैंने देखे थे।

वासवदत्ता—बार बार कहने पर भी यह बात नई ही लगती है।

उदयन—पति के हित में पत्नी के त्याग का अमृत है जो इसमें···

वासवदत्ता—आर्य यौगन्धरायण ने कहा 'देवी! जिसके लिए आपने अपने पिता से, माता और भाई से द्रोह किया उसी की राज्य-लक्ष्मी को अचल करने के लिए मैं आपसे इस त्याग का आग्रह करता हूँ। महाराज की धर्मपत्नी का पद···महारानी! आपका अडिग है। एक वृक्ष के सहारे कई लतायें रहती हैं···सपत्नी का खेद आप न करें।' उनके मुख की ओर मेरी आँखें उठीं। उनकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

आँखों में आग्रह का जल भर गया था···मेरे मुँह से निकल पड़ा··· आर्त न हों आर्य ! आपके आशीर्वाद से उनके हित में मैं प्राण दे दूँगी···यह तो कोई बड़ी बात नहीं। उनकी आँखों से बड़े-बड़े मोती चू पड़े। दोनों हाथ सिर पर रख कर···काँपते कण्ठ से उन्होंने कहा 'आपका अहिवात अचल रहे राजपुत्री !'

उदयन—आर्य यौगन्धरायण सा स्वामिभक्त मन्त्री इस देश में और कहीं नहीं है।

वासवदत्ता—आर्यपुत्र ! उनकी नीति से मुझे आप मिले हैं। ज्योतिषी के वेश में आपके रूप, गुण, यौवन और सम्मोहन की सूचना उन्हीं से मुझे मिली थी। घोषवती के स्वर मेरे हृदय में बज कर उसी दिन दिगंत में बजे थे। माँ वहीं बैठी थीं···आपका चित्र उन्होंने मुझे दिखा दिया···चित्र तो दिया उन्होंने मुझे दूसरे दिन··· पर उस रात मैं पलँग पर केवल करवट लेती रही···जिधर देखती वही चित्र दिखाई पड़ता था। पद्मावती के साथ मगध के राजभवन में दो महीने उसी चित्र के सहारे कट गये।

उदयन—प्रमदवन के समुद्रगृह में पद्मावती के सिर की पीड़ा वसन्तक से सुन कर जब मैं वहाँ आया; उसे वहाँ न देख कर इस आशा में कि आती होगी पलँग पर मुझे नींद आ गई।

वासवदत्ता—मधुरिका ने मुझे बताया कि समुद्रगृह में राजपुत्री के सिर में पीड़ा है। मैं वहाँ गई। यह समझ कर कि पद्मावती सो गई है···मैं भी उसी पलँग पर लेटने लगी कि स्वप्न में आप के मुँह से अपना नाम सुन कर विह्वल हो गई।

उदयन—समुद्रगृह से निकलते मैंने तुम्हें देखा। पर वसन्तक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

यही कहता रहा कि मैं स्वप्न के भ्रम में पड़ा हूँ। महामात्य ने शिविर में आग लगाने के पहले जो दो नर-कंकाल रख दिये थे, उनके और तुम्हारे जल मरने के वे निश्चित प्रमाण थे।

वासवदत्ता—महामात्य ने जिस कौशल से मुझे पद्मावती के पास रख दिया···और नहीं तो···वसन्तक को भी उसी की रक्षा में दिया। हम दोनों वहाँ भाई-बहन कहे जाते थे।

उदयन—उन्होंने तुम्हें अपनी पुत्री और वसन्तक को पुत्र कहा था। तीन महीने के लिए मगध कुमारी ने तुम दोनों का भार लिया था। दो महीने में ही मुक्त हो गईं। फिर भी महासेन-पुत्री भावी सपत्नी के आश्रय में रही यह बात तो···

वासवदत्ता—जिसके प्रेम में माता-पिता की ओर से मैंने मुँह फेरा···उसी के प्रेम में भावी सपत्नी का अनुग्रह भी लिया। अब मैं जाऊँगी अवन्ती।

उदयन—हम सभी चलेंगे प्रिये! कुमार कहाँ है?

वासवदत्ता—केवल जन्म देने के लिए मैं माँ हूँ उसकी···नहीं तो फिर मगध कुमारी छोड़ती उसे कहाँ है! वह भी मुझे नहीं पहचानता। गौतम के वन जाने की बात सुन कर कुमार को छाती से लगा कर वह तभी से रो रही है। आँखें फूल गई हैं।

उदयन—पर क्यों···कुमार को ले कर तुम पहले अवन्ती चलो, फिर पद्मावती के साथ मैं आऊँगा।

वासवदत्ता—वह उसे छोड़ कर मेरे साथ नहीं जायेगा। पति के लिए पिता छोड़ते जिसे देर न लगी, सपत्नी के लिए वह पुत्र भी छोड़ देगी। पद्मावती ने मगध के अन्तःपुर में मुझ अपरिचिता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

का जो आदर किया···मैं उसे सपत्नी नहीं···अपनी देह मानती हूँ···अपना पुत्र उसे सौंप कर आर्यपुत्र के मन में अपने और उसके बीच का भेद मैंने मिटा दिया है। महामात्य ने अवन्ती में मुझे जो वह चित्र दिया···मेरा काम अब उससे भी चल जायगा।

उदयन—(विस्मय में) देवी !

वासवदत्ता—ग्रहण करना तो सब चाहती हैं···कोई त्याग भी तो करे।

उदयन—क्या कह रही हो ?

वासवदत्ता—(हँस कर) इस तरह शंका से न देखो आर्यपुत्र ! तुम्हारे पुत्र की माता बनने का भाग्य मुझे मिल चुका है ! भगवान जानते हैं, झूठ नहीं कहती।

उदयन—नहीं समझता मैं क्या कह रही हो तुम देवी !

वासवदत्ता—अपना पुत्र चाहती हूँ मैं···कुमार अब मेरा नहीं है।

उदयन—कह दूँगा, पद्मावती से···कुमार के प्रेम का अवसर उसकी माता को भी दे।

वासवदत्ता—जिस अभाव को भरने के लिए वह उसे आँखों में लिये फिरती है, उसका वही अभाव भर दो। मुझे जितना दे चुके हो उसका अंश भर तो उसे दो।

उदयन—महादेवी ! (विस्मय में देखता है)

वासवदत्ता—आज दिन भर के उसके रोने से मेरा मन काँप रहा है। गौतम के चले जाने से गोपा का अभाव वह अपने भीतर देख रही है। उसे अब तुम अपना प्रणय दो। अपने प्रेम से उसे भर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दो। केवल विवाह करने से क्या हुआ। उसे…तुम्हारा सम्पूर्ण प्रेम न मिला। उसे भी पुत्र दो आर्यपुत्र!

उदयन—विस्मय है प्रिये! तुम कैसे जानती हो कि मैं मगध-कुमारी को प्रेम नहीं देता।

वासवदत्ता—मुझसे न पूछ कर अपने मन से पूछो। जिस समय तुमने अग्नि को साक्षी दे कर उसका हाथ पकड़ा क्या उस समय भी तुम्हारे मन में मेरी स्मृति न भूल उठी थी? शिशिर की पद्मिनी की तरह वह सूखती चली जा रही है। मैं जानती थी मुझे छोड़ कर किसी दूसरी रमणी के लिए तुम्हारे पास कुछ नहीं। महामात्य ने नहीं माना…यह अपराध मेरा है, तुम्हारा है, आर्य मन्त्री का है। उस बेचारी का कोई अपराध नहीं।

उदयन—मन्त्री ने नहीं समझा। उन्हें अपने स्वामी का तेज बढ़ाना था…पर तुम कैसे भूल गई प्रिये! एक मन्दिर में दो देवता नहीं रहते। फिर भी अपनी ओर से पद्मावती को भी सुख देना मैं चाहता हूँ। तुम्हें देख कर पीपर के पत्ते सा मेरा हृदय हिल उठता है, शरीर गनगना कर पुलकित हो जाता है; मेरी यह दशा उसे देख कर नहीं होती। यह मेरी विवशता है।

वासवदत्ता—एक वृक्ष क्या दो लताओं को आश्रय नहीं देता?

उदयन—इसीलिए वह जड़ है। पट का अवरोध हटा कर …समुद्र से निकली लक्ष्मी की तरह…याद है जब तुमने देखा? एक पल के लिए मैं अचेत हो गया। उसी एक पल में मेरे जीवन की सारी गति अब बन्द है।

वासवदत्ता—प्रेम केवल सम्मोहन नहीं कर्तव्य भी है आर्यपुत्र!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

उदयन—लावाणक का आखेट बड़ा महँगा पड़ा। (एकटक वासवदत्ता की ओर देखता है)

वासवदत्ता—समुद्र को इसकी चिन्ता नहीं होती कि उसमें एक ही साथ कितनी नदियाँ गिरती हैं।

उदयन—न मैं वृक्ष हूँ और न समुद्र। मैं चेतन मनुष्य हूँ... फिर भी पद्मावती के प्रति धर्म के वन्धन का आदर अब और अधिक करूँगा।

वासवदत्ता—संकल्प किया है...आज से मैं आर्यपुत्र के पुत्र की माँ भर रहूँगी।

उदयन—(उद्वेग में) फिर कहीं छिप जाओगी?

वासवदत्ता—जानती थी कि जब तक आर्यपुत्र मुझसे निराश न हो जायेंगे तब तक किसी दूसरी कुमारी की ओर आँख भी न उठायेंगे। पर अब यह जब हो गया...अब मैं केवल धर्म के अवसरों पर पत्नी का आसन लूँगी...अब तक जो मेरा रहा वह अब मैं पद्मावती को दे चुकी। मेरी किसी भी कामना को आर्यपुत्र ने भंग न किया; यह भी न भंग करेंगे।

उदयन—गौतम की तरह तुम्हें भी विराग हो रहा है?

वासवदत्ता—(हँस कर) राग और विराग परस्पर विरोधी नहीं एक दूसरे के पूरक हैं प्रभु! पति के प्रेम का फल पुत्र होता है। आपके पुण्य से वह मुझे मिला है। वही फल अब पद्मावती को मिले।

उदयन—और कहीं उसके भाग्य में पुत्र न लिखा हो?

वासवदत्ता—(गम्भीर स्वर में एकटक देखती हुई) तब

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उसका यह अभाव मिटाने के लिए आर्यपुत्र को केवल अब उसी के भाग्य में लिखा रहना होगा। गौतम के गृहत्याग की सूचना से जलती रेत में मछली की तरह छटपटाती उसे मैं देख चुकी हूँ। इसमें केवल गोपा का ही नहीं उसका अपना भी दुःख निहित है।

उदयन—(प्रमदवन के ऊपर आकाश में देख कर) विस्मय हो रहा है मुझे। धरती···बस धरती है।

वासवदत्ता—यह स्वर्ग भी बनाई जा सकती है जिसे कभी किसी ने नहीं देखा···पर जिसका मोह मनुष्य की सबसे बड़ी लालसा है।

उदयन—अब अधिक नहीं···मेरे लिए यह पर्वत उठा कर समुद्र तिरना होगा। भरोसा है मुझे अपने उस कर्म और प्रेरणा की देवी का जो केवल तुम हो प्रिये !

वासवदत्ता—(हँस कर) हो गया···मैं अब और कुछ नहीं चाहती।

उदयन—प्रतिहारी !

(नेपथ्य में) आज्ञा देव !

उदयन—आर्य अमात्य को मेरा प्रणाम कहो।

यौगन्धरायण—(प्रवेश कर) जय जीव देव !

उदयन—विलम्ब हुआ आपको···महादेवी की वाणी का···

वासवदत्ता—स्वामी को बातों में उलझा दिया मैंने आज··आपको देर से रुकना पड़ा···

यौगन्धरायण—मैं अभी आ रहा हूँ। मन्त्रिपरिषद् में आज अधिक कार्य निपटाने थे, आज के निर्णय को महाराज से कहने···

उदयन—आपके मन्त्र में मुझे विश्वास है, आपके रहते मन्त्रि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

परिषद् का निर्णय सदैव उचित होगा।

यौगन्धरायण—राजनियम के अनुसार मन्त्री पर भी अंकुश रखना होता है अन्यथा वह प्रमाद कर बैठेगा।

उदयन—आज आप पर भी शंका करूँ? भरत कुल की मर्यादा के अनुकूल होगा यह…

यौगन्धरायण—अवन्ती नरेश का चर यह पत्र और छोटी रानी के लिए उपहार की वस्तुयें ले कर आया है।

वासवदत्ता—(उत्सुक हो कर) क्या लिखा है आर्य! मैं देखूँ?

उदयन—भेंट की वस्तुएँ कहाँ हैं?

यौगन्धरायण—देवी पद्मावती के पास भेज दी हैं। महादेवी के लिए जितनी सामग्री नहीं आई थी…उससे अधिक मगध कुमारी के लिए आई है।

वासवदत्ता—पहले पत्र दीजिये।

यौगन्धरायण—हाँ यह…।

उदयन—मुद्रा तोड़ कर पढ़िये आर्य! महासेन का पत्र पढ़ने का भी पहला अधिकार आपको है।

यौगन्धरायण—धन्य देव! (पत्र खोल कर पढ़ता है) "आखेट के समय पुत्री के जल मरने की सूचना से मुझे और महारानी को जितना शोक हुआ था, उससे अधिक आनन्द यह सुन कर हुआ कि महामात्य ने अपनी नीति की सफलता के लिए मेरी सौभाग्यवती पुत्री को भी साधन बनाया। मगधराज दर्शक की बहन से विवाह कर पूर्व और पश्चिम दोनों ओर से वत्सराज अभय बने हैं। पुत्री पद्मावती को इस अवसर के उपहार भेज रहा हूँ। इसी प्रसंग में महामात्य…

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उदयन—रुक क्यों गये ? आगे क्या है पढ़िये।

यौगन्धरायण—(हँस कर) मेरा नाम लिख कर महासेन ने लिखा है······

उदयन—जो कुछ लिखा है शब्द शब्द पढ़िये आर्य !

यौगन्धरायण—मेरे प्रसंग की बात है देव !

उदयन—तो क्या हुआ, अरे ! फिर दीजिये मुझे, मैं पढ़··· (यौगन्धरायण के हाथ से पत्र ले कर) "···महामात्य यौगन्धरायण का नीति-कौशल तुम्हारे दोनों विवाहों में सफल रहा। अवन्ती में मेरी पुत्री का हरण उन्होंने जिस कौशल से कराया उससे भी अधिक कौशल देखा गया मेरी कन्या के जल मरने की बात फैलाने में··· (हँसने लगता है)

वसन्तक—(प्रवेश कर) हँसी का कोई प्रयोग हो देव ! तो दीजिये मैं उसकी साधना करूँ।

उदयन—आर्य ! अवन्ती नरेश आपको बधाई दे रहे हैं।

यौगन्धरायण—आपके गौरवबोध में···अभिलाषा मेरे आगे नहीं पीछे चलती है देव ! महासेन ने आपको बन्दी बनाने का कुचक्र जिस क्षण चलाया···उन्हें दो बार सोचना चाहिए था कि यह स्वामि-भक्त सेवक क्या पाण्डुकुल की अप्रतिष्ठा सह लेगा ?

उदयन—अभी भी आप भ्रम में हैं आर्य ! महासेन ने आपको पहचान लिया था···जब आप ज्योतिषी बन कर गये थे···और इस वसन्तक के साथ जब आप मुझे छुड़ाने अवन्ती गये···तब भी आप उनसे छिपे न रहे। कुमारी के अपहरण के लिए आप जो कुछ करते रहे उसका पता भी उन्हें था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

यौगन्धरायण—फिर उन्होंने मुझे बन्दी क्यों नहीं किया ?

उदयन—महासेन को समझने के लिए दूसरा मापदण्ड बनाना होगा। याद है आपको जब बन्दीगृह में वे अकेले रह गये और आप सब चले आये'''उन्होने मुझसे कहा'''यह भट्ट नीलकण्ठ तुम्हारा मन्त्री है और (वसन्तक की ओर संकेत कर) यह हँसोड़ ब्राह्मण विदूषक वसन्तक। अवन्ती में छिपे तुम्हारे एक-एक चर को मैं जानता हूँ।

यौगन्धरायण—(खिन्न हो कर) हँसी कर रहे हैं महाराज ?

उदयन—प्रमाण लेंगे आप इसका ? वसन्तक ! स्वर्ण मुद्राओं की कितनी नकुली भद्रवती पर रक्खी गई थीं'''महासेन के सैनिकों को लोभ में फँसाने के लिए।

वसन्तक—दो'''

उदयन—सीमान्त पर म्लेच्छराज पुलिंद की सहायता से निश्चिन्त हो कर जब हम लोग विश्राम करने लगे'''सरोवर में जल पी कर भद्रवती जब गिरी'''और मर गई'''मैंने तुमसे कहा था नकुलियों को उतार कर रख लो।

वसन्तक—महादेवी की मंजूषा में नकुलियाँ आज भी हैं।

उदयन —(वासवदत्ता की ओर देख कर) देवी, नकुलियाँ आज साक्षी देंगी।

वासवदत्ता—उठा लाओ विदूषक तुमने जहाँ रक्खीं वहीं हैं। (वसन्तक का प्रस्थान) भद्रवती ने माता की तरह स्नेह किया मुझसे'''अवन्ती की सीमा भर पर्वतों और नदियों को पार करती रही'''तब मरी जब सङ्कट टल चुका था। (आँखों में आँसू)

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

यौगन्धरायण—विस्मय हो रहा है देव मुझे। क्या नकुलियों की संख्या अधिक है ?

उदयन—भद्रवती के चालक आषाढ़क को आप अपनी ओर से धन दे कर निश्चिन्त हो गये थे फिर भी आषाढ़क को धन से प्यारे थे प्राण। महासेन ने जब उससे पूछा आँसुओं से उनका चरण भिगो कर···उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

यौगन्धरायण—महाराज! धरती और आकाश कुम्भकार के चक्र से घूम रहे हैं।

(रत्नजटित रजत मंजूषा लिये वसन्तक का प्रवेश)

वासवदत्ता—इधर लाओ वसन्तक, मैं खोलूँ। (मंजूषा खोल कर नकुलियाँ निकालते हुए) एक, दो, तीन, चार, भद्रवती के स्मृति चिह्न हैं ये। उसकी पीठ से जिनके भीतर का स्वर्ण एक क्रम से तीन योजन गिरता रहा।

यौगन्धरायण—चार ? फिर गिनें महादेवी !

उदयन—अब आप गिन लीजिये आय !

यौगन्धरायण—(गिन कर) हाँ हैं तो चार। कैसे हुआ यह ?

उदयन—भद्रवती पर आषाढ़क जिस समय नकुलियाँ रख रहा था महासेन ने दो नकुली अवन्ती की स्वर्ण मुद्राओं की उस पर उसी से रखवा दीं और कह दिया यह बात कहीं भी खुली तो उसकी जीभ काट ली जायेगी। आप जानते हैं आषाढ़क सीमान्त से लौट गया··· जहाँ भद्रवती मरी थी। पर वह अवन्ती में अभी भी जीवित है उसे कोई दण्ड नहीं मिला।

(यौगन्धरायण नकुलियों को उलट कर हिलाने लगता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

तीसरी नकुली से तीन स्वर्ण मुद्रायें गिरती हैं।
यौगन्धरायण उठा कर उन्हें ध्यान से देखता है।)

उदयन—कौशाम्बी की मुद्रायें हैं आर्य ?

यौगन्धरायण—नहीं देव ! अवन्ती की।

उदयन—आपकी नीति से आज सारा देश काँप रहा है। आपके यश से मैं यशस्वी हूँ। पर महासेन को अपनी कन्या को सुखी देखना था; इसलिए आपके कौशल के वे सहायक बने बाधक नहीं।

वासवदत्ता—किसी जन्म में मैंने कोई ऐसा पुण्य किया था जिससे मेरे लिए यह संसार आज नया हो गया। मेरा यह नया जन्म है। अब मैं माता-पिता को मुँह दिखा सकूँगी।

यौगन्धरायण—यह सब आप कैसे जान गये महाराज ?

उदयन—दोनों रानियों और पुत्र के साथ मैं अवन्ती चल कर तात से आशीर्वाद लूँगा। आप भी चलें, वसन्तक भी चले। इस पत्र में उन्होंने मेरे सारे परिवार को बुलाया है।

(कांचनमाला का प्रवेश)

उदयन—क्या है यवन बाला ?

कांचनमाला—देवी पद्मावती के सिर में पीड़ा हो रही है। देह कँपा कर ज्वर चढ़ रहा है। कुमार उनकी गोद से निकलना नहीं चाहते।

उदयन—देवी, चलो उसे सम्हालो। मैं अभी आया।

(कांचनमाला और वासवदत्ता का प्रस्थान)

उदयन—इस सृष्टि में विस्मय की कमी नहीं है आर्य ! विस्मय न करें। महासेन के इस आचरण से अधिक विस्मय-जनक क्या

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

शाक्य कुमार गौतम का आचरण नहीं है ?

वसन्तक—गोपा ने कुछ कह दिया होगा···रूठ कर चले गये ।

यौगन्धरायण—हँसी न करो विदूषक ! यह घटना देश के एक छोर से दूसरे छोर तक बिजली की तरह कौंध गई है ।

उदयन—आपको कुछ पता है आर्य क्या हुआ ?

यौगन्धरायण—शाक्य कुमार गौतम बचपन से ही जीवन के प्रति उदासीन रहे हैं । किशोरावस्था में प्रकृति का जो धर्म है··· उसका पालन उन्होंने कभी नहीं किया । क्रीड़ा कौतुक से भागते रहे; आमोद प्रमोद में उनका मन नहीं लगा···व्यायाम और आखेट का परिचय भी उन्हें नहीं मिला···।

उदयन—उस आयु में वे करते क्या थे ?

यौगन्धरायण—जैसे किसी का संग उन्हें नहीं रुचता था, बिना किसी साथी सखा के अकेले वृक्षों के नीचे···लता कुंजों में या जहाँ एकान्त मिल जाता वहीं वे छिप कर बैठ जाते थे ।

उदयन—इस रोग का उपचार नहीं किया महाराज शुद्धोदन ने ?

यौगन्धरायण—जो कुछ कर सके; सोलह वर्ष की ही अवस्था में लिच्छिवि-कन्या गोपा से उनका विवाह करा दिया । नव दम्पति के लिए सुरम्य प्रासाद और विहार स्थल बनवाये ।

उदयन—फिर क्या अभाव देख पड़ा उन्हें ऐसा ?

यौगन्धरायण—उद्दीपन और आकर्षण के उपकरणों से घिरे रहने पर भी गौतम का चित्त राग में न रमा । कहा जाता है एक दिन उन्हें झुकी कमर का कोई वृद्ध देख पड़ा; फिर उन्होंने किसी रोगी को देखा और उसके बाद एक शव देख कर वे संसार के माया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जाल से विरक्त हो गये।

उदयन—कर्म से भाग निकलना···मायाजाल से मुक्त होना है आर्य! भरे यौवन में तरुणी पत्नी और नवजात शिशु को नींद में छोड़ कर मुक्ति के लिए यह भाग निकलना बड़ा विचित्र है।

यौगन्धरायण—जो बात कभी सोची भी नहीं गई···गौतम ने वही कर दिखाया।

उदयन—प्रकृति के धर्म का निर्वाह वे कैसे करेंगे?

यौगन्धरायण—कौन जाने···कदाचित् प्रकृति के धर्मों के ऊपर वे उठ जायेंगे।

उदयन—प्रकृति के धर्म से ऊपर उठ जाने का अर्थ होगा आर्य! जीवन के बन्धनों से छूट जाना। दूसरे शब्दों में जिसे मृत्यु कहेंगे। मृतक को भूख, प्यास, पीड़ा और राग का अनुभव नहीं होता और जब देह को इन अनुभवों से मुक्ति मिलती है···उसके बाद ही उसकी दुर्गन्ध भी निकलने लगती है।

यौगन्धरायण—जन्म और मृत्यु के चक्र से छूटने के लिए सुना है···वे वन को चल पड़े।

उदयन—कर्म के जाल में त्रिदेव भी बँधे हैं। कर्म ही के लिए भगवान भी अवतार लेते हैं। आज तक हमारी परम्परा ने जो माना वह सब छोड़ कर गौतम क्या जीवन की जड़ें उखाड़ कर आकाश में नहीं टाँग देते?

वसन्तक—कोई दूसरी बात कीजिये महाराज! यह सब सुन कर मेरा दम घुट रहा है।

उदयन—देख रहे हैं आर्य! यह बेचारा कितना डर गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

यौगन्धरायण—इसने जो कभी नहीं सुना···इसका जो जन्म भर का अभ्यास है उसमें गौतम की यह बात रुई के अंबार में चिनगारी का काम कर रही है।

उदयन—इस सूचना से डर कर महादेवी अभी-अभी पार्वती की पूजा करती रही हैं।

वसन्तक—और देवी पद्मावती तभी से रो रही हैं···उनकी आँखें फूल गई हैं और अभी सुना उनके सिर में पीड़ा हो रही है और ज्वर भी चढ़ रहा है।

उदयन—उनके ज्वर की औषध मेरे पास है। मन के दुःख से उनकी यह दशा है; अभी जा कर यह सब मैं मिटा दूँगा।

यौगन्धरायण—अच्छा देव! तब आप जायँ उनके पास···मैं अभी पद्मपाणि को भेजता हूँ।

उदयन—जी नहीं···सौ रोगियों को मार कर वैद्य, और सहस्र रोगियों को मार कर लोग चिकित्सक बनते हैं।

(वसन्तक हँसता है, यौगन्धरायण मुसकरा उठता है)

उदयन—प्रणाम आर्य! गौतम की और सूचना दीजियेगा।

यौगन्धरायण—स्वस्ति देव! इस विस्मय की सारी बातें मैं जल्दी ही जान जाऊँगा।

(यौगन्धरायण का प्रस्थान)

उदयन—प्रतिहारी कहाँ है वसन्तक?

कांचनमाला—(प्रवेश कर) यहीं हूँ देव!

(नेपथ्य में)—ऊँ···ऊँ चुप रहो···न मानेगी···तब रोने लगूँगा मैं भी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उदयन—(दाईं ओर के कक्ष को संकेत कर) देवी यहीं हैं ?··· कुमार उन्हीं को चुप करा रहा है···? खोल दो इन कपाटों को, प्रमदवन की वायु जाय वहाँ !

(कक्ष के कपाट खुलते हैं। पलँग पर पद्मावती लेटी है। कुमार उसके कण्ठ में बाँहें डाल उसकी छाती पर सिर टिकाये है। वासवदत्ता उसके ललाट पर लेप लगा रही है। उदयन का प्रवेश।)

वासवदत्ता—देखो बहन ! आँखें खोलो···आर्यपुत्र आये हैं।

(पद्मावती हड़बड़ा कर उठना चाहती है। उदयन उसे पकड़ कर लिटा देता है और पलँग के सिरहाने बैठ जाता है।)

कुमार—तात ! माँ को अच्छा कर दो। (रोने लगता है)

पद्मावती—(रोते कंठ से) अब तुम रोओगे नटखट ! यह चार साल का किसी को रोने भी न देगा ?

उदयन—(कुमार को गोद में ले कर) हैं, हैं, चुप रहो, रोते नहीं बेटा ! (उसे गोद में हिलाते हुए पद्मावती के सिर पर हाथ फेर कर) और तुम्हें क्या हो गया देवी ! किस अपराध पर मेरे···तुम रो रही हो। मेरा पुत्र···और मेरी प्रिया रोयें तब इस धरती पर धीर कौन रहेगा ?

पद्मावती—मैं ही नहीं···समूचे देश में कौन है आज वह युवती जिसकी आँखें नहीं बरस रही हैं।

उदयन—पर क्यों ?

पद्मावती—गोपा मेरे मातृकुल की है।

वासवदत्ता—अरे यह मैं नहीं जानती थी। मुझसे तुमने नहीं कहा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पद्मावती—शाक्य कुमार के घर छोड़ने की बात जिस समय कान में पड़ी···देह में सनसनी फैल गई।

उदयन—मानता हूँ गौतम का यह आचरण इस देश के यौवन और कर्म का कलंक है; पर तुम्हारे रोने से क्या होगा ? गोपा के प्रणय और आग्रह को जिसने तोड़ दिया···छह महीने के पुत्र की भी ममता जिसे न हुई; उस जड़ पर तुम्हारे आँसुओं का प्रभाव क्या होगा ?

पद्मावती—मन नहीं माना···

उदयन—गौतम के आचरण को न देख कर मेरे आचरण को देखो प्रिये !

पद्मावती—भरे यौवन में पत्नी और पुत्र···वृद्ध पिता को छोड़ कर वे संन्यासी बन गये।

उदयन—(गम्भीर स्वर में) अट्ठाइस वर्ष संन्यास की आयु नहीं है। कम से कम साठ वर्ष भी तो चले होते। फिर भी कहा यही जायेगा···संसार से विरक्ति संन्यास है; सुनते हैं वे मृत्यु जीतने निकले हैं···निर्वाण प्राप्त करेंगे।

वासवदत्ता—इसीलिए इसकी आँखों के आँसू नहीं सूखते। सारा दिन इसका आज निराहार बीता। गोपा के दुःख में आज पत्थर भी रोयेगा। यह तो उसके सम्बन्ध की है।

पद्मावती—तुम्हारी आँखें भी भर आई थीं बहन ! उन्हें देख कर ही मेरे धीरज का बाँध टूटा और जब बाँध टूट गया तब फिर पानी रुकता कहाँ ?

वासवदत्ता—ऊँची साँस न लो इस तरह। मन के आघात से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बड़ा कोई दूसरा रोग नहीं है।

उदयन—(हँस कर) उसकी औषध मेरे पास है। (पद्मावती को एकटक देख कर उसके मुँह पर हाथ फेरता हुआ) रोओगी तुम अब मेरे सामने···जिसका सब से बड़ा धर्म है अबला की आँखों में आँसू न देखना। इस धर्म के बचाने के लिए किसी भी दूसरी प्रिय वस्तु को मैं छोड़ सकता हूँ।

वासवदत्ता—आर्यपुत्र!

उदयन—कहो···

वासवदत्ता—(पद्मावती का हाथ उदयन के हाथ में देती हुई) यही हाथ अग्नि को साक्षी दे कर एक बार पकड़ा था देव! आपने। दूसरी बार मुझे साक्षी दे कर पकड़िये।

उदयन—तब एक हाथ से पकड़ा था अब यह दोनों से पकड़ रहा हूँ। गौतम नहीं हूँ मैं जो कर्त्तव्य से भाग निकलूँगा। मेरा पहला और प्रधान कर्त्तव्य तुम दोनों के आँचल में बँधा है। देश के तरुण धनुष फेंक कर अब उन्हीं हाथों में भिक्षापात्र लेंगे। लोक जीवन से विमुख हो कर निर्वाण की कामना विडम्बना है।

वासवदत्ता—पर यह हुआ कैसे?

उदयन—(हँस कर) पृथ्वी पर पहाड़ों की चोटियाँ भी मिलती हैं···पर धरती के जीवों का पालन करती है वह भूमि जो समतल है। सम्भव है गौतम किसी दिन पर्वत की चोटी से देख पड़ें; पर जिस दिन सारी धरती पर्वत बन जायेगी, इसकी उपज रुक जायेगी और उन पर्वतों की ओर सिर उठा कर देखने वाला भी कोई न रहेगा।

पद्मावती—और जब वे मृत्यु जीत लेंगे?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

उदयन—कर्म से भाग कर मृत्यु नहीं जीती जाती। भ्रम का रोचक आवरण बुद्धि पर पड़ जाता है, पर वह भ्रम है सत्य नहीं।

पद्मावती—(प्रसन्न मुद्रा में) आर्यपुत्र से कभी उनकी भेंट हो जाती।

उदयन—जीवन का भार साहस और निष्ठा से न ढो कर जो एक बार भाग निकला···लौट कर भी वह इसे न ढो सकेगा। वृद्ध, रोगी और शव को देख कर जो घर से भाग निकला वह मृत्यु से डर गया···अब वह मृत्यु क्या जीतेगा ?

वासवदत्ता—पर यह कौन सी नई बात उन्होंने देख ली जो कभी किसी ने न देखी हो ?

उदयन—(हँस कर) सिर नीचे कर चलने वाला भी लोगों को अपनी ओर खींचता है। पर चलने के लिए प्रकृति ने पैर बनाये सिर नहीं। यह कौन नहीं जानता कि मृत्यु अन्त नहीं। नये वस्त्र के लिए पुराने वस्त्र उतार दिये जाते हैं। सोलह वर्ष में गौतम का विवाह हुआ था, अट्ठाईसवें में उन्हें पहली सन्तान हुई।

वासवदत्ता—तब···इसका अभिप्राय···

उदयन—प्रकृति ने उनके निर्माण में कहीं कोई भूल की थी; नहीं तो पूरे एक युग में एक सन्तान ? सन्देह है मुझे···वे पूरे पुरुष नहीं थे, इसीलिए कर्म और पौरुष से मुँह फेर विराग में सन गये।

पद्मावती—मर कर गोपा को जो दुःख वे न देते···इस तरह दे गये।

उदयन—ठीक कह रही हो···वृद्ध पिता ने संन्यास नहीं लिया··· तरुण पुत्र संन्यासी हो गया ! जगत में यह बराबर हो रहा है···

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तरुणियों के पति भी मरते हैं···जो टलता नहीं उसके लिए रोना क्या ?

वासवदत्ता—नहीं···नहीं···मर जाने में कोई चारा नहीं है। पर भरे यौवन में लोग पुत्र और पत्नी नहीं छोड़ते···यह नित्य नहीं होता। शाक्य कुमार के लिए जो सम्भव हुआ क्या दूसरे तरुणों के लिए वही सम्भव न होगा ?

उदयन—अब ठीक है···(पद्मावती की ओर संकेत कर) देवी इस भय से रोती रही हैं कि मैं भी मुक्ति खोजने निकल पड़ूँगा और तुम भी···महादेवी···पर मेरी देह में उन अपराजित परन्तप अर्जुन का रक्त है जिनके धनुष की टंकार दिगन्तों में गूँजी थी; कर्म की साधना में सगे सम्बन्धियों तक का वध जिनसे हुआ। अकेले शाक्य-कुमार के आचरण से प्रकृति नहीं बदलेगी। भीष्म एक ही हुए और ये गौतम भी अकेले रहेंगे।

वासवदत्ता—कौन जाने···सब के पीछे चलने वाले मिल जाते हैं। लग रहा है किसी दिन गौतम की सेना चलेगी; जिसके हाथ में शस्त्र न होंगे।

उदयन—और जो कर्महीन होगी। दूसरों के श्रम का फल लेगी। मनुष्य अपने कर्म और निर्माण में अमर है। मृत्यु के बन्धन कर्म से कटते हैं। निर्वाण के लिए निर्माण करना होगा। प्रकृति जन्म में जो बीज धर देती है, वे समय पर उगते हैं···फूलते हैं··· फलते हैं। उनका उगना वासना है···फूलना प्रणय, फलना सन्तान। और यह सब गौतम के लिए भी हो चुका है। केवल वे कर्म से भागे हैं···जो त्याग हो सकता है और कायरता भी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

पद्मावती—क्या करती होगी गोपा ? दिन और रात उसके बीतते होंगे कैसे ?

उदयन—गोपा का प्रेम वे न पचा सके। अधिक भोजन अपच करता है⋯जिसमें भूख मर जाती है।

वासवदत्ता—परिहास कर रहे हैं आर्यपुत्र ?

उदयन—तो क्या करूँ ? गौतम के आचरण की मीमांसा⋯ जिससे तुम्हारी आँखों में आँसू और मेरी आँखों में रोष है। एक ही वर्ष और एक ही मास में मेरा और गौतम का जन्म हुआ था। वे मृत्यु से डरे हैं⋯मुझे मृत्यु से खेलना है। तुम दोनों के बीच में बैठ कर⋯एक जाँघ पर कुमार को और दूसरी पर घोषवती को रख कर मैं आज कर्म और अनुराग के वे राग निकालूँगा जिन्हें अब तक तुमने भी नहीं सुना है।

वासवदत्ता—अवन्ती के उस बन्दीगृह में जैसे निकले थे ?

उदयन—वे राग केवल अनुराग के थे। आज अनुराग के साथ कर्म के भी होंगे।

वासवदत्ता—और इन पाँच वर्षों में जो मैं सुनती रही हूँ⋯ सीखती रही हूँ⋯

उदयन—कला भी उत्तेजना चाहती है। गौतम के आचरण, गोपा के दुःख और तुम दोनों के आँसू से मेरी कला को आज उत्तेजना मिली है।

कुमार—(पद्मावती की ओर संकेत कर) तात ! दिन भर रोती रही⋯मुझे भी रुलाया फिर भी चुप न हुई। न तो मेरे साथ कन्दुक खेली; न प्र⋯प्र⋯परमन वन गई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उदयन—(हँस कर) परमन नहीं, प्रमदवन कुमार !

कुमार—परदन…(सब हँसते हैं)

वासवदत्ता—किसकी परछाईं पड़ गई ! पाँच वर्ष तक अभी इसकी बोली नहीं खुली, कहो प्र · म…द…।

कुमार—प्र म्र द ।

पद्मावती—मेरी ओर देख कर कहो । इस बार आ जायेगा… प्रमद…

कुमार—प्रमद ।

उदयन—हम दोनों का सिखाया नहीं आया और तुम्हारे सिखाने पर कह गया ।

पद्मावती—आप लोगों ने जन्म दिया मैं मन दे चुकी हूँ ।

उदयन—कोई है ? वसन्तक !

(नेपथ्य में)—मैं हूँ देव ! मदिरा ।

(मदिरा प्रवेश कर सामने सिर झुका कर खड़ी होती है)

उदयन—हाँ महादेवी, आपका अधिक स्नेह मदिरा पर है कि काञ्चनमाला पर ?

पद्मावती—(हँस कर) इसका उत्तर देवी के लिए कठिन होगा । देवी के साथ दोनों बराबर छाया की तरह रही हैं ।

उदयन—अच्छा मदिरा तुम्हीं कहो !

मदिरा—(असमंजस में) मैं…मैं…नहीं जानती देव ! यह मैं । हम दोनों एक ही साथ यवन देश से चलीं और एक ही साथ अवन्ती के प्रासाद में भी आईं ।

वासवदत्ता—दूसरे का रहस्य जानने का मन सब का होता है;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

अपना रहस्य नहीं खुलता।

उदयन—मैं तो समझता हूँ···काञ्चनमाला पर अधिक स्नेह है, वह अल्हड़ है। पर इस मदिरा के सिर में बुद्धि की आँच है।

वासवदत्ता—अपनी अपनी जगह पर यह दोनों गुण हैं; और यह दोनों प्रिय लगते हैं। बन्दीगृह की प्रतिहारी बना कर मदिरा को जो सुयोग दिया मैंने इससे क्या सिद्ध होता है ?

उदयन—यही कि जो प्रिय थी उसे अपने पास रख लिया; और जिसका भाग्य खोटा था उसे भेज दिया मेरी सेवा में।

वासवदत्ता—और जिस हृदय से प्रिय की परख करती वह कहाँ था ?

पद्मावती—अवन्ति के बन्दीगृह में किसी की कामना में विभोर··· शरीर की सेवा में काञ्चनमाला रही। हृदय के निकट यही भेजी गई।

मदिरा—(दोनों हाथ जोड़ कर) धन्य हो देवी ! मुझ डूबती को बचा लिया आपने। चालीस दिन मेरे रहे और पिछले पन्द्रह दिन कांचनमाला के।

वासवदत्ता—तब क्या मैं पूछूँ···बन्दीगृह में भी इसने कुछ कहा था ?

उदयन—(हँस कर) उसे अभयदान मिले तब कह दूँ।

पद्मावती—अभयदान ? (क्रोध में उसकी ओर देखती है।) क्या कहा था इसने ऐसा ?

उदयन—देखता हूँ अब कहना ही पड़ेगा (मदिरा अँगूठे से धरती कुरेदती है)

वासवदत्ता—किस संदेह में पड़ रही हो ? बौना चन्द्रमा नहीं छू लेता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उदयन—(हँस कर) चन्द्रमा की ओर टकटकी लगा कर देख तो सकता है।

वासवदत्ता—कठिन परिस्थिति में भी आर्यपुत्र को हँसी सूझती है।

उदयन—हँस कर ही तो मैंने बन्दी जीवन के उतने दिन काट दिये। चण्डप्रद्योत महासेन जब अपनी पुत्री से हँस लेते थे फिर मैं तो केवल उदयन हूँ।

वासवदत्ता—हँस लेते थे वे मुझसे ?

उदयन—तुम्हें हँसाते भी थे देवी !

वासवदत्ता—किसने कहा यह सब ?

उदयन—उन्होंने ही कहा था मुझसे मेरे उस बन्दीगृह में। यह भी कह गये थे वे···हँसी से मन का मैल धुलता है···आयुर्बल बढ़ता है। मैं तो मरना भी चाहूँगा···हँसते···हँसते।

पद्मावती—हाय ! कैसी अशुभ बात···

उदयन—अशुभ उसके लिए जो डरता है···जो निर्भय है इसी में वह मंगल का नया लोक रचता है। मदिरा, अपने निकट मैं किसी को डरने नहीं देता। इस तरस सिमट कर धरती में गड़ी जा रही हो ?

पद्मावती—क्या कहा था इसने, छिपा क्यों रहे हैं आप ?

उदयन—कोई ऐसी बात नहीं देवी···जिसकी तुम्हें ईर्ष्या हो। महामात्य के साथ महासेन जिस दिन मेरे पास गये थे···इससे कह गये कि इसकी जगह वहाँ कांचनमाला नियुक्त की गई है। मुझे देख कर यह रो पड़ी और कह गईं कि किस अपराध के लिए मेरी सेवा से यह वंचित हो रही है।

पद्मावती—पर सेवा की कामना इसे क्यों हुई ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उदयन—कामनाहीन प्राणी नहीं हो सकता। सम्भव होता यह···तब तो यह भी निर्वाण खोजने लगती।

(वासवदत्ता हँस पड़ती है)

उदयन—वीणा उठा ले आओ मेरी···मदिरा।

मदिरा—इस समय देव! अभी दिन है।

उदयन—ले आओ मैं इस दिन को रात बना दूँ। यह दिन घोषवती के स्वर में सदैव के लिए मिल जाय···।

(मदिरा का प्रस्थान)

कुमार—बड़ी माँ बजायेंगी तात ?

उदयन—आज मैं बजाऊँगा पुत्र!

कुमार—आप! आप तो कभी नहीं बजाते। (उत्सुक हो कर वासवदत्ता की ओर देखता है)

वासवदत्ता—इसे विस्मय हो रहा है, कभी बजाते तो देखा नहीं।

पद्मावती—सुनो बेटा! आज तुम्हारे तात बजायँगे।

कुमार—ऊँ, हूँ, बड़ी माँ······

(मदिरा का वीणा लिये प्रवेश)

उदयन—आओ तुम यहाँ मेरी जाँघ पर (कुमार विस्मय से देखता हुआ जाँघ पर बैठता है, दूसरी जाँघ पर टिका कर उदयन वीणा के तारों पर धीरे धीरे हाथ फेरने लगता है। पद्मावती उसकी बाईं ओर बैठ जाती है।) और तुम महादेवी! आज वीणा तुम दोनों के बीच में बजेगी।

(वासवदत्ता उत्कंठित सी उसके दायें बैठती है)

पद्मावती—(भरे कण्ठ से) आर्यपुत्र की आँखें भी भर आईं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus. Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उदयन—कुमार अंक में…और तुम दोनों दो ओर…सुख भी जब भीतर नहीं समाता…आँसू बन कर बह उठता है।

(वीणा बजाने लगता है। कुमार की मुद्रा पहले विस्मय फिर हर्ष की हो जाती है; उसकी आँखों से किरणें सी चल पड़ती हैं।)

पद्मावती—(कुमार का मुँह चूम कर) कैसे देख रहा है?

उदयन—अभी इसने देखा क्या…सब कुछ विचित्र है इसके लिए…सब कहीं नया प्राण और नया जीवन।

वासवदत्ता—इसके जन्म के दिन घोषवती के स्वरों में मेरी वेदना मिटी थी; आगे कौन जाने।

उदयन—महादेवी, कैसी निराशा दिखा रही हो? यह देह जब तक सीधी रहेगी भुजाओं में बल रहेगा…और हृदय में अनुराग…तब तक घोषवती तुम्हारा दुःख धोती रहेगी।

पद्मावती—अनुराग कब तक रहता है आर्यपुत्र! इसकी भी कोई सीमा होती है?

उदयन—(उसकी ओर देख कर मुसकराते हुए) सीमा की बात और सब जगह चलती है…केवल यही असीम है। एक जन्म में इसका अन्त नहीं होता…जन्मान्तरों तक चलता रहता है।

वासवदत्ता—सुना था कभी अनन्त इसी में है…विराट इसी में है…ब्रह्म भी इसी में है…मायापति की योगमाया इसी का दूसरा नाम है।

उदयन—किसने कहा था?

वासवदत्ता—(झिझकती हुई) अवन्ती के बन्दीगृह में मेरे बन्दी ने…हाथ में उस दिन भी यही घोषवती थी। इसके स्वर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दिगन्त को उस समय भी इसी तरह हिला रहे थे।

(उदयन तन्मय हो कर वीणा बजाने लगता है। स्वप्न की तरह उसके मुख पर हर पल नया रंग देख पड़ता है। वासवदत्ता और पद्मावती भावविभोर हो कर उसे जैसे आँखों में बन्द कर लेना चाहती हैं। वसन्तक कक्ष के बाहर भद्रपीठ के सहारे खड़ा कभी भीतर और कभी प्रमदवन की ओर देखता है।)

वसन्तक—घोषवती की मोहिनी वृक्षों पर भी छा गई है। वायु की गति रुक रही है। पक्षी जहाँ हैं वहीं अचेत से···कहीं एक पंख भी नहीं हिलता है। मृग मिथुन प्रियंगु की शिला से सिर टेके जैसे सो रहा है। संसार के सभी रहस्य घोषवती के स्वरों में घुल कर नया आकार···नया रूप ले रहे हैं।

उदयन—(वसन्तक की ओर देख कर) इसका परिहास आज भूल गया है।

पद्मावती—भूख लगी होगी···महादेवी आज इसे कुछ ऐसा प्रसाद दीजिये कि इसकी जीभ तालू से सटी रह जाय।

उदयन—(वीणा रख कर पद्मावती को दोनों हाथों में बाँधता हुआ) अब तो न रोओगी ? संचित कर्मों के अनुसार सुख और दुःख जीव के साथ ही जन्म लेते हैं···इनको भोगना होता है···भाग कर कोई कहाँ जायेगा इनसे ?

पद्मावती—(आनन्द से गद्‌गद कण्ठ से) जहाँ आप हैं कोई दूसरा अभाव नहीं है आर्यपुत्र !

उदयन—(उसके सिर से सिर टेक कर) धन्य हूँ मैं प्रिये ! गौतम से एक का भार न चला और मैं दोनों को जन्म भर ढोता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रहूँगा। महादेवी तुम्हें प्रसाद दे रही हैं वसन्तक !

वसन्तक—(पेट पर हाथ फेरता हुआ) इसीलिए यह खुट-पुट कर रहा था···(सब हँसते हैं। वसन्तक वासवदत्ता के निकट जा कर खड़ा होता है। उदयन पहले कक्ष में आता है। प्रमदवन की ओर देखता हुआ भद्रपीठ पर एक हाथ धर कर खड़ा होता है। कांचनमाला दूसरे किनारे से उसे देखती है।)

कांचनमाला—(मन्द स्वर में) मदन आज धनुष और वाण भूल गया है···कहीं सुन न ले। देव की जय हो। महामात्य स्मरण कर रहे हैं !

उदयन—क्या न सुन ले ? किसके धनुष और वाण भूल गये हैं कांचन ? क्यों ?···(हँस कर) देखो इधर, सिर क्यों फेर लिया ! महादेवी का स्नेह तुम्हें प्रगल्भ बना रहा है।

कांचनमाला—आपके राज्य में···अंतःपुर में भी जो भय हो तो फिर बाहर क्या होगा ? कहा कि···

उदयन—मेरे राज्य में भीतर बाहर भय कहीं नहीं है। किसके धनुष वाण कहाँ भूल गये हैं ?

कांचनमाला—मदन धनुष और वाण भूल गया है देव ! (धीमी हँसी)

उदयन—रति के पास से जो आ रहा है···उसके शस्त्र वहाँ काम नहीं आते···क्या पता था कि तुम यहाँ खड़ी स्वप्न देख रही हो। नहीं तो यहाँ वे···

कांचनमाला—काम आते···राह चलते चलते देव ! दान में भी हाथ बटोरना होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

उदयन—नहीं तो फिर दरिद्र के पास याचक नहीं आते। सुना तुमने?

कांचनमाला—(साँस रोक कर) नहीं तो···क्या?

उदयन—महादेवी तुम दोनों के वर की खोज में हैं।

कांचनमाला—और हम दोनों यहाँ से चली जायेंगी···देवी को छोड़ कर···आपको छोड़ कर···और चाहे जो हो पर इस जन्म में देवी के चरणों की छाया छोड़ कर···आपका आश्रय छोड़ कर हम दोनों कहीं नहीं जायेंगी!

उदयन—अपने देश भी नहीं?

कांचनमाला—नहीं देव! हमारा देश अब यहीं है, जिस दिन वहाँ की धरती छोड़ कर हम चढ़ती हैं पोत पर···उसे सदैव के लिए नमस्कार कर लेती हैं।

उदयन—सुनते हैं यवन देश बड़ा सुन्दर है कांचन!

कांचनमाला—ऊपर से···भीतर उसके न यह दया है, न यह धर्म, न विश्वास।

उदयन—(बाहर की ओर कान लगा कर) महामात्य किससे बातें कर रहे हैं?

कांचनमाला—अवन्ती के राजदूत से···कह रहे थे वह आर्य-मन्त्री से···आपके बन्दीगृह को महासेन मन्दिर बना चुके हैं। पहले उसमें जा कर तब महाकाल के दर्शन के लिए जाते हैं।

उदयन—यह नहीं कहा उसने कि उस मन्दिर के देवता कौन हैं?

कांचनमाला—(उल्लास में) कह रहे थे···

उदयन—कहो, रुक क्यों गईं···

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कांचनमाला—दीवालों पर सब ओर महादेवी के साथ आपके चित्र बने हैं ?

उदयन—और·· तात उन पर माला चढ़ाते हैं, यह भी कहा उसने कांचन ?

कांचनमाला—(विस्मय में) कैसे जान गये देव ! आप···कह तो वे यही रहे थे।

उदयन—जानता हूँ मैं कांचनमाला !···महासेन की पुत्री भी उन्हें उतना नहीं जानतीं जितना मैं जानता हूँ··· ।

यौगन्धरायण—(प्रवेश कर) जय हो देव ! भार्गव भूमि में कौशाम्बी की सेना प्रवेश कर गई। रुमण्वान शत्रुओं को ऐसे उड़ा रहा है जैसे आँधी रुई को उड़ाती है। जिस सेना ने कलिंग जीता, भार्गव क्या उसे रोक लेते ?

उदयन—यह सब आपके पुण्य का प्रभाव है आर्य ! मेरी जन्मभूमि उदयगिरि को अपने अधिकार में कर अब आप इस भरतभूमि के सबसे बड़े यशस्वी मन्त्री हैं। भार्गवभूमि की व्यवस्था क्या होगी कुछ सोचा है आपने ?

यौगन्धरायण—विष्णु के चरण पड़ने से जिसका नाम ही चरणाद्रि है वहाँ मैं एक प्रासाद का निर्माण कराऊँगा जिसका नाम होगा कोकनद प्रासाद। कुमार का अभिषेक वहीं करूँगा और उस भूमि का शासन सूत्र कुमार के हाथों में रहेगा।

उदयन—धन्य हो आर्य ! पर कुमार अभी बालक है।

यौगन्धरायण—अवसर के अनुसार बालक भी राजा हो सकता है। मन्त्री अनुभवी होना चाहिये; जिसकी नीति में हित चिन्ता और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कर्म में ओज हो।

उदयन—तब क्या आप भी वहीं रहेंगे...आपके शब्द तो यही कह रहे हैं?

यौगन्धरायण—सोचा यही है। कोशल के बढ़ते प्रभाव को वहीं से मैं रोकूँगा। शिवपुरी काशी जब से कोशल के अधिकार में चली गई तभी से मैं नींद भर सो न सका।

उदयन—आप धर्मवीर हैं, जो अभिलाषा आपके मन में जन्म लेगी वह हो कर रहेगी इसका मुझे विश्वास है।

(पद्मावती, कुमार और वसन्तक की हँसी सुनाई पड़ती है)

यौगन्धरायण—विजय के लिए आप नहीं चलते...विजय आपके पीछे आप ही चलती है। अभी देवी पद्मावती अस्वस्थ थीं आपने वीणा बजा कर उन्हें चंगी कर दिया और अब वे इस तरह हँस रही हैं।

उदयन—तो आप इसे भी विजय समझते हैं?

यौगन्धरायण—निश्चय! धरती वही जीत सकता है जो पहले रमणी को जीत ले। क्या आप नहीं देखते गौतम ने गोपा को छोड़ कर पुरुष के पौरुष में ही संदेह पैदा कर दिया?

उदयन—होगा आर्य! कुछ इसमें। भार्गव भूमि की विजय की बात महादेवी से आप ही कहें...आपके मुँह से यह बात उसी तरह निकले जैसे आशीर्वाद निकलता है।

यौगन्धरायण—फिर चलें आप भी।

उदयन—आप चलें आगे।

(दोनों का दूसरे कक्ष में प्रवेश)

[पर्दा गिरता है]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तीसरा अंक

[कौशाम्बी का राजप्रासाद । प्रमदवन के सामने वाले उसी कक्ष में रंगीन पटवस्त्र नीचे बिछा है, जिसमें विभिन्न वृक्ष, लताओं के वन का चित्रण है । बीच बीच में गज, सिंह, मृग, मयूर और बीच की चित्र-कारी वाले सरोवर में कमलों के बीच हंस बने हैं । प्रमदवन के ठीक सामने दोनों ओर से बीच में सिंहासन रत्नों की प्रभा में जगमगा रहा है । सिंहासन के चार मणिदण्ड सोने की शृंखला से बँधे हैं, जिसके ऊपर श्वेत पर्वत से निकली गंगा की झाग सा वितान तना है, उसमें लगा मोतियों का तोरण सब ओर लटक रहा है । सिंहासन के नीचे स्फटिक के चरणपीठ पर गोरोचन से हंस मिथुन अंकित हैं जिनकी चोंचें एक ही कमल पर टिकी हैं । सिंहासन के दोनों ओर रत्नजटित भद्रपीठ अर्धवृत्त बना रहे हैं। प्रमदवन की ओर से वासवदत्ता, वसन्तक और उदयन का प्रवेश । वासवदत्ता के साथ उदयन सिंहासन पर बैठता है । वसन्तक सामने खड़ा होता है । मदिरा और कांचनमाला स्वर्णदण्ड के चँवर हिलाने लगती हैं । चँवर की वायु में उपर का वितान हिल उठता है ।]

उदयन—(कांचनमाला और मदिरा को लक्ष्य कर) धीरे धीरे··· बाँहें दुखने लगेंगी ।

वसन्तक—और तब महाराज का हृदय दुख जायगा ।

वासवदत्ता—यह समय हँसी करने का नहीं है···विदूषक···

उदयन—अपराजित महासेन की पुत्री और···

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वासवदत्ता—आर्यपुत्र की पत्नी…समुद्र का धीरज न छूटे पर नदी कब अधीर नहीं होती ?

उदयन—समुद्र में पहुँच कर उसकी अधीरता मिट जाती है देवी। तथागत के धर्म में देश के पौरुष और कर्म की हानि मैं बराबर देखता रहा…भारत युद्ध के वीरधर्म और गीता उपनिषद के कर्मयोग का मानने वाला…(स्वर भारी हो उठता है)

वासवदत्ता—होनी नहीं टलती प्रभु ! आप का ही पुत्र आज कर्म से भाग कर शाक्यपुत्र का शिष्य बना…मगध से पश्चिम जिस श्रमण धर्म को आप नहीं बढ़ने देना चाहते थे वह आप ही के पुत्र को लील गया।

(उसकी आँखों से आँसू चल पड़ते हैं। शरीर काँपने लगता है।)

उदयन—पुत्र पर अधिकार न कर सका…पर क्या प्रिया के आँसुओं पर भी अधिकार न कर सकूँगा। जब तक मैं जी रहा हूँ… इन आँखों में आँसू…(उत्तरीय से उसकी आँखें पोंछ कर) अधीर न करो मुझे…नहीं तो फिर प्रलय होगी। किसी राजा से मेरे पुत्र का कहीं अनिष्ट होता तब उसके राज्य में…(कण्ठ भर आता है)

वासवदत्ता—हाय ! आप की देह जल रही है…

उदयन—तुम्हारे रोने में लपटें निकल जायेंगी…उसके राज्य में प्रलय मची होती। पर निरस्त्र तथागत के आगे…मुण्डित केश और पीत वस्त्र धारिणी उनकी श्रमण सेना के सामने मेरा वश नहीं चलता। पुत्र के लौटाने की बात मैं सोच रहा हूँ। पद्मावती यह न सुने नहीं तो सिर पीट कर प्राण निकाल देगी। कुमार को तुमने जन्म दिया था…माता तो वही रही। दैव ने उसे पुत्र न दिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मेरा प्रणय वहाँ न फला...जिसके लिए तुमने...

वासवदत्ता—न कहो...उस बात को...धर्म की पत्नी मैं बनी रही...प्रणय की रमणी उसे बनना ही था...धर्म का आग्रह था यह। मैंने कोई त्याग नहीं किया। आँखों से देख, कानों से सुन कर देव के प्रेम का रस भी मैं लेती रही। दैव ने सब मिटा दिया। (ऊँची साँस खींचती है)

उदयन—समुद्र का धैर्य मिट रहा है प्रिये! तट भूमि तोड़ कर वह धरती बोरना चाहता है। केवल तुम्हीं बचा सकती हो। क्रोध में मुझसे कोई अनीति न हो जाय। तथागत आज यहाँ आ रहे हैं, इसी कौशाम्बी में। मेरे सैनिक, पौरजन कोई ऐसा कार्य न करें...जिससे तथागत और श्रमणों का अपकार हो... कुमार के श्रमण बन जाने से मुझे शोक है...पर पौरजन क्रोध से काँप रहे हैं। वसन्तक...

वसन्तक—(भय में) देव...

उदयन—कह दो सेनापति रुमण्वान से...सैनिकों को वश में रखें। दण्डनायक की सहायता से पौरजन की गतिविधि पर ध्यान रखें। शाक्यमुनि का कहीं अपमान न हो...नहीं तो फिर यह मेरी कीर्ति में कलंक होगा। भरतभूमि के निवासी कर्म से विमुख हो कर...श्रुति और स्मृति का विधान मिटा कर...श्रमण धर्म से जो योगक्षेम चलाना चाहते हैं उसमें बाधा मैं न दूँगा। जाओ कह दो कौशाम्बी की रक्षा से बढ़ कर रक्षा करनी है आज तथागत और उनके श्रमणों की...

वसन्तक—जो आज्ञा देव! (वसन्तक का प्रस्थान)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उदयन—महामात्य का पत्र पढ़ कर मैं काँप गया देवी! तथागत को देख कर अंगुलिमाल सा क्रूरकर्मा दस्यु अपनी हिंसा वृत्ति भूल गया···उनके चरणों पर गिर कर आँसुओं से अपने कर्मों का उसने प्रायश्चित्त किया और अग्नि में तपे सोने की तरह वह भी आज श्रमण है। वेद विरोधी हो कर भी शाक्य मुनि महापुरुष हैं, जिनके दर्शन से सिंह भी सम्मोहित हो उठता है···कहते हैं उनसे बड़ा योगी नहीं पैदा हुआ।

वासवदत्ता—पर देश भर के तरुणों और बालकों को श्रमण बना कर जिस धर्म का चक्र वे चला रहे हैं? कुमारियाँ क्या होंगी? जन्म भर ब्रह्मचर्य उनसे निभेगा?

उदयन—कुमारियाँ भी भिक्षुणी बन रही हैं।

वासवदत्ता—कुमारों के साथ संघारामों में रहेंगी?

उदयन—यही तो हो रहा है···

वासवदत्ता—उनके मन में विकार न आयेगा? अग्नि और घृत एक साथ रखने पर लपटें न निकलेंगी?

उदयन—प्रणय विकार नहीं है प्रिये! प्रकृति का सब से सात्विक धर्म यही है। इस धर्म से भागने वाले प्रकृति के धर्म से भाग रहे हैं। नर और नारी का आकर्षण न केवल मनुष्य योनि में ही···सभी जीव योनियों में है। जीव धर्म नहीं मिटेगा···मनुष्य के धर्म की मर्यादा मिटेगी।

वासवदत्ता—सो तो होगा। संघारामों में कुमार कुमारी छिप कर प्रेम करेंगे। वहाँ भी शिशु केहाँ···केहाँ···करेंगे···उनका पिता कौन है यही कोई नहीं जानेगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कांचनमाला—जैसे यवन देश में कोई नहीं जानता…

मदिरा—चुप रहो तुम…पगली…

उदयन—इसे इस तरह न डाँटो मदिरा…तुम्हारी तरह बुद्धि की लौ इसे नहीं मिली…यह अभी भी अल्हड़ है।

वासवदत्ता—और इसी लिए तुम्हारा पति दण्डनायक है और इसका चित्रकार…तुम दोनों के अनुरूप देव ने वर चुने थे।

उदयन—मैंने सुना…देवी ने ही दोनों का दोनों से परिचय कराया…

वासवदत्ता—इन दोनों के लिए पति की चिन्ता मुझे हुई…और अब ऐसे बुरे दिन आये कि मेरा पुत्र जन्म भर अविवाहित रहेगा। कह देती हूँ मैं डूब जायेगी नाव इस देश की।

उदयन—हमारे धनुष की टंकार भी जो नहीं सुन सकते थे… वही विदेशी जिनके आचरण का कोई विधान अब तक न बना… कोई दिन आयेगा जब अपने शस्त्रों के बल से इस देश पर राज्य करेंगे। श्रुति निन्दक इन श्रमणों से उन्हें कोई भय न रहेगा।

वासवदत्ता—तब धर्म की क्या गति होगी?

उदयन—कर्म की गति कहो प्रिये! कर्म से भिन्न धर्म कोई होता नहीं। जन्म लेने के बाद से जब तक शिशु में शुभ अशुभ की पहचान नहीं होती…उसके सभी कर्म उसके लिए धर्म भी होते हैं। किशोरावस्था में शरीर के सभी कर्म…क्रीडा…कौतुक, वृक्षों, पर्वतों, नदियों और मैदानों में अंग संचालन और फिर रमणी की ओर अनुराग उस काल के उसके धर्म भी हैं। विद्याध्ययन और ब्रह्मचर्य मन को शरीर को…इस योग्य बना देता है…

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वासवदत्ता—कि वह कम से कम चालीस वर्षों तक गृहस्थ धर्म का पालन करे। पत्नी से प्रेम, धन और सन्तान···अतिथि सेवा··· दान···पुण्य···

उदयन—और फिर पत्नी के साथ घर छोड़ कर पूर्ण संन्यास के पहले के अभ्यास···यह शास्त्रीय विधान मनुष्य की रक्षा के लिए ही बना था जिसे इस शाक्यमुनि ने एक ही धक्के में गिरा दिया। शास्त्रीय पद्धति में ऋषियों ने प्रकृति और सृष्टि के बन्धन बता कर··· हमारी प्रकृति के कर्मों को ही संयम और साधन से धर्म कहा। इस श्रमण विधान में मनुष्य अपनी प्रकृति के बन्धनों को तोड़ कर भाग रहा है।

वासवदत्ता—क्या फल होगा इसका···

उदयन—प्रकृति के प्रतिकूल अपना धर्म नहीं है प्रिये! प्रकृति प्रतिहिंसा में पटु है। इस धर्म की उत्तेजना कभी मिटेगी और जो लहरें बढ़ी हैं कभी लौटेंगी। प्रतिक्रिया के उस समय में···निर्वाण के इन संघारामों में किशोर भिक्षु और भिक्षुणी रति और प्रणय के रास रचेंगे। शाक्यमुनि का कर्म···निर्वाण भूल कर···भोग के तन्त्र रचेगा।

वासवदत्ता—प्रणय चलेगा···उसके फल···पुत्र की कामना किसी को नहीं होगी?

उदयन—और जहाँ यह फल नहीं है···वहाँ प्रणय नहीं वासना की ज्वाला है। तथागत के संघ किसी दिन इसी ज्वाला में जल कर भस्म होंगे।

(उत्तेजित रुमण्वान का प्रवेश। उसकी आकृति लाल हो रही है।)

रुमण्वान—देव···!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उदयन—कहो सेनापति…

रुमण्वान—कौशाम्बी में इन पाखण्डी श्रमणों का प्रवेश न हो…

उदयन—तथागत और उनके निरस्त्र श्रमण शिष्यों पर तुम शस्त्र का प्रयोग करोगे ?

रुमण्वान—कलिंग और भार्गव भूमि की विजय मैंने इसी लिए की कि इन पर राज्य करने वाला पवित्र भरतकुल में कोई न रहे ? शाक्यों के शत्रु विरुद्धक को धक्का दे कर नीचे गिराया और कोशल से कर लिया। शिवपुरी काशी पर वत्स पताका फहराई किस लिए ? कुमार पर इस शाक्यमुनि ने सम्मोहन किया है देव ! इस वेद-निन्दक धर्मद्रोही का प्रवेश कौशाम्बी में न हो।

उदयन—तुम्हारे कुमार भी तो आ रहे हैं उन्हीं के साथ…!

रुमण्वान—कुमार को मैं अवन्ती ले जाऊँगा। महाकाल के मन्दिर में यज्ञ और मन्त्र के बल से कुमार को सम्मोहन के प्रभाव से निकालूँगा।

उदयन—कुमार भी शाक्यमुनि के साथ लौट जायेगा।

रुमण्वान—महामात्य के सामने कुमार श्रमण बन सके…उस कायर गौतम से मन्त्र लिया उन्होंने…

उदयन—सावधान सेनापति ! महापुरुष गौतम की निन्दा मत करो। अपने पुत्र राहुल को भी जब वे श्रमण धर्म में खींच लाये… गोपा भी जब उनके साथ भिक्षुणी हैं…उन अहिंसा के अवतार की निन्दा सुनने में भी मुझे पाप लगेगा। इस जगत में विस्मय की कमी नहीं है सेनापति…शाक्य मुनि इस युग के सबसे बड़े विस्मय हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रुमएवान—तब कुमार को छोड़ देंगे देव ?

उदयन—मेरे छोड़ने की बात नहीं···कुमार ने हम लोगों को···अपनी माता को छोड़ दिया···गौतम को छोड़ कर तुम्हारे कुमार की अब कोई दूसरी गति नहीं है।

वासवदत्ता—आने दो सेनापति! गौतम के साथ कुमार का मुख तो देख लूँगी।

उदयन—तो क्या तुम जाओगी वहाँ···

वासवदत्ता—कहाँ···

उदयन—जहाँ गौतम ठहरेंगे ?

वासवदत्ता—कहाँ ठहरेंगे वे ?

उदयन—यहाँ के तीन धन कुबेर उनको ठहराने के लिए लालायित हैं। तीनों ने संघाराम निर्माण कराया है।

वासवदत्ता—पहले ही से···

उदयन—यही तो विस्मय है। गौतम के श्रमणों के लिए पहले से ही देश भर के श्रेष्ठी संघाराम खोल रहे हैं। उनके धन का उपयोग मन्दिरों जलाशयों के निर्माण में न हो कर संघारामों के निर्माण में हो रहा है।

वासवदत्ता—कौन हैं तीन वे ?

उदयन—घोषित, कक्कोद और पवारिक···

वासवदत्ता—कौशाम्बी के सब से बड़े श्रेष्ठी यही तीन हैं। पूर्व समुद्र, ब्रह्मदेश के मोती इन्हीं की नावें भर-भर कर सहजाती से गंगा छोड़ कर यमुना में प्रवेश करती हैं।

उदयन—इनके भवनों में जितने रत्न भरे हैं···अवन्ती को छोड़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दूसरी किसी भी राजधानी में दुर्लभ हैं।

वासवदत्ता—सिरमुँडे श्रमण इन रत्नों को पहनेंगे आर्यपुत्र !

उदयन—(रुमण्वान की ओर देख कर) जाओ सेनापति तुम अब···दण्डनायक को सावधान कर देना···गौतम की निरस्त्र सेना के विरुद्ध कोई उपद्रव न हो···पौरजन के धर्म में बाधा राजा नहीं डालता। धर्म का विचार ऋषि करते हैं। अपने पुत्र को···जिसे इसी देह से जन्म दिया मैं न रोक सका तो फिर कौशाम्बी के जो जन गौतम से दीक्षा लेना चाहते हैं उन्हें मैं क्यों रोकूँगा।

रुमण्वान—बड़ी आशा से आया था देव !

उदयन—कैसी आशा थी···गौतम के श्रमण बल प्रयोग के लिए नहीं हैं। निरस्त्र पर शस्त्र का उपयोग इस भरतभूमि में कभी नहीं हुआ।

रुमण्वान—तब वेद की मर्यादा मिट जायेगी।

उदयन—वेद में बल होगा अपनी मर्यादा रखने का···तो वह रख भी लेगा। गौतम की वाणी और उपदेश का उत्तर हमारे शास्त्रों की वाणी से ही दिया जायेगा···शस्त्रों से नहीं।

रुमण्वान—(ग्लानि में) जैसी आज्ञा देव !

उदयन—ग्लानि से नहीं सेनापति ! विश्वास से जाओ ! देखो दैव क्या करता है। काल की गति जब तक गौतम के अनुकूल है उनकी राह न रुकेगी। समझ गये···किसी श्रमण का अनिष्ट न हो।

रुमण्वान—नहीं होगा देव···सैनिक और पौरजन आपके वश में रहेंगे···फिर भी मैं गौतम का स्वागत नहीं करूँगा···किसी को सिर नहीं झुकाऊँगा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उदयन—तुम्हारा काम उन सब की रक्षा भर करना है…जो चाहेंगे उनकी आरती उतारेंगे…उसमें भी तुम्हें बाधा नहीं देनी है।

(रुमण्वान का प्रस्थान। वसन्तक का प्रवेश।)

वसन्तक—तीनों श्रेष्ठी आये हैं महाराज! सभा भवन में बैठे हैं। तीनों ही तथागत को अपना अतिथि बनाना चाहते हैं। पौरसभा में यह निर्णय न हो सका। महाराज के निर्णय के लिए आये हैं।

उदयन—हुँ…बुलाओ यहीं…

(वसन्तक का प्रस्थान)

वासवदत्ता—समय का फेर इसे कहते हैं प्रभु! गौतम के आतिथ्य की होड़ लग गई है इन महाजनों में…।

उदयन—ऋषियों के आतिथ्य के लिए पहले भी इनमें होड़ लगती थी। गौतम भी ऋषि हैं।

वासवदत्ता—आर्यपुत्र!

उदयन—कहो…भय में क्यों देख रही हो?

वासवदत्ता—गौतम के प्रति आपका यह आदर भाव मुझे शंकित कर रहा है। सेनापति से आपने जो कहा…कहीं आप भी तो उनके शिष्य न बनेंगे?

उदयन—(हँस कर) सारा संसार उनका शिष्य बन जाय… अकेले मैं उनके धर्म को असत्य, प्रकृतिविरुद्ध, कर्म से भागने वाला…मिथ्या का बवंडर कहूँगा। इस धर्म से देश का विक्रम रसातल में चला जायगा। उत्तेजित न करो मुझे। गौतम अपने महात्मा हैं पर उनका यह धर्म कायरों का धर्म है। लोक जीवन की मर्यादा इस धर्म से मिट जायेगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(वसन्तक के साथ घोषित, कक्कोद, पवारिक का प्रवेश ।)

सब—महाराज की जय हो !

कक्कोद—देव के प्रताप से हमारे पोत पूर्व समुद्र, ब्रह्म देश वंग-तट और चम्पा के मार्ग सकुशल सहजाती पहुँच गये। शकटों पर पण्य द्रव्य आ रहा है। (उदयन के सामने रत्नों और मोतियों की माला बढ़ाता है) यह देव का उपहार है।

उदयन—रख दो वहीं नीचे श्रेष्ठी···(श्रेष्ठी असमंजस में देखता है)

घोषित—देव ! यह सात दुर्लभ मोती अभी बिंधे नहीं हैं। (हथेली पर रख कर दिखाता है) छिपकली के अंडे से बड़े-बड़े···

पवारिक—इन विद्रुमों का रंग दिन में तीन बार बदलता है। सूर्य के तेज के साथ इनकी लाली गहरी होती जाती है···यह पद्मराग मणि···

उदयन—आप लोग यह सब वसन्तक को दे दें। प्रजा के धन के रूप में मेरे कोष में सुरक्षित रहेंगे। इन रत्नों का उपयोग अब मेरे लिए क्या है ! (वसन्तक रत्न ले कर अपने उत्तरीय में रखता है)

कक्कोद—ऐसा क्या देव ! इन्द्र से पराक्रमी आप अभी सिंहासन पर हैं और महादेवी···

वासवदत्ता—इन रत्नों का उपयोग क्या होगा अब···तुम्हारे कुमार तो श्रमण बन गये।

उदयन—एक ही कुमार नहीं···देश भर के कुमार श्रमण बन रहें है श्रेष्ठी ! कुमारियाँ भी भिक्षुणी हो रही हैं। इन रत्नों का उपयोग क्या होगा···कौन पहनेगा इन्हें ? व्यापार ही करना हो तो

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्रमणों के भिक्षापात्रों और पीले वस्त्रों का करो अब···

(श्रेष्ठी घबरा कर एक दूसरे की ओर देखते हैं)

घोषित—तथागत हम लोगों में किसके अतिथि हों···इसकी आज्ञा देव दे दें।

उदयन—इसका निर्णय तथागत स्वयं करेंगे। आप तीनों उनसे प्रार्थना करें···देखें तथागत किसे यह पुण्य देते हैं।

ककोद—देव जानते हैं, कौशांबी में सात सरोवर मेरे बनाये हैं···धर्म में दान मैं सब से अधिक कर चुका हूँ।

पवारिक—और देव! कौशाम्बी की नौ पाठशालाएँ मेरे धन से चलती हैं।

घोषित—समुद्र के सामने सरोवर अपने जल का बखान क्या करेगा? मुझ अभागे से तो अभी कुछ नहीं हुआ।

उदयन—तब गौतम तुम्हारे अतिथि बनें श्रेष्ठी···दान और दया में तुम किसी से पीछे नहीं हो। फिर भी तुम्हें उसका अहंकार नहीं है।

ककोद, पवारिक—महाराज की जय! यह निर्णय हम स्वीकार करते हैं।

उदयन—निर्णय गौतम करेंगे भद्र···देखें वे क्या निर्णय करते हैं? यह मेरा निर्णय नहीं···असावधानी से यह बात निकल गई। धर्म के निर्णय का अधिकार मुझे नहीं। और कोई सेवा आप लोगों की···

ककोद—आज कुछ नहीं देव! जब कोई अवसर आयेगा राजा के आदेश की···

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus. Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उदयन—श्रमण धर्म में कल का कोई विधान नहीं है। प्रस्तुत क्षण के आगे काल की स्थिति इस धर्म में नहीं है। तब आप लोग जायँ। (एक ओर कान लगा कर) गोपुर का यह कोलाहल··· तथागत आ तो नहीं गये?

(तीनों श्रेष्ठी सिर झुका कर जाते हैं)

वासवदत्ता—(प्रमदवन के ऊपर देख कर) आकाश में पक्षी सब ओर से आ कर वहाँ जुट रहे हैं। नीचे मनुष्यों की भीड़ है···तभी···

उदयन—वसन्तक···जा कर देखो गौतम के साथ कुमार किस तरह चल रहा है? किसके अतिथि बनते हैं वे···? महामात्य की क्या दशा है···जो कुछ देखने योग्य हो···सब देख कर मुझे सूचित करो।

(वसन्तक का प्रस्थान)

वासवदत्ता—देव!

उदयन—कहो···

वासवदत्ता—प्रमदवन के पूर्व प्राचीर में जो वातायन है···वहाँ से सब देखा जा सकेगा।

उदयन—(हँस कर) गौतम मेरे लिए जो सत्य धर्म के प्रचारक हैं तब तो फिर मुझे यहाँ उनका स्वागत करना चाहिये। और यदि नहीं···तो इस कौतुक में मुझे कोई रुचि नहीं है। व्यक्ति की पूजा मैं नहीं करता···वेद···शास्त्र का विधान···छोड़ने चलूँगा तब गौतम या ऐसे कितने व्यक्ति सिर के बल चलने वाले मिल जायेंगे।

(कोलाहल बढ़ने लगता है)

(नेपथ्य में कई कण्ठों से)—बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गच्छामि, संघं सरणं गच्छामि।

उदयन—कुमार भी बोल रहा होगा देवी!

वासवदत्ता—हाय! दैव!

उदयन—गौतम ने घर छोड़ा जिस रात···उसी रात देवी···देश भर की माताओं ने हाय किया था।

वासवदत्ता—(ऊँची साँस खींच कर) सब ओर अँधेरा है··· कुछ नहीं सूझता···किस हीन लग्न में जन्म हुआ था···हाय!

(दोनों हाथों में मुँह छिपा कर उदयन की छाती से टिका देती है।)

उदयन—(उसके सिर पर हाथ रख कर) यह क्या···महासेन की पुत्री···और कायर मैं भी नहीं हूँ···हैं···हैं···तुम्हारी यह दशा ···फिर पद्मावती को धीरज कौन देगा? (वासवदत्ता की सिसकी)

वासवदत्ता—(आँसू पोंछ कर) कुमार की रक्षा करो देव! तुम्हारा पुत्र कर्म से भाग कर कायर बन रहा है।

उदयन—(प्रमदवन की ओर देख कर) करूँगा···जैसे हो करूँगा··धीरज धरो···हृदय पर पत्थर रख कर···वह देखो पद्मावती आ रही है। जान गई वह···देखो आँधी में उड़ती चली आ रही है। कांचन! देखो···मदिरा··नहीं तो देवी गिर पड़ेंगी।

(मदिरा और कांचनमाला वेग से जाती हैं। चँवर अभी दोनों के हाथों में है।)

(नेपथ्य में) फेंक दो अभागिन···यह चँवर अब किसके लिए? कौशाम्बी का राजवंश डूब गया। आग···लगा दो सिंहासन में···

उदयन—देवी सम्हालो उसे···(वासवदत्ता कातर आँखों से देखती है) मेरा कल्याण इसी में है···वज्र सी कठोर बनो और इसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सम्हालो। अवन्ती के अपने उस प्रेम की रक्षा करो देवी! क्या कहूँगा मैं इससे···उन्माद न हो जाय इसे···अपने सेवक के इस संकट में···केवल तुम्हीं···(कण्ठ भर आता है और उसके काँपने से सिंहासन काँप उठता है)

वासवदत्ता—(गंभीर स्वर में) धीरज धरो देव! रख लिया अपने हृदय पर पत्थर। पिता माता के स्नेह को तोड़ कर···अपनी इच्छा से सपत्नी की दारुण यातना भी···तुम्हारे लिए पुत्र की चिन्ता भी छोड़ दी अब···पुत्र···देह की मैल है···पति प्राण का धर्म है। (उठ कर) जा रही हूँ मैं। (आगे बढ़ती है)

(पद्मावती प्रवेश करती है, कांचनमाला और मदिरा उसे पकड़े हैं।)

पद्मावती—हाय! देव! तुम अभी जी रहे हो···मृत्यु नहीं है मेरे लिए···कुमार गया देवी! (लड़खड़ा कर गिरने लगती है। वासवदत्ता सम्हालने का प्रयत्न करती है।)

वासवदत्ता—(भय में) गिरें न·· मदिरा···रो मत···सम्हाल इन्हें।

(उदयन बढ़ कर पद्मावती को पकड़ लेता है)

उदयन—छोड़ कर हट जाओ तुम सब···सिर लटक रहा है है देवी! सम्हालो। मूर्च्छित हो गई यह···

(वासवदत्ता सिर पकड़ती है। उदयन बाँहों पर पद्मावती को उठा लेता है और सिंहासन पर लिटा देता है।)

उदयन—(मदिरा की ओर देख कर) कर्पूरमञ्जरी ले आओ··· रोने से विपत्ति नहीं टलती।

(मदिरा का वेग से प्रस्थान)

वासवदत्ता—(चँवर से हवा करती है) मर जाय अभागिनी···

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पति के सामने पुत्र की चिन्ता कर रही है···जिसके पुण्य से पुत्र आते जाते हैं···यह तो अभी हैं ही।

पद्मावती—कुमार···कुमार···धरो देव ! भाग रहा है···

वासवदत्ता—भाग जाने दे···छोड़ उसे···कृतघ्न पुत्र को ले कर क्या करेगी ? आर्यपुत्र के चरण हृदय से लगा अभागिनी···अकाल मृत्यु क्यों मरेगी ?

उदयन—(पद्मावती के सिर पर हाथ रख कर) देवी ! धीरज धरो···समय पर पति पुत्र का भी काम करता है।

वासवदत्ता—चेत करो बहन···आर्यपुत्र की चिन्ता करो···उनके दुःख में सहायता करनी है अब तुम्हें···

पद्मावती—(धीमे स्वर में) क्या···आर्यपुत्र को क्या ?

वासवदत्ता—आर्यपुत्र की चिन्ता करो···पुत्र के लिए पति नहीं भूलते···

पद्मावती—(उठती हुई) आर्यपुत्र ! आर्यपुत्र !

(मदिरा का प्रवेश)

उदयन—देवी चेत में आ गईं···(उसे सम्हाल कर बैठाते हुए) अभी मैं जीवित हूँ प्रिये !

पद्मावती—हाय ! देव···

वासवदत्ता—पति से बड़ा फल और क्या होता है रे ! यमराज यदि मुझसे पूछें···मेरा ऐसा भाग्य हो···पति और पुत्र में किसे बचाना चाहूँगी मैं···

पद्मावती—जहाँ मनुष्य यमराज बन जाय···

वासवदत्ता—दो में जहाँ एक की कामना करनी होगी···मैं पति की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कामना करूँगी···और तुम भी यही करोगी···सती धर्म से बड़ा दूसरा क्या धर्म हमारे लिए है ?

पद्मावती—धरती फट जाती···मैं उसमें समा जाती देवी !

वासवदत्ता—पति को छोड़ कर पुत्र के लिए···ऐसा है यह पुत्र का मोह जो पति से विमुख करेगा ?

उदयन—(पद्मावती का सिर छाती से लगा कर) कुछ न बोलो अभी···चित्त ठिकाने आने दो !

वासवदत्ता—किस बात पर चित्त ठौर छोड़ेगा आर्यपुत्र ? पति धर्म जब तक तुम्हारा बना है देह के उस विकार के लिए हम दोनों क्यों रोयें ? क्या करूँ मैं इस पगली को···तुम्हारे चरण हृदय से लगा कर देखे···उससे अधिक सुख पुत्र देगा ?

पद्मावती—तुम स्वर्ग की देवी हो···और मैं हीन नारी हूँ।

वासवदत्ता—छीः···फिर कहोगी यह···प्राणनाथ का दुःख बाँट लो। अपने दुःख से उन्हें भस्म न करो। तुम रो कर···मूर्छित हो कर···अपना दुःख कम करोगी···पर आर्यपुत्र रोयेंगे नहीं···इनके हृदय का उपचार करो···कहीं वह फट न जाय।

उदयन—(पद्मावती की ओर देखता है। उसकी आँखों से जल निकल पड़ता है) अरे ! तुम्हारे दुःख में मेरे आँसू भी न रुकेंगे।

वासवदत्ता—देखा ! तुमने अपनी इस दशा से देव को विचलित कर दिया···फिर रोने दो इन्हें भी···

पद्मावती—हाय सम्हालिये देवी ! मैं अब न रोऊँगी। सती धर्म···क्यों आया पुत्र का मोह इस मन में···

उदयन—इसका खेद न करो···जिसे प्राण का रस पिला कर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तुमने बड़ा किया···वही तुम्हें छोड़ गया···दुःख की बात दूसरी क्या होगी ? पर जिस पर वश नहीं···होनी की राह कब रुकी है ? किसी जन्म का वह शत्रु बन कर तुम्हारे घर आया और अब धोखा दे गया। किसी जन्म में उसके साथ हमने कोई ऐसा कर्म किया था।

वासवदत्ता—जिसका फल है यह···फिर कोई चिन्ता नहीं···हम दोनों ने कोई पुण्य ऐसा भी तो किया था···जिसके फल आर्यपुत्र हैं। जहाँ शुभ होता है वहीं अशुभ होता है पद्मावती ! मृत्यु न हो तो जीने में कोई रस न रहेगा।

उदयन—धन्य हो तुम देवी···तुम्हारे भीतर···तुम अकेले मेरे लिए मन्त्री भी हो, दासी भी हो, धरती हो···माता हो···सखी हो···

वासवदत्ता—(हँस कर) आर्यपुत्र ! एक बात आप छोड़ गये !

उदयन—अरे···देवी !

वासवदत्ता—सत्य में लज्जा क्या···

उदयन—जानती हो तुम···रहने दो···

पद्मावती—पर मैं नहीं जानती···

वासवदत्ता—पंचवटी से जब रावण सीता को हर ले गया···श्री रामचन्द्र लक्ष्मण के साथ वन, पर्वत, नदी पार करते सीता को खोजते चले जा रहे थे···

पद्मावती—(साँस खींच कर) क्या हुआ···?

वासवदत्ता—अपने मन का दुःख रोकने के लिए वे लक्ष्मण से कहने लगे···

पद्मावती—क्या···देवी ! श्री रामचन्द्र के दुःख के सामने हमारा दुःख क्या है !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वासवदत्ता—इसीलिए तो आर्यपुत्र ने यह प्रसंग उठाया कि राक्षस विजयी उन भगवान के चरित्र से हमें सन्तोष हो।

पद्मावती—फिर कहो बहन···!

वासवदत्ता—भाई लक्ष्मण से प्रभु कहने लगे···हे लक्ष्मण, जानकी कार्य के अवसर पर मन्त्री थीं···कार्य करने में दासी थीं, धर्म में मेरी पत्नी और अपराध क्षमा करने में धरती थीं। स्नेह वे माता की तरह करती थीं। क्रीड़ा और विनोद के समय वे मेरी सखी थीं।

पद्मावती—और वह बात···

वासवदत्ता—(हँस कर) वह बात केवल श्रीरामचन्द्र और जानकी के प्रेम की है।

पद्मावती—कहो बहन···यहाँ हमीं हैं—लज्जा क्या?

वासवदत्ता—पति के सुख के लिए पत्नी शृंगार भी करती है··· कभी-कभी चपल भी होती है।

पद्मावती—यही बात थी लज्जा की! पति और पत्नी दोनों के व्यक्तित्व मिटा कर एक हो जाने में···अर्धनारी नटेश्वर की भाव-भूमि में भेद नहीं होता देवी!

उदयन—देवी पद्मावती इस धर्म का रहस्य भी जानती हैं।

पद्मावती—पतिव्रत इस जगत का सब से बड़ा धर्म है देव।

वासवदत्ता—मेरी छोटी बहन को आप जानते क्या थे अब तक?

उदयन—बड़ी भोली···भाव में नेत्र से मोती और मुख से फूल बरसाने वाली···(हँसता है)

पद्मावती—तभी आर्यपुत्र ने कहा पति अवसर पर पुत्र भी हो जाता है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उदयन—भगवती जानकी के भगवान रामचन्द्र के लिए इतने रूप थे।

वासवदत्ता—किसी भी स्त्री के इतने ही रूप होते हैं पति के लिए देव! भरत भूमि की कोई भी नारी पति के लिए वही है…जो भगवती जानकी भगवान रामचन्द्र के लिए थीं।

उदयन—(पद्मावती को देख कर) भगवान रामचन्द्र वन में भी जानकी को साथ ले गये।

वासवदत्ता—उन्हें कर्म करने थे…कर्म की मूल प्रेरणा पत्नी को वे साथ ले गये। गौतम को कर्म से भागना था…वे गोपा से पहले भागे।

पद्मावती—कुमार आयेंगे यहाँ देव!

उदयन—कह नहीं सकता…चेष्टा करूँगा मैं…

पद्मावती—(भय से) ऐं यहाँ आयेंगे भी नहीं…

उदयन—अब वे तुम्हारे पुत्र नहीं देवी! गौतम के शिष्य हैं।

(विक्षुब्ध समुद्र की तरह अधीर यौगन्धरायण का प्रवेश)

उदयन—ऐं…महामात्य इस दशा में…?

यौगन्धरायण—मणि के छिन जाने पर सर्प की जो दशा होती है देव! आत्मघात जो सबसे जघन्य पातक न होता तो…

उदयन—संकट का सहारा केवल धैर्य होता है…

यौगन्धरायण—मेरे पाप से देव ग्रहण के समय सूर्य से हो रहे हैं और महादेवी देवी पद्मावती के साथ तुषारदग्ध पद्मिनी सी देख पड़ती हैं। अपने धर्म में मैं सावधान न रहा। मुझे दण्ड मिले देव!

उदयन—सावधान रहने पर भी यम जब ले जाता है केवल हाथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मलने के अतिरिक्त और क्या रहता है आर्य! मेरे भाग्य का दोष आप अपने सिर पर न लें। दैव की गति आप न रोक सके। इन दस दिनों में ही आपके सभी बाल गये…आँखें धँस गई हैं। इतना शोक किस लिए महामात्य!

यौगन्धरायण—इस शब्द का अधिकारी मैं अब नहीं हूँ… आत्मघात नहीं किया मैंने यही बहुत है।

उदयन—कर्मयोग में विश्वास करने वाला अपने कर्म के फल से भाग निकलने के लिए कभी आत्मघात नहीं करेगा। मन की इस कायरता का नाम बार-बार ले कर आप मुझे कुमार से भी अधिक सन्ताप दे रहे हैं। पसीने से आपके ललाट का त्रिपुण्ड बह रहा है…धीरज धरें…

यौगन्धरायण—पसीना नहीं हृदय का संताप है यह देव! जो देह के द्वार से बह रहा है।

उदयन—गीता की अमृतवाणी तब आप भी भूल गये? फिर कुमार के आचरण से चिन्ता क्या? गौतम सब कुछ छोड़कर निर्वाण में आसक्त हो रहे हैं…हमारे पूर्वज तो रण में भी आसक्त न रहे। शंकर की तरह इस विष को उठा कर पी जाइये…कुमार में भी आसक्त हम क्यों हों?

यौगन्धरायण—हम मनुष्य हैं महाराज!

उदयन—पर देवता को कब किसने देखा…? मनुष्य को देख कर ही हमारे मन में क्या देवता की कल्पना न जगी? (उठ कर यौगन्धरायण का हाथ पकड़ कर दाईं ओर भद्रपीठ पर बैठा कर) अब कहिये यह हुआ कैसे? गौतम को निमन्त्रित किया था आपने?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

यौगन्धरायण—मैं काल को निमन्त्रित करता पर गौतम को नहीं। काल का धर्म मैं जानता हूँ···गौतम का धर्म मेरी समझ में नहीं आता। जन्म लेने का ऋण भरने के लिए जन्म देना होता है···यहाँ गौतम किशोरों को सिर मुँडा कर श्रमण बना रहे हैं।

वासवदत्ता—सुना है कुछ किशोरियाँ भी केश कटा कर दीक्षित हुई हैं।

यौगन्धरायण—हाँ देवी···यह प्रकृति कैसे चलेगी? किसी दिन ये संघाराम वासना की बाढ़ में डूब जायेंगे।

उदयन—(हँस कर) शाप दे रहे हैं आर्य!

यौगन्धरायण—मेरे शाप में बल होता तो वह अग्नि बन कर इस पाखंड को फूँक देता।

उदयन—क्रोध में विवेक न छोड़िये। गौतम पाखंडी नहीं हैं। इस युग के वे सबसे बड़े विस्मय हैं।

यौगन्धरायण—विस्मय और इन्द्रजाल में मुझे विश्वास नहीं है···शास्त्रों के परे···निगमागम के ऊपर मैं किसी व्यक्ति को नहीं देख सकता। मृत्यु को जीतने के लिए कहते हैं गौतम ने घर छोड़ा··· पर क्या ये मरेंगे नहीं। व्यक्ति अमर होता है अपनी सन्तान परम्परा में···राहुल को भी श्रमण बना कर इन्होंने वही परम्परा मिटा दी। मृत्यु से डर कर जो भागा वह मृत्युजयी होगा? समुद्र पर विन्ध्य का तैरना मैं मान लूँगा···पर यह नहीं।

उदयन—तथागत उतरे कहाँ?

यौगन्धरायण—घोषित के संघाराम में।

उदयन—कुमार भी वहीं हैं···

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यौगन्धरायण—यही तो अभाग्य है···कह कर थक गया···पर वे हिले नहीं···कहते हैं तथागत उनके पिता हैं माता हैं···

पद्मावती—ऐसा कह दिया आर्य !

यौगन्धरायण—हाँ···देवी ! वे अब माया मोह के परे हैं।

उदयन—जब तक किसी भी आकर्षण का अनुभव है माया मोह से परे नहीं कहा जायेगा। गौतम की ओर मोह की नई गाँठ डाली है उसने···

वासवदत्ता—तभी तो वह उसके पिता हैं···माता हैं···मुक्त कहाँ है अभी वह···

उदयन—इस प्रसंग पर अब एक शब्द नहीं···गौतम मिले कैसे उसे···

यौगन्धरायण—याद है देव ! वह रुद्रमणि जो योग के चमत्कार दिखाया करता था···

उदयन—ऐं···हाँ···वह भारद्वाज गोत्री !

यौगन्धरायण—वही देव !

उदयन—महासेन के यन्त्रगज को मोहित करने जब मैं निकल रहा था···वह मिला था···फिर मैंने उसे नहीं देखा।

यौगन्धरायण—आप जब बन्दी बन गये महासेन के···कौशाम्बी में तूर्य बजा कर वह कहता फिरा अपने योगबल से आपको वह मुक्त करेगा।

उदयन—अच्छा···मुझे तोता बना कर उड़ा देता या···

यौगन्धरायण—महासेन का बन्दी गृह उसके योग से जब नहीं खुला···वह काशी आ कर भैरव के मन्दिर में पुजारी बन गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पिछली महाशिवरात्रि को वह मुझे काशी में मिला।

उदयन—पूरे बीस वर्ष लुप्त रह कर…

यौगन्धरायण—उसे विश्वास था उसके योग के प्रभाव में ही महासेन, उसकी सेना और अवन्ती निवासी पड़ गये तभी आप छूटे थे।

उदयन—(हँस कर) ऐसा…

यौगन्धरायण—मैंने उसे डाँट दिया और कह दिया कि ऐसी अनर्गल बात फिर कभी न कहे। मेरे शब्द उसे लग गये और उसी ने कुमार के मन को गौतम के प्रति उत्सुक किया।

उदयन—आर्य! वह अब श्रमण बन गया है। कुमार के श्रमण बनने की सूचना उसी ने कौशाम्बी में कल दी।

यौगन्धरायण—हाँ देव! भैरव की पूजा छोड़ कर वह गौतम के पास मृगदाव पहुँचा। उसे उनका शिष्य बनते देर न लगी। मुझसे भेंट करने के बहाने वह चरणाद्रि के कोकनद प्रासाद में भी कई बार आया। मैं उसे अपने विनोद का साधन समझता था…इधर गौतम की दैवी शक्तियों का प्रभाव अवसर पा कर वह कुमार पर डालता रहा।

वासवदत्ता—तब शाक्य मुनि को वही ले आया संस्मार गिरि पर…

यौगन्धरायण—वह भी उस समय जब मैं वत्सराज के एक सहस्र गज गुल्म के शिक्षण का कार्य देखने कोकनद प्रासाद के पूर्व तीन योजन की दूरी पर गया था। गौतम के लिवा लाने की बात वह कुमार से कह गया था…कुमार ने बात मुझसे छिपा ली और कहा कि हमारे हाथियों का सबसे बड़ा गुल्म कोई कार्य नहीं कर रहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उन्हें ऐसी शिक्षा मिले कि नदी तैरना, पर्वत और वन पार करना उनके लिए सुगम हो।

उदयन—अपने मंत्री के साथ छल किया उसने···

यौगन्धरायण—कुमार ने नहीं···विधाता ने छल किया मेरे साथ। कुमार गौतम को देखना चाहते थे···केवल कौतुक के लिए, जिज्ञासा के लिए। पर जहाँ अग्नि रखने में असावधानी होती है वह घर जलता ही है। मुझे जब इसकी सूचना मिली···लौट कर देखता हूँ कि हंस सा श्वेत वस्त्र कोकनद प्रासाद की सीढ़ियों पर बिछा है। आनन्द और अपने दो और शिष्यों के साथ गौतम नीचे खड़े हैं···कुमार हाथ जोड़ कर उनसे चलने का आग्रह कर रहे हैं।

वासवदत्ता—तो क्या शाक्य मुनि जा नहीं रहे थे?

यौगन्धरायण—सीढ़ियों के वस्त्र से हो कर चलना उन्होंने स्वीकार नहीं किया। नंगे पैर धरती पर चलने वाले को उस राज-वैभव की क्या कामना···?

वासवदत्ता—तब क्या हुआ?

यौगन्धरायण—कुमार ने अपने हाथ वह वस्त्र हटाया जो हिल कर हंस की पाँति सा देख पड़ता था।

पद्मावती—थक नहीं गया···

यौगन्धरायण—पसीने से भीग कर शरीर के वस्त्र अंगों पर सट गये। उन पर गौतम के इस विराग का प्रभाव ऐसा पड़ा जैसे कि तूँबी के नाद का प्रभाव सर्प पर पड़ता है। गौतम के पैरों में उनकी आँखें बिछ गईं और फिर लाख चेष्टा करने पर भी मैं उनको अपनी ओर न खींच सका। मेरी ओर से उनकी आँखें बन्द···कान बहरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हो गये थे। अपने हाथ उन्होंने गौतम के पैर धो कर भोजन के आसन पर बैठाया।

उदयन—भोजन के पदार्थ क्या थे ?

यौगन्धरायण—वत्सकुमार के अतिथि के योग्य सभी राज-भोग···मांस भी···

वासवदत्ता—गौतम ने केवल सीढ़ी के वस्त्र को राजवैभव माना इस भोजन को नहीं ?

यौगन्धरायण—नहीं देवी ! और जब वे भोजन कर···हाथ मुँह धो कर आसन पर बैठ गये···कैसे कहूँ···क्या कहूँ···मैं वहीं था···शरीर अवसन्न हो गया···बुद्धि को पाला मार गया। (काँप उठता है)

उदयन—जिनकी यह सृष्टि है···उन पर विश्वास कर कहें। जो आज अशुभ है···कल शुभ भी हो सकता है।

यौगन्धरायण—(गहरी साँस ले कर) कुमार ने कहा···'देव। जब तक अभी इस जीवन की साँसें चल रही हैं आपको मृत्यु विजय का ज्ञान मिल गया है। आप इस दास को भी श्रमण धर्म की दीक्षा दें।'

उदयन—भोले कुमार···नहीं जानते तुम···शब्दों से मृत्यु पर विजय नहीं मिलती···उसके लिए कर्म करने होते हैं। फिर क्या हुआ···?

पद्मावती—हाय !

वासवदत्ता—फिर 'हाय !' किया तुमने···सुनती चलो···भाग्य में होगा तो इस शाक्य की मृत्यु भी सुन लोगी।

यौगन्धरायण—गौतम कहने लगे:—'सुविचार की कृपाण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बनाओ, विश्वास उदारता नैतिक भावनाओं का दुर्ग, गुणों की सेना और कवच रहे धैर्य का···उद्योग का भाला, ध्यान धनुष और अनासक्ति तुम्हारे लिए बाण बने।'

उदयन—शास्त्र की बातों को नीचे ऊपर कर फूँक दिया है इसमें। गौतम का अपना इसमें क्या है···ये बातें श्रमण के किस काम आयेंगी? जिसे केवल ज्ञान का भार ढोना है···कर्म के लोक में जो जाता नहीं, जो जन्म से ही विरागी है। कुमार भ्रम के वन में भटक गया।

यौगन्धरायण—फिर कुमार ने कहा 'मेरा नाम अब क्या होगा भन्ते।'

वासवदत्ता—नाम के बदल जाने से मुक्ति आकाश से जो चू पड़ेगी।

यौगन्धरायण—'अपने नाम का भी परिवर्तन तुम चाहते हो' कह कर गौतम कुमार का मुँह देखने लगे।

पद्मावती—सर्प की आँखों का सम्मोहन उन आँखों में रहा होगा।

यौगन्धरायण—हाँ देवी! "सब कुछ बदल जायेगा पर नाम नहीं?" मन्त्रमुग्ध से कुमार कह उठे।

वासवदत्ता—मन्त्रमुग्ध तो अब वह है ही।

यौगन्धरायण—"फिर तुम्हारा नाम भी बदले। अब से तुम्हारा नाम बोधिकुमार रहा।" गौतम ने कहा।

पद्मावती—तब क्या···जैसे वह उनका ही पुत्र हो। राहुल का नाम यह रख कर अपनी साध मिटा लेते।

उदयन—तथागत को कोई कामना नहीं देवी! उनके आचरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पर संदेह न करो।

पद्मावती—निर्वाण और मृत्युविजय में कामना की सबसे ऊँची लहरें उठ रही हैं आर्यपुत्र ! व्यक्ति अपनी मुक्ति के लिए लोक जीवन को संहार के गर्त में ले जा रहा है। यह स्वार्थ एकांगी है।

यौगन्धरायण—फिर कुमार के आग्रह पर इस नाम से गौतम ने उन्हें पुकारा…

वासवदत्ता—किस तरह ?

यौगन्धरायण—'बोधिकुमार तुम्हें यश मिले।'

वासवदत्ता—श्रमण यश का भार ढो कर क्या करेगा ? जिसके पूर्व पुरुष रण में यश की कामना करते थे वह पीले वस्त्रों और मुंडित केश से क्या यश लेगा ? यह धर्म कैसा है आर्य ! जो इसका विचार भी नहीं करता कि किस आयु के कर्म क्या हैं। कुमार की आयु इस समय विवाह…प्रणय और सन्तान की है…इस समय श्रमण बन कर वह क्या कर लेगा ?

पद्मावती—पन्द्रह वर्ष के किशोर किशोरी अभी दीक्षा ले रहे हैं…कभी वह दिन आयेगा कि जब पाँच वर्ष में ही वे इस धर्म में मुक्ति लेंगे।

यौगन्धरायण—यही नहीं देवी ! श्रमणों के इन संघारामों में कभी ऐसे शिशु जन्म लेंगे जो जन्म से ही मुक्त होंगे।

वासवदत्ता—(खेद की हँसी) और आर्य ! उनके सब अंग वही रहेंगे जो अब तक रहते आये हैं ?

उदयन—आर्य ! (कुछ सोचने लगता है)

यौगन्धरायण—आज्ञा देव…

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उदयन—कुमार को लौटाना है···

वासवदत्ता—(उद्वेग में) पर अब किस तरह···

उदयन—करना होगा···पर्वत के हिलने पर प्रलय होगी। बिना मेरी आज्ञा के···बिना तुम्हारी आज्ञा···गौतम ने उसे दीक्षा क्यों दी?

पद्मावती और वासवदत्ता—क्या हमारे पुण्य अभी शेष हैं?

उदयन—गौतम ने इस दीक्षा में अपने नियमों का उल्लंघन किया है। बिना माता-पिता की आज्ञा के वे किसी बालक या किशोर को दीक्षा नहीं देते थे···इस बार यह क्यों हुआ···(यौगन्धरायण की ओर देख कर) आपको पूछना है यह गौतम से···कुमार की दीक्षा में वे मेरी और महादेवी की आज्ञा की बात क्यों भूल गये?

यौगन्धरायण—देव! दोनों देवियों के साथ आप चलते तो कुमार पर प्रभाव पड़ता···पिता माता के प्रेम में संभव है वह···

उदयन—गौतम से पुत्र की भीख माँगने नहीं जाऊँगा मैं··· महादेवी की भीख जब महासेन से नहीं माँगी मैंने···निश्चय है कौशाम्बी के पौरजन सभी नर, नारी, बालक, वृद्ध, गौतम को देख चुके होंगे···इन देवियों के साथ अकेला मैं हूँ जिसने गौतम का दर्शन नहीं किया और नहीं करूँगा मैं···आप जाइये···पूछिये उनसे···हम दोनों से आज्ञा लेने का साहस उन्हें क्यों नहीं हुआ···

यौगन्धरायण—शरीर में स्फूर्ति आ गई। जा रहा हूँ देव! आपकी विजय हो।

(यौगन्धरायण का प्रस्थान)

वासवदत्ता—(पद्मावती का हाथ पकड़ कर) देख रही हो··· जिसकी नींद तुम सोती रहीं···आँखों में···प्राणों में जिसे सँजोकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तुमने रक्खा···वह यहाँ आया भी नहीं।

पद्मावती—नाम जो उसका बदल गया देवी! अब वह हमारा कुमार नहीं, गौतम का बोधिकुमार है···पिता और माता को भूल कर उसे मुक्ति मिली है। (स्वर भारी हो उठता है)

उदयन—मुक्ति पहले उसको नहीं···हमें मिलेगी देवी! खेद न करो।

वासवदत्ता—(उदयन को ध्यान से देख कर) क्या सोच रहे हैं आर्यपुत्र! ललाट की रेखाएँ तन उठी हैं···बरौनियाँ खड़ी हैं··· आँखों में किस संकल्प की किरणें भर रही हैं···कह दीजिये···हम दोनों की आपको छोड़ कर कोई दूसरी गति नहीं है।

उदयन—डरो मत···कुछ भी करूँगा। तुमसे पूछ कर···गौतम गोपा को छोड़ कर मुक्ति के लिए अकेले निकले···मेरी मुक्ति में भी तुम दोनों साथ रहोगी···कुमार ने अज्ञान में जो कर्म किया है उसका फल हम भोगें।

वासवदत्ता—(उद्वेग में) हम भोगें···क्या भोगें हम···

उदयन—पुत्र के लिए हम अपनी बलि दें। पैंतालीस वर्ष का हो चुका मैं। पन्द्रह और बीतते और हम वन···हिमालय की ओर निकल चलते···भरतकुल की यही प्रथा है···

पद्मावती—क्या···कैसी बलि? मैं प्राण छोड़ दूँगी। (काँपने लगती है)

उदयन—पुत्र के लिये प्रिये! पिता क्या नहीं करता? कुमार को लौटा कर उसकी जगह मैं संन्यास लूँगा। राजर्षियों का संन्यास ···गौतम के सम्मोहन में भी जो कार्य उसने किया···श्रमण धर्म की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दीक्षा ली···भूल से किये कर्म का भी फल तो भोगना ही है···उसके इस कर्म का फल हम भोग लें···उस एक के लिए हम तीन अपनी बलि दें।

वासवदत्ता—(आनन्द के स्वर में) पर कुमार यह न सुने।

उदयन—गौतम आर्य यौगन्धरायण के प्रश्न का उत्तर न दे सकेंगे···आज्ञा के लिए वे कुमार को यहाँ भेजेंगे···लोकमत के विरुद्ध आचरण करने का साहस उन्हें भी न होगा। कुमार जब यहाँ आ जायेगा···उसके अबोध मन पर जो गौतम की माया जम गई है··· फट जायेगी···

पद्मावती—तब आप अभी संन्यास क्यों लेंगे देव!

उदयन—पुत्र को अमंगल से बचाने के लिए देवी! श्रमण धर्म संन्यास धर्म का विकृत रूप है। पुत्र ने जब एक बार संन्यास धर्म ग्रहण किया उसे लौटाना धर्म न होगा। इसलिए उसके कल्याण में हम तीन जन संन्यास लेंगे।

वासवदत्ता—यही सोच रहे थे आर्यपुत्र!

(वसन्तक का प्रवेश)

उदयन—क्या देखा···?

वसन्तक—कैसे कहूँ···आँखों पर विश्वास नहीं होता।

उदयन—कहो भी···जब तक विस्मय की बात देख नहीं ली जाती उस पर कोई भी विश्वास नहीं करता।

वसन्तक—गौतम का हाथ पकड़ कर कुमार चल रहे थे···दूसरी ओर प्रधान श्रमण आनन्द थे···पीछे दस भिक्षुणियाँ और फिर कितने भिक्षु थे कौन गिने उन्हें।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वासवदत्ता—सब के सिर मुण्डित थे…?

वसन्तक—हाँ देवी…वस्त्र का भेद न होता तो फिर भिक्षु भिक्षुणी में कौन क्या है…पहचानना भी कठिन होता।

पद्मावती—अरे क्या कह रहे हो? नर और नारी पहचाने नहीं जाते?

वसन्तक—चम्पक के रंग के सब के शरीर…रेख भी अभी नहीं भीनी जिन कुमारों की…मुण्डित केश…पीले परिधान…एड़ियाँ सब की वस्त्र के अवरोध में…उपधान भिन्न न होते तो फिर पहचानना कठिन होता देवी?

पद्मावती—हे भगवान! शरीर के अंगों का भेद भी मिट गया है?

वसन्तक—गौतम का ज्ञान यही नहीं कर सका…किशोरी के वक्ष उनके ज्ञान से सपाट बराबर न हुए…नहीं तो फिर…

उदयन—चुप रहो वसन्तक, अब न कहो!

वसन्तक—पीछे के श्रमण जैसे उन भिक्षुणियों के चरण आँखों में ले कर चल रहे थे। सच कहता हूँ देव! उन श्रमणों की आँखों में अनुराग की लालसा थी।

उदयन—इस अवस्था में प्रकृति का यही धर्म है…नर और नारी के प्रेम में प्रकृति की पूर्णता है। जीव धर्म है यह…जो मनुष्य के नीचे पशु योनि में भी है।

वसन्तक—सिर मुँड़ा कर पीला वस्त्र पहन लेने से कामदेव के तीर न लगेंगे देव!

उदयन—चुप भी रहो। प्रकृति का धर्म बुद्धि से न मरेगा। गौतम में पौरुष का अभाव था…न वे रण के योग्य थे न रमणी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

के…जीवन की इस पराजय को वे धर्मविजय से मिटा रहे हैं। नर नारी के आकर्षण को…अनुराग और प्रणय को…वे न रोक सकेंगे… काल चक्र में इस श्रमण धर्म का विकार भभक कर जल उठेगा। आज जहाँ जल की लहरें हैं वहीं कभी कीचड़ और दलदल रहेगा।

वासवदत्ता—कुमार आयेगा…न आये तब…।

उदयन—प्रकृति चलती रहेगी…यह लाल धधकता हुआ भूपिण्ड किसी समय अग्निपिण्ड था…न कहीं वृक्ष…न लताएँ… जीव जन्तु का नाम नहीं…जल भी नहीं था…अग्नि की लपटें जिस क्रम में मिटीं और इस पर सृष्टि बढ़ी…वह गौतम को जन्म दे कर मिटेगी नहीं। न आये कुमार…गौतम के संन्यास से धरती अग्नि-पिण्ड न हो गई…कुमार के संन्यास से भी न होगी।

पद्मावती—आर्यपुत्र का यह तेज पहले कभी नहीं देखा था… महादेवी देखिये…भवें टेढ़ी पड़ गई हैं…नाक के पुरे उठ बैठ रहे हैं…ललाट का त्रिपुंड पसीने से बह चला है।

(उदयन उठ कर अँगड़ाई लेता है। कौशेय वस्त्र के स्वर्णबन्ध तड़क कर टूट जाते हैं। वासवदत्ता और पद्मावती विस्मय में भूली सी उसकी ओर देखती हैं।)

उदयन—आयेगा क्यों नहीं प्रिये! मैं स्वयं जा कर बाँह पकड़ कर उसे खींच लाऊँगा। श्रमणों का प्रपंच जो मैं न रोक सका तो फिर यह पुण्य भूमि…कर्मयोगियों की यह भूमि रसातल को चली जायेगी। प्रवृत्ति मरेगी नहीं…गौतम के श्रमण इसे मार न सकेंगे…चोरी से लुक छिप कर भिक्षुणियों के साथ…(ललाट का पसीना पोंछता है)

वासवदत्ता—तब ये आपके विरुद्ध सब कहीं प्रचार करेंगे कि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आप धर्म के मार्ग में बाधा दे रहे हैं।

उदयन—धर्म कोई व्यक्ति नहीं बना सकता देवी! प्रकृति बनाती है धर्म···और प्रकृति के धर्म को जो तोड़ता है वह अनाचारी है···वस्त्र उसके चाहे किसी रंग में रँगे हों···सुन चुका हूँ मैं ये श्रमण भी आपस में लड़ते हैं···फिर इन्होंने धनुष क्यों फेंका? भिक्षापात्रों का प्रयोग यह अपने क्रोध में करते हैं···इन्द्रियजयी शब्दों से कोई नहीं होता।

वसन्तक—गौतम घोषित के आराम में उपदेश दे रहे हैं। भिक्षु भिक्षुणी रह रह कर ताल और स्वर में बोल रहे हैं "बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं गच्छामि, संघं सरणं गच्छामि।'

उदयन—तब क्या···जिसमें हाथ पैर न हिलाने पड़ें और सुस्वादु भोजन मिलता रहे···वस्त्र भी कौशेय हों···लेटने के लिए नरम बिछौने हों···धर्म पहले भी था···संन्यास भी था···केवल बुद्ध और सङ्घ नहीं थे। उस धर्म में नियम थे···संन्यास की अवस्था भी निश्चित थी···इस धर्म में कोई बन्धन नहीं है···मूँड मुँडाते ही मुक्ति मिल जाती है।

वासवदत्ता—घोषित के अतिथि कैसे बने गौतम? तीनों महाजनों में यह अवसर घोषित को क्यों दिया उन्होंने···?

वसन्तक—गोपुर पर जब वे पहुँचे तीनों श्रेष्ठी अपने अनुचरों के साथ वहाँ उपस्थित थे···पर कुमार को देखते ही ककोद कह उठे···हमारे राजकुमार इस वेश में!

पद्मावती—तब···कहो वसन्तक फिर···

वसन्तक—अधिक मात्रा औषध की भी हानि करती है···

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पद्मावती—कहते हो या…

वसन्तक—उसने कह दिया…धर्म में तुम्हारी अधिक निष्ठा है घोषित ! ले जाओ तुम इन्हें…कैसा धर्म है यह जिसमें जन्म लेते ही लोग संन्यास ले लेते हैं।

उदयन—यह कह दिया उसने…

वसन्तक—हाँ महाराज !…कुमार नीचे देखने लगे, गौतम की सेना धरती में गड़ गई। गौतम की इस धर्म सेना में जो कुमारियाँ दीक्षित हैं, उनमें कितनी ऊँचे कुल की हैं…शुद्धान्तों के बाहर जिनके पैर नहीं पड़ते वही कौतुक की सामग्री बन रही हैं। लज्जा अभी उनकी नहीं छूटी।

उदयन—जीवन के साथ प्रयोग चल रहा है यह…निर्विकार तब तक कोई नहीं बनेगा जब तक वह अनुभव करेगा…उसकी साँस चलती रहेगी…जिन विकारों के जीतने की बात गौतम चला रहे हैं…उन विकारों पर ही मनुष्य अब तक जीवित रहा…पत्थर सा जड़ नहीं हो गया।

वासवदत्ता—नर नारी का प्रेम भी विकार है आर्यपुत्र ?

उदयन—उन कायरों के लिए जिनके लिए जीना विकार है… पर जो जीवित रहना चाहे…उसका निश्चित आधार यही है। अपने लिए कौन जीना चाहेगा प्रिये ! उस अकेले जीने से मर जाना कहीं अच्छा है।

वसन्तक—(बाहर की ओर देख कर) आ गये कुमार…महामात्य…यह कौन है ?

उदयन—कोई और है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वसन्तक—हाँ कोई श्रमण···जिसे···अरे यह वही रुद्रमणि है जो योग के चमत्कार दिखाता था···

पद्मावती—कुमार किस रूप में हैं वसन्तक···(आँखे भर आती हैं ।)

वसन्तक—मुंडित केश···कौशेय वस्त्र···हाथ में···

वासवदत्ता—भिक्षापात्र···

वसन्तक—हाँ देवी !

पद्मावती—हाय ! आँख फूट जाती मेरी···मैं यह न देख पाती ।

उदयन—इधर देखो ! धीरज से···उसके सामने कातर न होना । तनिक भी विचलित हुई तो फिर मैं मूल से हिल उठूँगा ।

वासवदत्ता—बार-बार कहा···पुत्र की चिन्ता छोड़ पति को देख···तभी कहा न मैंने देव ! जो शाक्यकुमार से सम्भव हुआ क्या दूसरों से सम्भव न होगा ।

उदयन—तुम्हारी आशंका मेरे लिए थी···मेरे लिए वह सम्भव न हुआ । इस असत्य का भार धरती अधिक दिन न ढोयेगी । प्रवाह जो चल पड़ता है···कभी रुकता भी है । यह श्रमण प्रवाह रुकेगा पता नहीं कितनों को बहा कर···बोर कर···

(यौगन्धरायण, कुमार और दूसरे श्रमण का प्रवेश)

पद्मावती—इस वेश में कुमार···(रो पड़ती है)

वासवदत्ता—अभागिनी ! रोने से क्या होगा ?

उदयन—बैठ जाओ श्रमण ! उस भद्रपीठ पर और महामात्य आप भी···(दोनों बैठते हैं) कुमार !

कुमार—कहें देव ! तथागत ने मुझे आप की आज्ञा के लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भेजा है।

उदयन—उधर न देखो···माता के आँसू नहीं, पिता का बल देखना है तुम्हें।

यौगन्धरायण—बिना आपकी आज्ञा के कुमार की दीक्षा का खेद तथागत को है।

उदयन—और अब श्रमण बना कर मेरी आज्ञा चाहते हैं!

श्रमण—हाँ महाराज पुत्र के धर्म में बाधा न दें।

उदयन—कौन हो तुम श्रमण!

श्रमण—पिण्डल भारद्वाज···

उदयन—योग से मन भर गया रुद्रमणि! अब यह बाना लिया?

श्रमण—तथागत के धर्म में मृत्यु पर विजय है···निर्वाण है।

उदयन—तो तुम मरोगे नहीं? गौतम की श्रमण सेना अमर होगी? मिथ्या के प्रचार से डरो। मृत्यु का दूसरा नाम निर्वाण है। देवलोक में अनाचार न भरो।

श्रमण—प्रजा के धर्म में बाधा देने से निन्दा होगी।

उदयन—सुन चुका हूँ, तुम्हारे श्रमण ग्रन्थों में मेरी निन्दा की बातें अभी से लिखी जा रही हैं। प्रजा के धर्म में जो मैं बाधा देता फिर कौशाम्बी में तुम कैसे आ पाते? कपिलवास्तु की धरती को रण से रँगने वाले विरुद्धक को रसातल में मैंने क्यों भेजा? कुमार··· अरे नहीं बोधिकुमार!

कुमार—श्रमणधर्म के निर्वाह का आशीर्वाद दें तात!

उदयन—पर वह कोई धर्म भी तो हो···यह अवस्था तुम्हारी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

संन्यास के लिए नहीं है···अपने जन्म का ऋण जब तक तुम नहीं भर लेते···मुक्ति का अधिकार तुम्हें नहीं है।

कुमार—जन्म का ऋण कैसे भरेगा ?

उदयन—जन्म दे कर···पेड़ सभी सूखते हैं पर उनके बीज से दूसरे पेड़ खड़े हो जाते हैं। प्रकृति के इस नियम को तोड़ कर··· उसकी प्रतिक्रिया से तुम न बचोगे। है तुम्हें विश्वास कि आग और रुई एक साथ रखने पर आग न लगेगी। किशोर भिक्षु और किशोरी भिक्षुणी एक साथ रह कर वही सब न करेंगे जिसे छोड़ने तुम चले हो। अपनी मुक्ति नहीं वत्स ! अपने लोक की मुक्ति खोजो···हम सब को छोड़ कर तुम्हारा अकेले मुक्त होना भी स्वार्थ होगा।

वासवदत्ता—मुक्ति पहले तुम्हारी या हम लोगों की कुमार···

कुमार—संसार के मायाजाल में बँधूँ अब···दीक्षा ले कर···

उदयन—जिसे तुम मायाजाल कहते हो···संसार का आधार वही है। गौतम भी उससे मुक्त नहीं हैं। भोजन वह भी करते हैं···प्यास उन्हें भी लगती है और नींद भी आती है उन्हें···यह सब दैहिक व्यापार मायाजाल नहीं हैं ? इन व्यापारों के लिए कर्म करना मायाजाल है ? शुद्धोदन को संन्यास का अवसर न दे कर पिता से पहले अपनी मुक्ति के लिए वे भागे थे। पर यहाँ वह नहीं होगा···तुम्हारे माता पिता तुमसे पहले मुक्त होंगे। वसन्तक ! राजकुमार के योग्य आच्छादन ले आओ। महामात्य !···

(वसन्तक का प्रस्थान)

यौगन्धरायण—आज्ञा देव !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उदयन—अभी इसी समय कुमार का अभिषेक करें···हम लोग (दोनों देवियों की ओर संकेत कर) संन्यास लेंगे।

कुमार—तात···

उदयन—वीरों के कुल में जन्म लिया है तुमने···कातर बन कर क्या देख रहे हो? तुम्हारे ही पूर्व पुरुष परन्तप अर्जुन का मोह मिटाने के लिए भगवान ने कर्मयोग का उपदेश किया था। तुम्हें जन्म देने का फल मुझे क्या मिला जो तुमसे पहले मैं मुक्त न हुआ? बोलो और भी कुछ शंका है···

कुमार—मुझे कुछ नहीं सूझता···

उदयन—मुझे सूझता है···अपना धर्म मुझसे लो···जिसकी देह से तुमने जन्म लिया।

(वसन्तक राजवस्त्रों के साथ प्रवेश करता है)

श्रमण—कह देता हूँ महाराज! इसमें आपका यश मिटेगा!

उदयन—यश की चिन्ता भी मोह है श्रमण! और फिर गौतम सारे देश के लिए सनातन धर्म को मिटा दें···मेरे लिए नहीं मिटा पायेंगे। निगम···आगम से मुझे जो धर्म मिला है···मैं उसे छोड़ इस अनोखे श्रमण धर्म में न फँसूँगा। कह देना गौतम से···उदयन उनका प्रतिद्वन्द्वी है। यज्ञबलि के विरोधी हो कर भी गौतम अभी मांसाहारी है यह तो जानते हो न?

श्रमण—धर्म न भूलो कुमार···

कुमार—इस समय मैं सब भूल गया हूँ श्रमण! पिता माता को नहीं भूल पाता।

उदयन—यह प्रकृति का धर्म श्रमण धर्म से बहुत ऊपर है

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वत्स ! सभी श्रमण माता के पेट से निकले हैं, आकाश से कोई नहीं उतरा । (वसन्तक के हाथ से वस्त्र ले कर कुमार को पहनाता है । श्रमण वस्त्र नीचे गिर पड़ते हैं) उठा लो श्रमण इन वस्त्रों को···इनमें तुम्हारे नये धर्म की लपटें हैं जो इस पुण्यभूमि को भस्म कर रही हैं ।

श्रमण—(जाते हुए) सद्धर्म की यह बाधा कभी न भूलेगी ?

उदयन—(हँस कर) धर्म विशेषण नहीं चाहता···न वह सत् होता है न असत्···मैं जानता हूँ श्रमण ग्रन्थों में मेरी निन्दा होगी··· पर क्या वह दिन नहीं आयेगा जब लोग इस श्रमण धर्म पर हँसेंगे और कहेंगे कि यह धर्म प्रकृति को, धरती को, उलटने चला था । मुझे व्यक्ति की पूजा नहीं करनी है चाहे वह व्यक्ति गौतम ही क्यों न हों । बालक बालिकाओं को श्रमण बनाना प्रकृति के साथ अनाचार है···जिस अवस्था के जो कर्म हैं धर्म उनके विरोध में न टिकेगा ।

वासवदत्ता—तब फिर हम चलने की तैयारी करें···

कुमार—कहाँ ?

उदयन—राजर्षियों के मार्ग···हिमवान की ओर···

कुमार—तब मैं किसी ओर का नहीं रहा ।

उदयन—तुम्हारे धर्म का निर्वाह अब हम करेंगे···तुम्हारे माता पिता···तुमने संसार से वैराग्य जो लिया था···कर्म कोई भी हो उसका फल भोगना ही पड़ता है । तुम्हारे इस कर्म का फल अब यही है कि हम संसार से विराग लें ।

कुमार—तब मैं यहाँ किसके सहारे रहूँगा ?

उदयन—अपने कर्म के···और जो हमसे कभी पुण्य कर्म हुए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हों वे भी तुम्हारे कवच बनेंगे। आर्य! (यौगन्धरायण की ओर देख कर)

यौगन्धरायण—देश के कितने राजवंश गौतम की बाढ़ में डूब गये। भरतकुल को उसे रोकने का भी यश मिला···आज मैं धन्य हूँ।

उदयन—कुमार को अभिषेक विधि से अभी स्नान कराइये। सारी क्रिया संध्या तक हो जाय।

यौगन्धरायण—सप्त सरस्वती का जल तीर्थोदक में मिला कर रक्खा है। और मैं देख चुका हूँ अपराह्ण में लग्न भी तेजस्वी है।

उदयन—गौतम आधी रात को निकले थे···जिसमें कोई देख न ले। हम लोग कब चलेंगे देवी!

वासवदत्ता—सूर्य जब तक आकाश में रहें···

पद्मावती—हाँ, जिसमें धरती के जीवों के साथ सूर्यदेव भी साक्षी रहें।

कुमार—(पद्मावती को दोनों हाथों से पकड़ कर) तुम भी जाओगी माँ···

पद्मावती—(उसके सिर पर हाथ रख कर) आर्यपुत्र के चरणों की छाया छोड़ कर दूसरी गति मेरी क्या होगी?

उदयन—धर्म की परिभाषा है वत्स···जो जीवन को धारण करे···पर जिसमें जीवन की स्वीकृति नहीं है, उसके प्रति आग्रह और अनुराग नहीं है, वह धर्म नहीं हो सकता चाहे और जो हो। देवी पद्मावती के धर्म का आकर्षण अब मेरे साथ है तुम्हारे साथ नहीं। पिता उसी दिन मर जाता है जिस दिन पुत्र जन्म लेता है। मर कर भी मैं तुममें जीवित रहूँगा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कुमार—और आर्य ! (यौगन्धरायण की ओर देख कर) आप···

यौगन्धरायण—सेवक की मुक्ति स्वामी की सेवा है। जो कार्य महाराज करते···धर्म के बन्धन में···पुत्र के कल्याण में वह जो छोड़े जा रहे हैं···उसे पूरा करना होगा अब मुझे। वत्सराज का मंत्री एक व्यक्ति नहीं परम्परा का विधान है···जिसमें बन्धन है पर मुक्ति नहीं।

पद्मावती—कुमार का विवाह इसी वर्ष हो आर्य !

यौगन्धरायण—उस अवसर पर आप आयेंगी देवी ! मेरी प्रार्थना पर···(पद्मावती उदयन की ओर देखती है)

उदयन—मेरे अभिषेक के बाद दो बार माता के साथ तात आये थे उत्तरापथ से। हम लोग भी आयेंगे।

वासवदत्ता—वत्स राजलक्ष्मी के दर्शन के लिए आर्यपुत्र !

उदयन—हाँ देवी !

पद्मावती—घोषवती तो साथ नहीं जायगी देव !···तो फिर एक बार···इस अन्तिम बार···

उदयन—(उत्साह में) उठा लाओ वसन्तक वीणा···जिस संगिनी के सहारे अब तक यह जीवन चलता रहा···उसके रस से इस अन्तिम बार संतोष कर लूँ।

(वसन्तक वीणा ले कर आता है)

(उदयन वीणा ले कर नीचे धरती पर बैठ जाता है)

कुमार—धरती पर तात !

उदयन—सिंहासन छोड़ चुका हूँ वत्स ! अब···और फिर मेरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लिए इस पुण्यमय पृथ्वी से बढ़ कर दूसरा बड़ा आसन क्या होगा ?

(वीणा बजाने लगता है। स्वर का कंपन वातावरण में भर जाता है। कांचनमाला और मदिरा सिसक सिसक कर रोने लगती हैं। यौगन्धरायण आँखें मूँद लेता है। वसन्तक दीवाल की टेक ले कर हाथों में मुँह छिपा लेता है। कुमार भाव विभोर हो कर दोनों हाथों के बीच में उदयन के चरण पर सिर रख देता है। वासदवत्ता, पद्मावती और उदयन के हाथ एक ही साथ उसके सिर पर पहुँचते हैं।)

[परदा गिरता है]

॥ इति शुभम् ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हमारा नाटक साहित्य

विदा—[श्री हरिकृष्ण प्रेमी]	१।।।)
प्रकाश-स्तंभ—[श्री हरिकृष्ण प्रेमी]	१।।)
रक्षाबंधन—[श्री हरिकृष्ण प्रेमी]	१)
शिवासाधना—[श्री हरिकृष्ण प्रेमी]	२)
प्रतिशोध—[श्री हरिकृष्ण प्रेमी]	१।।।)
आहुति—[श्री हरिकृष्ण प्रेमी]	१)
बंधन—[श्री हरिकृष्ण प्रेमी]	१)
दशाश्वमेध—[पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र]	१=)
वत्सराज—[पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र]	१।।।)
प्रताप-प्रतिज्ञा—[श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द]	१)
मुकुट—[श्री नित्यानन्द वात्स्यायन]	१।।)
सेवापथ—[सेठ गोविंददास]	१।।)
कर्मपथ—[श्री दयानाथ झा]	२)
दुविधा—[पं० पृथ्वीनाथ शर्मा]	।।।)
साध—[० पृथ्वीनाथ शर्मा]	।।।)
अपराधी—[पं० पृथ्वीनाथ शर्मा]	।।।)
पार्वती [पं० उदयशंकर भट्ट]	१)
विक्रमादित्य—[पं० उदयशंकर भट्ट]	१=)
आज का आदमी—[एकांकी नाटक, पं० उदयशंकर भट्ट]	२।।)
नेताजी तथा अन्य एकांकी [डा० गोपीनाथ तिवारी]	२)
सरस एकांकी नाटक [सं० डा० रामकुमार वर्मा]	२।।।
आठ एकांकी नाटक [,,	
एकांकी एकावली [सं० पं० रामचन्द्र शर्मा]	
किशोर नाटकावली—[पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र]	
मुद्राराक्षस (सटिप्पण)—[भारतेन्दु, सं० धर्मचन्द्र विशारद]	

हिन्दी भवन, जालंधर और इलाहाब

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand